अंक–17 नवंबर, 2020

धनबाद

राजभाषा संदेश

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, धनबाद की पत्रिका

अध्यक्ष कार्यालय

भारत कोकिंग कोल लिमिटेड, धनबाद

स्वागतम्

श्री गोपाल सिंह
अध्यक्ष-सह-प्रबंध निदेशक
भारत कोकिंग कोल लिमिटेड, धनबाद एवं
अध्यक्ष, नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति धनबाद

श्री गोपाल सिंह ने 1 सितंबर, 2020 को भारत कोकिंग कोल लिमिटेड के अध्यक्ष-सह-प्रबंध निदेशक के पद पर कार्यभार ग्रहण किया है। महोदय नराकास धनबाद आपका हार्दिक स्वागत करता है।

श्री सिंह ने वर्ष 1981 में प्रतिष्ठित इंडियन स्कूल ऑफ माइंस, धनबाद से स्नातक किया और सीसीएल के रजरप्पा क्षेत्र से खनन अभियंता के रूप में अपने पेशेवर कैरियर की शुरुआत की। आपने ओपनकास्ट खनन में एम. टेक किया है और मानव संसाधन प्रबंधन में विशेषज्ञता के साथ एमबीए की डिग्री भी प्राप्त की है।

भारत कोकिंग कोल लिमिटेड के अध्यक्ष-सह-प्रबंध निदेशक के पद को सुशोभित करने से पहले अपने व्यापक सेवाकाल के दौरान आपने कोल इंडिया की विभिन्न अनुषंगी कंपनियों में काफी लंबे समय तक अपनी कुशल सेवाएं दी हैं। सर्वाधिक समय तक आप सीसीएल रांची में रहे हैं जहां आपने विभिन्न प्रबंधकीय पदों पर कार्य करते हुए 8 वर्ष से भी अधिक समय तक कंपनी के अध्यक्ष-सह-प्रबंध निदेशक के पद की जिम्मेदारी कुशलता पूर्वक निभायी है। इसके अलावा आप एसईसीएल बिलासपुर में निदेशक (तकनीकी) के पद पर रहे हैं और आपके कार्यकाल के दौरान ही कंपनी को मिनीरत्न कंपनी का दर्जा मिला। सीसीएल, रांची में अध्यक्ष-सह-प्रबंध निदेशक के आपके कार्यकाल के दौरान इससे पहले भी दो बार आप को बीसीसीएल के अध्यक्ष-सह-प्रबंध निदेशक के अतिरिक्त प्रभार की जिम्मेदारी भी सौंपी जा चुकी है।

कोयला उद्योग में अपने कार्यकाल के दौरान कंपनी को उच्च लाभप्रदता में पहुंचाने तथा दुर्लभ संसाधनों के रणनीतिक व समुचित उपयोग और प्रबंधन के प्रति आपके बहुमूल्य योगदान के लिए कंपनी के साथ-साथ ही राष्ट्रीय स्तर पर भी आपको कई पुरस्कारों से नवाजा गया है। आप आईईआई, एमजीएमआई, आईएमईजे जैसे विभिन्न व्यावसायिक निकायों से भी जुड़े हैं। वर्ष 1998 में कोलंबो योजना के तहत आपने जापान में प्रशिक्षण प्राप्त किया है और एसईसीएल में अपने सेवाकाल के दौरान खनन गतिविधियों के तकनीकी अध्ययन के लिए चीन, अमेरिका और ब्रिटेन में वरिष्ठ प्रबंधन टीम का नेतृत्व भी किया है।

यह आपके व्यापक तकनीकी एवं प्रबंधकीय अनुभव का ही परिणाम है कि भारत सरकार द्वारा आपको एक बार पुनः कोकिंग कोल उत्पादन के क्षेत्र की अग्रणी कंपनी भारत कोकिंग कोल लिमिटेड के अध्यक्ष-सह-प्रबंध निदेशक के पद की जिम्मेदारी सौंपी है। हमें पूर्ण विश्वास है कि आपके कुशल नेतृत्व में नराकास धनबाद उन्नति करेगा और निरंतर आगे बढ़ेगा।

श्री पी. वी. के. आर. मल्लिकार्जुन राव
निदेशक (कार्मिक)
भारत कोकिंग कोल लिमिटेड, धनबाद

श्री पीवीकेआर मल्लिकार्जुन राव ने 01.06.2020 को भारत कोकिंग कोल लिमिटेड के निदेशक (कार्मिक) का पदभार ग्रहण किया है। महोदय नराकास धनबाद आपका हार्दिक स्वागत करता है।

श्री राव ने वर्ष 1982 में आंध्र विश्वविद्यालय से वाणिज्य में स्नातक किया है और वर्ष 1986 में नागपुर विश्वविद्यालय से कार्मिक प्रबंधन और औद्योगिक संबंधों में स्नातकोत्तर उपाधि प्राप्त की है।वर्ष 1987 में वेस्टर्न कोलफील्ड्स लिमिटेड में कल्याण अधिकारी (प्रशिक्षु) के रूप में अपनी सेवा की शुरुआत के साथ आप कोल इंडिया लिमिटेड परिवार में शामिल हुए हैं। आपने कोल इंडिया लिमिटेड की विभिन्न अनुषंगी कंपनियों में अलग-अलग पदों पर कार्य करते हुए कोयला उद्योग को समृद्ध किया है।

बीसीसीएल में निदेशक (कार्मिक) के रूप में अपनी सेवाएं आरंभ करने से पहले आप कोल इंडिया लिमिटेड मुख्यालय,कोलकाता में महाप्रबंधक (कार्मिक) के पद पर भर्ती और नीतिगत मामलों के प्रमुख के रूप में अपनी सेवाएं दे रहे थे।

आपके अनुभव, ज्ञान और कार्यकुशलता को देखते हुए भारत सरकार द्वारा आपको भारत कोकिंग कोल लिमिटेड के निदेशक (कार्मिक) के महत्त्वपूर्ण पद की जिम्मेदारी सौंपी गयी है। आपकी प्रबंधकीय क्षमता और व्यापक जानकारी से निश्चित ही नराकास धनबाद लाभान्वित होगा।

अध्यक्ष की कलम से

प्रिय साथियो,

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (नराकास) धनबाद की छमाही पत्रिका 'धनबाद राजभाषा संदेश' के अंक-17 के माध्यम से आप से बात करते हुए हार्दिक प्रसन्नता हो रही है। धनबाद नगर में राजभाषा गतिविधियों के प्रचार-प्रसार में इस पत्रिका की भूमिका निरंतर बढ़ती जा रही है। इसमें सदस्य कार्यालयों का सहयोग सराहनीय है।

देश में नगर राजभाषा कार्यान्वयन समितियों का गठन केंद्रीय कार्यालयों में सामूहिक स्तर पर राजभाषा कार्यान्वयन को बढ़ावा देने के उद्देश्य से किया गया है। नराकास धनबाद इस उद्देश्य को पूर्ण करते हुए निरंतर उत्साह के साथ कार्यशील है। सभी सदस्य कार्यालयों के सहयोग से नराकास धनबाद द्वारा इस वर्ष के प्रारंभ में ही वृहत स्तर पर राजभाषा सम्मेलन का आयोजन कर इसमें राष्ट्रीय स्तर के वक्ताओं को आमंत्रित किया गया। इस सम्मेलन को और अधिक रोचक व उपयोगी बनाने के लिए इस अवसर पर राजभाषा प्रदर्शनी और राष्ट्रीय कवि सम्मेलन का आयोजन भी किया गया। इन सभी कार्यक्रमों को नराकास धनबाद के सदस्य कार्यालयों द्वारा मिलजुलकर प्रायोजित किया गया। इसके लिए सभी सदस्य कार्यालय बधाई के पात्र हैं।

इन्हीं गतिविधियों से प्रभावित होकर राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा नराकास धनबाद को वर्ष 2018-19 के लिए पूर्वी क्षेत्र में प्रथम पुरस्कार से सम्मानित किए जाने की घोषणा की गयी है। यह हम सबके लिए गौरव की बात है। इससे पहले वर्ष 2016-17 के लिए भी नराकास धनबाद को प्रथम पुरस्कार से सम्मानित किया गया था। इसके पहले वर्ष 2014-15 और वर्ष 2003-04 के लिए नराकास धनबाद को तृतीय पुरस्कार से सम्मानित किया गया था।

वर्ष 2020 में वैश्विक महामारी कोविड-19 की वजह से नराकास धनबाद की गतिविधियां कुछ कम हुई हैं, परंतु मुझे पूर्ण विश्वास है कि वर्ष 2020-21 में बचे हुए समय में समिति की सभी निर्धारित गतिविधियां सदस्य कार्यालयों के सहयोग पूर्ण कर ली जाएंगी। इस कठिन दौर में ऑनलाइन माध्यम से भी तमाम गतिविधियों का आयोजन संभव है। समिति द्वारा इन माध्यमों से भी राजभाषा प्रतियोगिताओं, बैठकों आदि का आयोजन किया जाना चाहिए।

मैं सभी सदस्य कार्यालयों के प्रमुखों से अनुरोध करता हूँ कि आप अपने कार्यालय में राजभाषा कार्यान्वयन के लिए भारत सरकार द्वारा निर्धारित लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए पूर्ण प्रयास करें। आप सभी का सम्मिलित प्रयास ही नराकास धनबाद की उपलब्धि है, जो हमें पूर्वी क्षेत्र में सर्वश्रेष्ठ नराकास के रूप में बनाए रखेगा।

आप सभी के सहयोग की आकांक्षा के साथ धनबाद राजभाषा संदेश पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य के लिए शुभकामनाएँ!

ह०/

(गोपाल सिंह)

अध्यक्ष-सह-प्रबंध निदेशक, बीसीसीएल एवं

अध्यक्ष, नराकास धनबाद

पी वी के आर मल्लिकार्जुन राव
निदेशक (कार्मिक)
P.V.K.R. Mallikarjun Rao
Director (P)

भारत कोकिंग कोल लिमिटेड
एक मिनी रत्न कम्पनी
(कोल इण्डिया की सहायक कंपनी)
BHARAT COKING COAL LIMITED
A Mini Ratna Company
(A Subsidiary of Coal India Limited)
कोयला भवन, कोयला नगर / Koyla Bhawan, Koyla Nagar,
धनबाद /Dhanbad-826005

संदेश

प्रिय साथियों,

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (नराकास) धनबाद की पत्रिका 'धनबाद राजभाषा संदेश' के अंक-17 के माध्यम से आपसे पहली बार अपने विचार साझा करते हुए बहुत हर्ष हो रहा है। भारत कोकिंग कोल लिमिटेड की अध्यक्षता में गठित यह समिति धनबाद स्थित सभी केंद्रीय कार्यालयों में राजभाषा कार्यान्वयन को बढ़ावा देने के लिए राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय की अपेक्षा के अनुरूप बेहतर कार्य प्रदर्शन कर रही है।

सदस्य कार्यालयों के सहयोग से समिति का कार्यप्रदर्शन निरंतर बेहतर हुआ है। पिछली छमाही समीक्षा बैठक में सभी सदस्य कार्यालयों की सक्रिय सहभागिता से पता चलता है कि जिन उद्देश्यों से इस समिति का गठन किया गया था, उनमें यह समिति सफल है। भारत सरकार की राजभाषा नीति प्रेरणा, प्रोत्साहन और सद्भावना पर आधारित है और समिति की सभी गतिविधियों का आयोजन इसी आधार पर किया जाता है।

आज के समय में कार्यालय में हिंदी में काम करने में कोई समस्या नहीं बची है। कार्यालय में हिंदी में सभी प्रकार के कार्य करने के लिए तकनीकी युक्तियाँ उपलब्ध हैं। कार्यालय में हिंदी में कार्य करने के लिए तकनीकी रूप से हिंदी टंकण और हिंदी अनुवाद की सर्वाधिक जरूरत पड़ती है। गूगल और माइक्रोसॉफ्ट द्वारा इन दोनों कार्यों के लिए अनेक तकनीकी युक्तियाँ उपलब्ध कराई गयी हैं। इनमें यूनिकोड एनकोडिंग टंकण, वाइस टाइपिंग, अनुवाद, वाक से वाक अनुवाद, बहुभाषी अनुवाद, हिंदी ओसीआर, यूनिकोड समर्थित हिंदी फॉन्ट आदि प्रमुख हैं। इनका प्रयोग भी बड़ा सहज है। इनके प्रयोग से लैपटाप, मोबाइल, डेस्कटॉप, टैबलेट आदि पर बिना किसी समस्या के हिंदी लिखी जा सकती है।

नराकास धनबाद के सदस्य कार्यालयों में कार्यरत अधिकारियों व कर्मचारियों को इनका प्रशिक्षण दिए जाने की आवश्यकता है। नराकास धनबाद द्वारा इन विषयों पर ऑनलाइन माध्यम से चरणबद्ध तकनीकी कार्यशालाओं का आयोजन करके इसमें सक्रिय भूमिका निभायी जा सकती है। इससे सभी कार्यालयों के अधिकारी व कर्मचारी बहुत लाभान्वित होंगे और कार्यालयों में राजभाषा संबंधी निर्धारित लक्ष्यों को आसानी से हासिल किया जा सकता है।

मैं आप सभी से अनुरोध करता हूँ कि आप अपने कार्यालय में निर्धारित लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए कार्य योजना बनाकर पूर्ण प्रयास करें। यदि कार्यालय में हिंदी में कार्य करने में कोई समस्या आती है, तो अध्यक्ष कार्यालय आपके सहयोग के लिए सदैव तैयार है।

नराकास की गतिविधियों में आप सभी के सक्रिय सहयोग के प्रति आभार प्रकट करते हुए पत्रिका के संपादन मण्डल को इस अंक के सफल प्रकाशन के लिए हार्दिक बधाई देता हूँ।

(पी वी के आर मल्लिकार्जुन राव)
निदेशक (कार्मिक)
भारत कोकिंग कोल लिमिटेड – अध्यक्ष कार्यालय

संपादकीय

इंटरनेट पर भारतीय भाषाओं की स्थिति

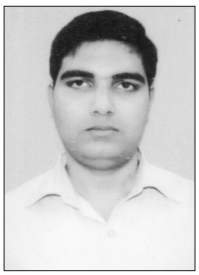

विश्व भर में इंटरनेट प्रयोक्ताओं का लेखा-जोखा रखने वाली एक वेबसाईट पर दिए गए आंकड़ों के मुताबिक वर्तमान में भारत में 600 मिलियन से अधिक सक्रिय इंटरनेट प्रयोक्ता हैं। इतनी विशाल संख्या के साथ भारत इस मामले में विश्व में दूसरे स्थान पर है और प्रथम स्थान पर चीन है। इसी वेबसाइट पर संभावना व्यक्त की गयी है कि वर्ष 2020 के अंत तक यह संख्या 640 मिलियन हो जाएगी। वैसे अप्रैल, 2020 तक यह संख्या 574 मिलियन थी। वैश्विक महामारी कोविद-19 की वजह से उत्पन्न परिस्थितियों के चलते भारत में इंटरनेट प्रयोक्ताओं की संख्या में अनुमान से बहुत अधिक वृद्धि हुई। यदि भारत के ग्रामीण क्षेत्रों की बात की जाए तो पता चलता है कि वर्ष 2019 की तुलना में वर्ष 2020 में ग्रामीण क्षेत्र में इंटरनेट प्रयोक्ताओं की संख्या में 45% की वृद्धि हुई है, जबकि शहरी क्षेत्र में इंटरनेट प्रयोक्ताओं की संख्या में 11% की वृद्धि हुई है। भारत के ग्रामीण क्षेत्र में अप्रैल, 2020 तक 264 मिलियन इंटरनेट प्रयोक्ता थे, जिनके दिसंबर, 2020 तक 304 मिलियन हो जाने की संभावना है। भारत में इंटरनेट प्रयोक्ताओं की यह विशाल संख्या निश्चय ही भारतीय भाषाओं के लिए उत्साहवर्धक है। वर्ष 2011 की तुलना में वर्ष 2020 में अंग्रेजी में इंटरनेट प्रयोक्ताओं की संख्या में लगभग 3 गुना तो भारतीय भाषाओं में इंटरनेट प्रयोक्ताओं की संख्या में लगभग 13 गुना की वृद्धि हुई है। वर्तमान में प्रत्येक 10 नये इंटरनेट प्रयोक्ताओं में से 9 प्रयोक्ता भारतीय भाषाओं के हैं।

अब यदि हम इंटरनेट पर विभिन्न भाषाओं में उपलब्ध सामग्री की बात करें, तो पायेंगे कि इंटरनेट पर उपलब्ध 60 प्रतिशत सामग्री अंग्रेजी में है, 8 प्रतिशत रूसी में, 4 प्रतिशत स्पेनिश में, 3.5 प्रतिशत तुर्की में, 2.9 प्रतिशत फारसी में, 2.6 प्रतिशत फ्रेंच में, 2.5 प्रतिशत जर्मन में, 2.1 प्रतिशत जापानी में, 1.7 प्रतिशत पुर्तगाली में, 1.6 प्रतिशत वियतनामी में और 1.4 प्रतिशत मंदारिन में है। इस सूची में 0.1 प्रतिशत के साथ हिंदी 34वें स्थान पर आती है। अन्य भारतीय भाषाओं का स्थान तो और भी पीछे है।

विचारणीय बात यह है कि यदि भारत इंटरनेट प्रयोक्ताओं की दृष्टि से दूसरे स्थान पर है और प्रथम स्थान की ओर अग्रसर है, तो भारतीय भाषाओं में सामग्री की कम उपलब्धता से देश को इसका समुचित लाभ नहीं मिल सकेगा। ग्रामीण क्षेत्रों में इंटरनेट प्रयोक्ताओं की बढ़ती संख्या को ध्यान में रखते हुए भारतीय भाषाओं में उपयोगी सामग्री निर्माण की अत्यधिक आवश्यकता है। भारतीय भाषाओं में जो सामग्री इंटरनेट पर उपलब्ध है भी, उसमें से अधिकांश मनोरंजन सामग्री है या फिर समाचार। इंटरनेट की असीम क्षमताओं का भरपूर लाभ उठाने के लिए प्रयोक्ता की भाषा में उपयोगी सामग्री को उपलब्ध कराना अति आवश्यक है।

दरअसल सूचना प्रौद्योगिकी के विकास के साथ-साथ इसके उत्पादों को दुनिया भर में जल्द से जल्द पहुँचाने के लिए तकनीकी विकास के अग्रणी राष्ट्रों ने अपनी भाषा को ही प्रमुखता दी। इसके परिणामस्वरूप बहुत सी भाषाएं तकनीकी रूप से पिछड़ गयीं और कुछ भाषाओं को उभरने के भरपूर अवसर मिले और उनके लिए भाषाई संकेंद्रण की स्थिति बन गयी।

भारत में पिछड़े और सुदूर क्षेत्रों में भी लोग वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग, सोशल मीडिया, डिजिटल समाचार, ऑनलाइन विज्ञापन, डिजिटल मनोरंजन, ई-बाज़ार, ऑनलाइन सरकारी सेवाओं जैसी विभिन्न सेवाओं का लाभ उठा रहे हैं। अब इंटरनेट मात्र मनोरंजन का साधन नहीं रहा है, यहाँ पर लोग पढ़ते और सीखते भी हैं और यदि ज्ञान उन्हें अपनी मातृभाषा में मिलें तो वे उसे सहर्ष स्वीकारते हैं। लॉकडाउन की अवधि में हमारे देश में बहुत से लोगों ने इंटरनेट के माध्यम से बहुत सी नयी सृजनात्मक गतिविधियों को सीखकर अपने आप को रचनात्मक रूप से समृद्ध बनाया है। इसमें भारतीय भाषाओं में इंटरनेट पर उपलब्ध सामग्री का विशेष योगदान है। इसके बावजूद अभी भी भारतीय भाषाओं में इंटरनेट पर उपयोगी सामग्री का घोर अभाव है।

एक भाषा के तौर पर इंटरनेट पर अंग्रेजी का वर्चस्व है और यह पिछले दो दशकों से है, लेकिन भारत में इंटरनेट प्रयोक्ताओं की बढ़ती संख्या को देखते हुए सभी भारतीय भाषाओं के पास एक बहुत बड़ा अवसर है कि इंटरनेट पर भारतीय भाषाओं की कमजोर स्थिति को मजबूत बनाया जाए। इस कार्य के लिए हम सभी को अपनी-अपनी भाषा की जिम्मेदारी लेनी होगी। हम अपनी भाषा में जो भी सृजन करते हैं, उसका प्रसार सभी डिजिटल माध्यमों में स्वयं करें। हम सोशल मीडिया, ईमेल, ब्लॉग आदि पर अपनी भाषा में लिखने में कोई संकोच न करें। हम इंटरनेट पर भारतीय भाषाओं में सामग्री को बढ़ाने में अपना योगदान दें। तभी हम भारतीय भाषाओं का भविष्य सुरक्षित कर पायेंगे। भविष्य में जो भाषाएं डिजिटल रूप से सक्षम होंगी, वही सुरक्षित रहेंगी, अन्य भाषाओं पर लुप्त होने का खतरा मंडराएगा।

नराकास धनबाद की गतिविधियों के प्रचार-प्रसार व हिंदी में बेहतर पाठ्य सामग्री उपलब्ध कराने के उद्देश्य से प्रकाशित की जाने वाली पत्रिका "धनबाद राजभाषा संदेश" का अंक-17 आपके समक्ष प्रस्तुत करते हुए अपार हर्ष हो रहा है। इस पत्रिका में पूर्व की भांति रोचक आलेखों, कविताओं आदि को स्थान दिया गया है। आशा है कि सुविज्ञ पाठकों को यह अंक पूर्व की भांति रोचक लगेगा।

- दिलीप कुमार सिंह

अध्यक्ष
गोपाल सिंह
अध्यक्ष–सह–प्रबंध निदेशक
भारत कोकिंग कोल लिमिटेड, धनबाद
एवं
अध्यक्ष, नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति
धनबाद

मार्गदर्शक
पी.वी.के.आर. मल्लिकार्जुन राव
निदेशक (कार्मिक)
भारत कोकिंग कोल लिमिटेड, धनबाद

परामर्श
प्रभात कुमार
महानिदेशक,
खान सुरक्षा महानिदेशालय, धनबाद
डॉ. प्रदीप कुमार सिंह
निदेशक,
केन्द्रीय खनन एवं ईंधन अनुसंधान संस्थान, धनबाद
आशीष बंसल
मंडल रेल प्रबंधक,
पूर्व मध्य रेलवे, धनबाद
ए. के. कुण्डू
कार्यपालक निदेशक
केन्द्रीय कोयला आपूर्ति संस्थान (सेल), धनबाद
कोलियरी प्रभाग (सेल), चासनाला
एस. के. सिंह
महाप्रबंधक (कार्मिक)/राजभाषा
भारत कोकिंग कोल लिमिटेड, धनबाद
एस. एतिराजु
आंचलिक प्रबंधक,
बैंक ऑफ इंडिया, धनबाद अंचल
सुबोध कुमार दत्ता
परियोजना प्रधान
दामोदर घाटी निगम, मैथन परियोजना

सह–संपादक
उदयवीर सिंह
उप प्रबंधक (राजभाषा)
भारत कोकिंग कोल लिमिटेड, धनबाद

संपादक मंडल
योगेन्द्र कुमार पासवान
उप महाप्रबंधक (कार्मिक)
केंद्रीय कोयला आपूर्ति संस्थान, धनबाद
चन्द्रकांत वर्मा
सहायक आयुक्त
सी. एम. पी. एफ. ओ., धनबाद
सहाना चौधरी
हिंदी अधिकारी
केन्द्रीय खनन एवं ईंधन अनुसंधान संस्थान, धनबाद

धनबाद अंक–17, नवंबर
राजभाषा संदेश
वर्ष 2020
नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, धनबाद की पत्रिका

इस अंक में.....

5 इंटरनेट ऑफ़ थिंग्स (IOT) का प्रयोग खदानों के जल संबंधी हल हेतु
8 हिंदी समाज एक आत्म लज्जित समाज है
12 मुहूर्त नहीं कार्य होते हैं शुभ अथवा अशुभ
14 किताबों की अंतिम यात्रा
15 साइबर ठग?
18 विश्व की सबसे ज्यादा समृद्ध भाषा कौन सी है...
19 नवगढ़ और विजयगढ़ की रोमांचक यात्रा
24 बचिए विटामिन 'डी' की कमी से
25 मातृभाषा में प्राथमिक शिक्षा
27 नयी शिक्षा नीति और मातृभाषाएं
29 स्वच्छ भारत अभियान की भूमिका
30 महाकाव्य से तुकबंदी कविता का विकास
36 राजभाषा समाचार

काव्य झरोखा

यूँ ही, बस याद नहीं 23
ये हिंदी 26
कोयले की आत्मकथा 28
जी हाँ मैं मज़दूर हूँ 32
पापा झट से ला देते थे 33
प्रेम शरण है 33
नेह पगे शब्द 33
स्वच्छ भारत अभियान 34
स्वच्छता – सन्देश 34
नव कोंपल 35
कल नही आता 39

संपादक
दिलीप कुमार सिंह
उप प्रबंधक (राजभाषा)
भारत कोकिंग कोल लिमिटेड, धनबाद
एवं सचिव, नराकास धनबाद

प्रकाशक
नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति,
धनबाद, झारखण्ड
संपर्क सूत्र :
अध्यक्ष कार्यालय
भारत कोकिंग कोल लिमिटेड
राजभाषा विभाग
कोयला भवन, कोयला नगर, धनबाद–826005
फोन : 0326–2236463 फैक्स : 0326–2230262
वेबसाईट : www.narakasdhanbad.org.in
ईमेल : narakasdhanbad@gmail.com
dilipsingh83@gmail.com

'धनबाद राजभाषा संदेश' में प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त विचार लेखकों के निजी विचार हैं । इनसे प्रकाशक / संपादक मंडल / नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, धनबाद का सहमत होना अनिवार्य नहीं हैं । अतः पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं की मौलिकता एवं उनमें व्यक्त विचारों के लिए रचनाकार उत्तरदायी हैं । न्यायिक सीमा, धनबाद।

तकनीकी आलेख

इंटरनेट ऑफ़ थिंग्स (IOT) का प्रयोग खदानों के जल संबंधी हल हेतु

-डॉ. ए. के. सोनी

सार (Abstract)

इस प्रपत्र द्वारा खानों के जल (खदान भूजल) के लिए, सूचना प्रसंस्करण की IOT तकनीकी पर आधारित नए संवेदन तंत्र / प्रणाली की समीक्षा की गई है। इसे विकसित करने के लिए किन-किन चीजों की आवश्यकता होगी इसका उल्लेख इस तकनीकी प्रपत्र में वर्णित है। खदानों में उपयोग हो सकने वाली इस प्रणाली का प्रस्तावित ढांचा, कैसा हो और जो कि IOT पर आधारित हो, यह भी दिया गया है। स्मार्ट-सेंसर्स (Smart-sensors), विभिन्न वायरलेस संचार नेटवर्क, ट्रांसमिशन परत, क्लाउड कंप्यूटिंग, डाटाप्रोसेसिंग और वास्तविक दूरस्थ संचार इस प्रणाली के महत्त्वपूर्ण अंग हैं। भविष्य में इस प्रणाली से वैज्ञानिक निर्णय लेने और भूजल या सतही जल से सम्बन्धी घटनाओं पर त्वरित प्रतिक्रिया के लिए यह विधि राष्ट्रीय दृष्टि से अत्यंत कारगर हो सकती हैं। जल-विज्ञान संबंधी समस्याओं के समाधान के अतिरिक्त यह दूरस्थ संचार (Tele-communication) में भी अत्यंत लाभदायक है।

मुख्य-शब्द (Key words): *खान /खदान, इंटरनेट ऑफ थिंग्स (IOT), पानी, भूजल,पर्यावरण प्रबंधन, वायरलेस संचार, सेंसर्स, नेटवर्क, जल-संरक्षण और जल-उपयोग।*

परिचय (Introduction)

खनन गतिविधि के सन्दर्भ में *पानी की चुनौतियों* (water challenges) को समझने के *लिए* हमें पर्यावरण, भूजल एवं हाइड्रोलिक्स *की मूलभूत जानकारी आवश्यक* है। लंबे समय तक उत्खनन से भूजल पर जो नकारात्मक प्रभाव पड़ते हैं, वह सभी को ज्ञात हैं। पानी की जानकारी को पर्यावरण के सापेक्ष में समझने के लिए हमें यह जानना जरूरी है कि इसके दुष्प्रभाव किस किस्म के हैं और IOTक्या है तथा इसका खदान-पानी सम्बन्धी हल (Mine-water solution) में क्या प्रयोग हो सकता हैं ताकि भूजल पर गंभीर प्रभाव न हो। तो आओ हम इसे समझें -

(अ) IOT (इंटरनेट ऑफ़ थिंग्स) क्या है ?

इंटरनेट ऑफ़ थिंग्स, इंटरनेट और संचार नेटवर्क (Internet and communication network) की एक संयुक्त विधा है जिसका उपयोग आज मोबाइल से ले कर कंप्यूटर तक होता हैं। यदि IOTका सही उपयोग किया जाय तो किसी भी खुली खदान की पानी से संबंधित तकनीकी समस्या और इसके समाधान को यह हल कर सकता है। इस तकनीक से आप अपने ऑफिस के कंप्यूटर पर बैठे- बैठे पूरी तकनीकी जानकारी पा सकते हैं। जैसे कि मोबाइल एप्स के द्वारा हम विभिन्न सूचनायें प्राप्त करते हैं उसी तरह आई. ओ. टी. का उपयोग हम खानों से निकले पानी की उपयोगिता के क्षेत्र में सुविधा युक्त तरीके से कर सकते हैं। हमें इस तकनीक का उपयोग करने के लिए क्या करना होगा, यह जान लेना आवश्यक होगा।

इंटरनेट ऑफ थिंग्स का बुद्धिमान उपयोग करके इंटरनेट और संचार नेटवर्क के माध्यम से हम जल निगरानी (Water monitoring), डेटा-प्रोसेसिंग (Data processing), डेटा-स्थानांतरण (Data transfer) और डेटा- विश्लेषण (Data analysis) द्वारा मूल्यांकन और प्रबंधन का कार्य कर सकते हैं। खदान के पानी से सम्बंधित सभी हल के लिए एक सुनिश्चित ढांचा (फ्रेमवर्क) हमें तैयार करना होगा। इसका विवरण नीचे दिया जा रहा हैं।

(ब) खदान-पानी हल (Mine-water solution) क्या है?

खदान -पानी हल के अंतर्गत पानी के प्रबंधन (management) संरक्षण (water conservation) और उपयोग (uses) से जुडी सभी समस्याएं आती हैं ,जो किसी भी प्रकार की हो सकती हैं। खदान की योजना-स्टेज (planning stage) पर ही इंटरनेट ऑफ थिंग्स का उचित हस्तक्षेप करके खान की उत्पादक क्षमता को बढ़ाया जा सकता हैं। इसके उपयोग से न केवल समय की बचत होती हैं वरन् उत्पादन लागत भी कम आती है। पानी-संबंधी सभी हल वस्तु-स्थिति का अनुमान लगा कर ही करना पड़ता है, अत: अभियांत्रिकी-आंकलन (engineering judgement) का इसमें सामरिक महत्त्व होता है।

जल निगरानी और डाटा प्रोसेसिंग (Water monitoring and data processing)

तकनीकी अवलोकन करने पर पता चलता है कि पर्यावरण मापना /आंकना (Environment monitoring/assessment / measuring) IOT तकनीक से शीघ्र और काफी सरल तरीके से संभव हैं। इसे कैसे करें, इसके लिए हमें कुछ विशिष्ट चीजों की जरूरत पड़ती हैं,जैसे कि उपकरण आदि। क्रमबद्ध तरीके से और अलग -अलग स्टेज से गुजरते हुए हम अपना परिणाम प्राप्त कर सकते हैं। इसमें से सबसे पहली स्टेज हैं, मूल्यांकन यानी की assessment stage। मूल्यांकन के वक्त स्मार्ट-सेंसर्स की जरूरत पड़ती हैं। इन्हे 'Intelligent sensors' भी कहा जाता हैं। ये वो उपकरण हैं' जो कि भौतिक वस्तुओं को पहचानने और मापने के लिए काम में आते हैं। पानी की गुणवत्ता के लिए पानी के मापदंडों (parameters), जैसे कि - तापमान, पी.एच., पानी की प्रवाह-दर को नापने के लिए तापमान सेंसर, पी. एच. सेंसर, ऑप्टिकल फाइबर सेंसर आदि। एक बार डेटा प्राप्त होने पर हम उसका उपयोग अपनी सुविधा अनुसार कर सकते हैं। प्राथमिक डाटा (primary data) या कि द्वितीयक

डेटा (secondary data) दोनों का प्रयोग इसके लिए किया जा सकता हैं।

डेटा स्थानांतरण*(Data transfer using multi-network system)*

डेटा स्थानांतरण के लिए जी.एस.एम. नेटवर्क (GSM network -A data transmission network for online data transfer) का व्यापक उपयोग किया जाता है। 'वाटर-मॉनिटरिंग सिस्टम' में डेटा को स्थानांतरित करने के लिए 'Web GIS' आजकल एक लोकप्रिय प्लेटफार्म है अतएव डेटा स्थानांतरण और उसके विकास के लिए Web GIS या की जीएसएम का प्रयोग लाभप्रद एवं सुझाव योग्य है।

'ऑफ़लाइन' और 'ऑनलाइन', दो मोड डेटा स्थानांतरण में शामिल हैं। स्वचालित प्रणाली में ऑफ़लाइन मोड का मतलब है कि जल संबंधित सभी डेटा सेंसर में संग्रहीत हैं और लोग बाद में डेटा केबल या वायरलेस संचार द्वारा डेटा डाउनलोड करते हैं। विभिन्न तरह के उपकरण डाटा डाउनलोड के लिए बाज़ार में उपलब्ध है। ऑनलाइन मोड का मतलब है कि एक निर्दिष्ट समय अंतराल पर डेटा सीधे निगरानी केंद्रों को भेजा जाता है। कई निगरानी स्थल जंगली क्षेत्रों में स्थित हैं और बिखरे हुए हैं, इसलिए इन उपकरणों का उपयोग अत्यंत सुविधा युक्त होता है।

क्लाउड कंप्यूटिंग द्वारा डेटा विश्लेषण (Cloud computing for data analysis)

नेटवर्क या इंटरनेट पर सेवा प्रदान करने के लिए हार्डवेयर और सॉफ्टवेयर (hardware & software) का उपयोग करना ही **Cloud Computing** कहलाता है। डेटा विश्लेषण के लिए तीन मुख्य प्रकार के**cloud computing service models**उपलब्ध हैं, जिन्हें आमतौर पर जाना जाता है: (I) सॉफ्टवेयर सर्विस (SaaS) (II) इन्फ्रास्ट्रक्चर सर्विस (IaaS) और (III) प्लॅटफॉर्म सर्विस (PaaS)। डेटा विश्लेषण की आवश्यकताओं के आधार पर, इनमें से किसी एक service model या तीनों के मिश्रण का उपयोग किया जा सकता है। क्लाउड कंप्यूटिंग इन्फ्रास्ट्रक्चर, प्लेटफॉर्म और सॉफ्टवेयर का केंद्रीयकरण और वर्चुअलाइजेशन करती है, जिससे समय तथा संसाधनों का पूरा उपयोग (optimal use) तीव्र गति से होता है। कठिन तथा बहु-आयामी समस्याओं का हल इसके द्वारा निकलता हैं, जिससे धन की बचत से भी इंकार नहीं किया जा सकता हैं।

पानी की गुणवत्ता के लिए एक लोकप्रिय पैमाना है - पानी-गुणवत्ता सूचकांक (Water quality index or WQI)। सतह जल /सतहीय जल (Surface water) और भूजल (Groundwater) निगरानी के लिए इस इंडेक्स का उपयोग इस विधि में अत्यंत उचित पाया गया है। यह ज्ञात हो कि वाटर क्वालिटी इंडेक्स कई शोधकर्त्ताओं ने विकसित किये हैं (कार्लोस, 2018) और इनका उपयोग भी परियोजनाओं में होता है। भूजल निगरानी सूचकांक (Groundwater monitoring index) भी एक दूसरा पैमाना है जिसका पानी के आंकलन के लिए प्रयोग किया जाता हैं, परन्तु यह सभी जगहों पर उतना लोकप्रिय नहीं है।

एक ढांचा / फ्रेमवर्क (A Framework)

सिद्धांत रूप में, खदान के जल पर विचार करने के लिए एक नया ढांचा (फ्रेमवर्क) खनन डेटा, पानी की गुणवत्ता और विषयगत अनुप्रयोग प्रणाली पर आधारित बनाया जा सकता है, जो की त्रिस्तरीय वास्तुकला (3tier architecture) के अनुसार होगा। नीचे दिए गए चित्र में इस दर्शाया गया हैं **(चित्र क्रमांक 1)**

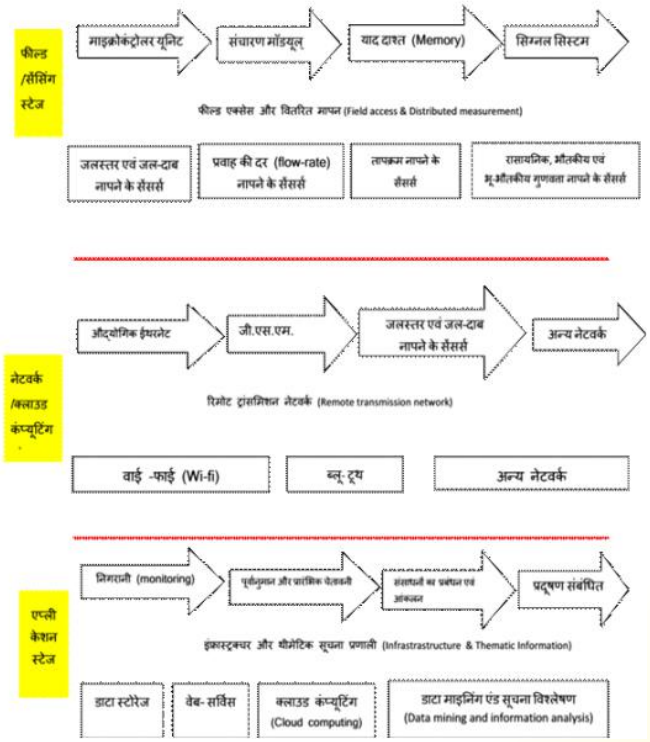

चित्र क्रमांक 1: निगरानी और सूचना की तकनीकी पर आधारित एक नया ढांचा (फ्रेमवर्क)

इसी तरह खदानों के लिए, विषयगत सूचना प्रणालियों के विभिन्न प्रकारों और कार्यों को एक तालिका में सूचीबद्ध किया गया है ***(तालिका* क्रमांक 1).**

तालिका* क्रमांक 1 : *विषय गत सूचना प्रणाली के प्रकार और कार्य

सिस्टम के प्रकार	कार्य के प्रकार
निगरानी	डेटा विजुलाइजेशन, 2 डी और 3 डी में दृश्य
सूचना पुशिंग	बुद्धिमान टर्मिनलों को जानकारी देना
रिमोट कंट्रोल	सेंसर दूरस्थ विन्यास

मूल्यांकन और प्रबंधन	जल प्रवाह इष्टतम प्रबंधन गुणवत्ता मूल्यांकन प्रदूषण जोखिम मूल्यांकन
स्थान और उसकी पहचान	हेडवाटर की पहचान हाइड्रोलिक कनेक्शन विश्लेषण
पूर्वानुमान और प्रारंभिक चेतावनी	जल भराव की जल्दी चेतावनी और भविष्यवाणी (इनफ्लो) प्रदूषण की चेतावनी

खदान-जल (Mine water), सतह जल और भूजल का मिश्रण होता है और इन जलों की प्रवृत्तियाँ भिन्न-भिन्न होने के कारण, संवेदनशील मापन की आवश्यकता महसूस होती हैं। पानी से संबंधित खदानों की सुरक्षा का एक महत्त्वपूर्ण मुद्दा है जल भराव (water inrush / इनफ्लो) का। इसके आंकलन के लिए Darcy's law पर आधारित हाइड्रोलिक की जानकारी द्वारा एक प्रभावी हल निकाल कर चुनौतियों का समाधान ढूंढना एक प्रभावी और उचित कदम होता है। भूमिगत खानों में इसकी संभावना अत्यधिक होती है, और यही कारण है कि कई बड़ी खान दुर्घटनाएं बीते समय में घटित हुई हैं। इस प्रकार के खतरों में अक्सर हताहतों की संख्या और बड़े पैमाने पर जान-माल तथा संपत्ति का नुकसान होता है, अतएव इन खतरों की जल्दी चेतावनी और भविष्यवाणी (Early warning and prediction) से इस किस्म की दुर्घटनाएं टालने में काफी मदद मिलती है। IOT एप्लीकेशन, इस विशिष्ट क्षेत्र में बहुत अधिक उपयोगी है और एक अहम् भूमिका निभा सकता है। जब डाटा-साइज बहुत बड़े पैमाने का या विशाल हो तो आजकल बिग-डाटा टूल (Big-Data tool) का भी उपयोग होता है।

डेटा-बैंक (Data bank)

इस आधुनिक सूचना प्रसंस्करण तकनीकी से एक अच्छे 'डेटा-बैंक' विकसित करने की प्रबल संभावनाएं बनती है। इसलिए इस तरह का जल स्टोरेज डेटा-बैंक, जो की विशेषत: खान उद्योग के लिए समर्पित हो,भविष्य के लिए अत्यंत उपयोगी तथा अच्छा माध्यम सिद्ध होगा। चूंकि कंप्यूटर के माध्यम से डाटा का निकालना (data retrieval) आसान होता हैं इसलिए ये बैंक सभी को पसंद आएगा और जिसका भविष्य में वृहत उपयोग भी किया जा सकता है। जल और उससे संबंधित सभी किस्म की सूचनाएं इस डाटा बैंक में रखी जा सकती हैं। यह बैंक डिजिटल होने के कारण आधुनिक एवं समय अनुरूप होगा। कोयला खानों और अन्य खानों हेतु, अलग-अलग डेटा-बैंक तैयार किये जा सकते हैं।

वर्णित क्षेत्र में शोध की महत्ता

खदान-जल (Mine-water) और IOT दोनों नए क्षेत्र हैं। इन वर्णित क्षेत्र में बहुत कम अनुसन्धान हुआ हैं, इसलिए इनसे संबंधित शोध की व्यापक सम्भावनायें नजर आती हैं। खानों का विषय स्थान-विशेष (site-specific) होने के कारण हमें इन विषयों पर नए-नए शोध की भी आवश्यकता है।

पानी की कमी, प्रदूषण का पूर्वानुमान और प्रारंभिक चेतावनी, प्रदूषण जोखिम (Pollution risks), पर्यावरण मूल्यांकन और एक्वीफर्स (Aquifers) तथा जल स्रोतों के बीच संबंध का विश्लेषण करने के लिए इस दिशा में शोध की महत्ता अत्यंत उपयोगी सिद्ध हो सकती है।

निष्कर्ष (Conclusions)

इंटरनेट ऑफ थिंग्स (IOT) का उपयोग करके, इंटरनेट और संचार नेटवर्क के माध्यम से हम एक राष्ट्रीय भूजल निगरानी (National groundwater monitoring) की एक नयी परियोजना शुरू कर सकते हैं। इसके लिए हमें उचित संसाधनों का एक मूलभूत ढांचा खड़ा करना होगा और उसे प्रयोग में भी लाना होगा। खदानों के जल संबंधित हल हेतु IOT आधारित यह प्रस्तावित प्रणाली / ढांचा एक नया समाधान प्रदान करेगा। इस पर आधारित वैज्ञानिक विश्लेषण, निर्णय लेने और त्वरित प्रतिक्रिया देने में एक सक्षम हथियार सिद्ध होगा। विषयगत सूचना-प्रणाली (Subject -wise information system) चूंकि खानो के लिए ही विकसित / डिज़ाइन की गई हैं, अतएव यह ढांचा औद्योगिक इकाइयों की भविष्य की जरूरतों को पूरा करने में सक्षम होगा, ऐसा लेखक का विचार हैं। प्रस्तावित ढांचे को साकार करने में एकीकृत-ज्ञान (Integrated Knowledge) एवं तकनीकी सहयोग अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। विभिन्न विषयों के शोधकर्ताओं को चाहिए कि भविष्य में, तकनीकी परिवर्तन के साथ, इस ढांचे को और विकसित तथा सुदृढ करने में अपना योगदान दें।

पानी की जटिल चुनौतियों को समझने तथा हल करने के लिए हमें सृजनात्मक हल (creative solutions) के अलावा इंटरडिसिप्लिनरी समस्या निदान (interdisciplinary problem-solving) एवं पर्यावरण समझ की भी आवश्यकता है, तभी हम इसकी सुरक्षा सही मायनों में कर सकते हैं। आओ हम इस दिशा में कारगर कदम बढ़ाएं।

संदर्भ

Carlos Alexandre Borges Garcia, Igor Santos Silva,Maria Caroline Silva Mendonça and Helenice Leite Garcia (2018), जल गुणवत्ता सूचकांकों का मूल्यांकन : उपयोग, विकास और भविष्य के परिप्रेक्ष्य में, अध्याय 2 -पर्यावरण निगरानी और आकलन में प्रगति [Evaluation of Water Quality Indices: Use, Evolution and Future Perspectives, Chapter 2 IN *Advances in Environmental Monitoring and Assessment], पृ. सं. 21-37, http://dx.doi.org/10.5772/intech open.79408.*

मुख्य वैज्ञानिक
सीएसआईआर - केन्द्रीय खनन एवं ईंधन अनुसंधान संस्थान (CSIR-CIMFR)
नागपुर अनुसन्धान केंद्र, नागपुर, (महाराष्ट्र) - 440001

साक्षात्कार

हिंदी समाज एक आत्म लज्जित समाज है

-राहुल देव

दिनांक: 17 जनवरी 2020

राहुल देव! हिंदी-अंग्रेजी टेलीविजन पत्रकारिता का एक जाना पहचाना चेहरा!!

गोरा-चिट्टा, लंबा, छरहरा, चुस्त-दुरूस्त बदन, चेहरे पर तराशी हुई सफेद दाढ़ी, आंखों के आगे खूबसूरत और स्टाइलिश चश्मा और सर पर करीने से संवरे सफेद बाल वाले राहुल देव पत्रकारिता के गिरते मूल्य और घटती साख के बीच भारतीय भाषाओं के वजूद को बचाने के लिए पूरी शिद्दत से लगे हैं। पैंतीस सालों से भी अधिक समय से इलेक्ट्रानिक और प्रिंट मीडिया में अपना योगदान देने के दौरान एक भी दिन ऐसा न रहा हो जब इन पर कोई न कोई आरोप, कोई न कोई इल्जाम नहीं लगा हो। सन् 1997 में हिंदी टेलीविजन पत्रकारिता के पुरोधा सुरेंद्र प्रताप सिंह की असामयिक मृत्यु के बाद हिंदी चैनल आजतक पर एंकरिंग की महती जिम्मेदारी सफलतापूर्वक निभाने वाले राहुल देव हमेशा पत्रकारिता में भाषा के स्वरूप और उसके संस्कार को परिष्कृत करने के लिए प्रयत्नशील रहते हैं।

हिंदी ही नहीं अन्य भारतीय भाषाओं में अंग्रेजी शब्दों को जबरन ठूंसे जाते जब देखते हैं तो इनकी आंखों में आक्रोश के लाल डोरे उभरने लगते हैं। इसके विरोध में तुरंत उठ खड़े होते हैं। इनका स्पष्ट मानना है कि कोई भी भाषा हो, उसकी शुद्धता और पवित्रता बनी रहनी चाहिए। भाषा के मिश्रण के वे घोर विरोधी रहे हैं। इन्हें डर है कि समय रहते इसे यदि रोका नहीं गया या इसमें सुधार नहीं लाया गया तो आनेवाली दूसरी पीढ़ी के बाद हिंदी ही नहीं तमाम भारतीय भाषाएं विलुप्तता के कगार पर पहुंच जायेंगी और केवल मनोरंजन और बोलचाल के रूप में याद की जायेंगी।

*जब इस शख्सियत के बारे में पता चला कि ये विश्व हिंदी दिवस के अवसर पर **हिंदी की दशा, दिशा और भविष्य** जैसे गुरू गंभीर विषय पर व्याख्यान देने धनबाद पधार रहे हैं, तो इनसे मिलने का लोभ संवरण नहीं कर पाया। संपर्क करने पर व्याख्यान तथा दोपहर के भोजन के बाद कोलियरी घूमने जाते समय साथ चलने की इजाजत मिली। तय यह हुआ कि रास्ते में जब भी मौका मिलेगा, बात कर ली जायेगी। धनबाद की कोलियरी की उबड़-खाबड़ सड़कों और आने जाने वाले वाहनों की आवाज के बीच बातचीत कैसे की जाए, समझ में ही नहीं आ रहा था। फिर भी किसी तरह बात करने का मौका मिल ही गया।*

क्या हिंदी की वर्तमान स्थिति से आप संतुष्ट हैं?

बिल्कुल नहीं। जो लोग हिंदी से जुड़े हैं, उनको अपने जीवन में हिंदी के महत्त्व को देखकर लगता है कि सबके जीवन में हिंदी इतनी ही महत्त्वपूर्ण है इसलिए उसको संकट नहीं है। लेकिन अपने आसपास, चारों तरफ देखेंगे कि क्या हो रहा है, कैसी है हिंदी और सारी भारतीय भाषाएं, तो पायेंगे कि हमारे निजी और सार्वजनिक जीवन में सिकुड़ रही हैं। और उनकी जगह कम हो रही है। दूसरी ओर, अंग्रेजी का प्रभुत्त्व और उसका महत्त्व, उसकी जकड़न, प्रतिष्ठा और शक्ति लगातार बढ़ती जा रही है। हिंदी ही क्यों सारी भारतीय भाषाओं की स्थिति, उन्नीस-बीस के अंतर से, यही स्थिति है। .

हिंदी अभी तक राजकाज की भाषा क्यों नहीं बन पाई है ?

आजादी के बाद से ही देश के प्रबुद्ध, उच्च वर्ग तथा शासक वर्ग ने अपने ऊपर अंग्रेजी और अंग्रेजियत ओढ़ ली थी। वह कम होने के बजाय दिनों दिन बढ़ी है। दूसरी ओर, हिंदी सहित अन्य भारतीय भाषाओं को ज्ञान की भाषा बनाने के लिए तैयार नहीं किया गया। इसमें समाज की भी कमी है। जो प्रमुख वर्ग, शासक वर्ग तथा तथाकथित बड़े लोग हैं उन सब ने इन भारतीय भाषाओं को आगे बढ़ाने पर ध्यान नहीं दिया। अंग्रेजी को ही आगे बढ़ाया। क्योंकि अंग्रेजी पहले से ही उसके पास थी। उसके प्रभाव क्षेत्र को और बढ़ाया है उन्होंने। उन्होंने यह समझने में चूक की है कि भाषा केवल संवेदना और संवाद का माध्यम नहीं होती, वह पूरा संसार होती है। अपनी भाषा, स्थानीय भाषा का मौलिकता से, नवाचार से, मौलिक चिंतन से, शोध से और आविष्कार से सीधा और गहरा संबंध है। और अगर भारत को ज्ञान आधारित देश और राष्ट्र बनाना चाहते हैं तो उसके लोग, पंचानबे फीसदी लोग जो अन्य भारतीय भाषाओं में जीते हैं, सोचते हैं, सपने देखते हैं, उन्ही भाषाओं में जब उनको ज्ञान मिलेगा और उन्हीं भाषाओं में उन्हें अपनी मौलिकता और बाहर से प्राप्त ज्ञान के आधार पर नए निर्माण की, नए अविष्कार का अवसर मिलेगा तब देश का विकास होगा।

हालांकि आजादी के बाद से ही जितने शिक्षा आयोग बने, राधा कृष्ण आयोग से लेकर कोठारी आयोग तक, सबने बार-बार यह जोर देकर कहा कि शिक्षा स्थानीय भारतीय भाषाओं में ही होनी चाहिए। लेकिन उस सब को दरकिनार करके शिक्षा, उच्च शिक्षा और अब तो प्राथमिक शिक्षा का भी माध्यम अंग्रेजी बना दिया गया है। लेकिन विचित्र स्थिति यही है कि अंग्रेजी डेढ़ सौ वर्षों की कोशिशों के बावजूद, मुश्किल से दस-बारह फीसदी लोगों तक पहुंच पाई है। यानी दस-बारह फीसदी लोग ही हैं जिनको अंग्रेजी का ठीक ठीक काम चलाने लायक ज्ञान प्राप्त है। बाकी जो नब्बे फीसदी भारतीय हैं, अपनी भारतीय भाषाओं में ही जीते हैं। लेकिन अंग्रेजी उनके लिए शीशा की दीवार और छत बन गई है, जिसके परे वह नहीं जा सकते जो उनके विकास की संभावनाओं और द्वारों को अवरुद्ध करती है। यह भयानक भेदभाव हो रहा है। लेकिन अभी तक लोगों को तथा सरकारों को दिखा नहीं है जिसे तोड़ने का संगठित प्रयास अभी तक नहीं किया गया है जो मेरे लिए सबसे बड़े आश्चर्य की बात है।

हिंदी के विकास के लिए तरह तरह के जो सरकारी आयोजन हो रहे हैं क्या यह पर्याप्त हैं?

यह पर्याप्त नहीं है। इसमें राज्य की बहुत बड़ी भूमिका है। इसमें बड़े संस्थानों की बहुत बड़ी भूमिका है। सब मिलकर जब रणनीति बनाएंगे और मिल बैठकर काम करेंगे तब भाषाएं बचेंगी। इसमें स्थानीय भाषाओं में पढ़ाने की जरूरत है। इसकी जगह अंग्रेजी लेती जा रही है। जब तक प्राथमिक शिक्षा का माध्यम स्थानीय नहीं होगा, तब तक स्थानीय भाषाओं को बचाया नहीं जा सकता। इसके लिए केंद्र और राज्य, दोनों स्तर पर बड़े नीतिगत परिवर्तन करने पड़ेंगे। यह सुनिश्चित करना पड़ेगा कि निजी क्षेत्र हो या सरकारी क्षेत्र के विद्यालय, वहां शिक्षा का माध्यम स्थानीय भाषा ही हो, चाहे वह निजी विद्यालय हो या सरकारी।

हिंदी ज्ञान विज्ञान की भाषा नहीं बनी यानी विज्ञान, तकनीकी यहां तक कि समाज-विज्ञान की पुस्तकें नहीं लिखी गयीं या पढ़ाई का माध्यम नहीं बनी। इसके क्या कारण है?

यही तो चिंता मैंने पहले भी जताई थी। उच्च शिक्षा, शिक्षा के माध्यम को लेकर जब हिंदी की बात करता हूं तो मैं केवल हिंदी की नहीं सारी भारतीय भाषाओं की बात करता हूं और दोहराना चाहता हूं कि यह केवल हिंदी की समस्या नहीं है। इतना जान लीजिए कि हिंदी में सब कुछ करके हम हिंदी को बचा लेंगे तो भी हम नहीं बचा सकते। यह सभी भारतीय भाषाओं का साझा संकट है। हिंदी वालों की समस्या यह है कि वे केवल 'हिंदी हिंदी' करते हैं, दूसरी भाषाओं को देखते तक नहीं। उनकी चिंता नहीं है। केवल हिंदी जैसी विराट भाषा, वह भी चाहे तो अपने आप को बचा नहीं सकती है अकेले। सभी भाषाएं जब एक मंच पर आएंगी, एक साथ आएंगी, मिलकर लड़ेंगी तब बच पाएंगी, पहली बात। दूसरी बात मैंने तो कहा ही है कि हिंदी साहित्य की भाषा तो पहले से ही उत्कृष्ट है। इनको ज्ञान की भाषा बनाना है। इसमें किताबें कई लोगों ने लिखी, लेकिन हिंदी समाज ने, हिंदी के पाठकों ने उसको अपनाया नहीं। शिक्षकों ने भी नहीं अपनाया। 70 साल में हिंदी के शिक्षकों की कम से कम 25 पीढ़ियां निकल गई होंगी, कितने लोग निकल गए होंगे। आप सोचिए जो अपने-अपने विषयों के विशेषज्ञ थे, बहुत अच्छे विशेषज्ञ रहे। कुल मिलाकर श्रेष्ठ किताबें, मौलिक किताबें नहीं लिखीं अपने-अपने विषय में। मैं उनको सीधा दोष देता हूं। वह लिखते। कक्षा में भारतीय भाषाओं को पढ़ाते अगर, तो यह स्थिति नहीं आती और हिंदी ज्ञान की भाषा बन जाती।

लाल्टू को आप जानते होंगे। हिंदी के लेखक हैं । आईआईआईटी हैदराबाद में प्रोफेसर भी हैं। उनसे जब पूछा गया कि हिंदी में उच्च ज्ञान की बातें क्या पढ़ाई या सुनी नहीं जा सकती? उन्होंने कहा था कि बिल्कुल पढ़ायी या सुनी जा सकती हैं। सच्चाई तो यह है कि ज्ञान- विज्ञान की कोई भाषा नहीं होती है। भाषा निरपेक्ष होती है । वह प्लेटफॉर्म इंडिपेंडेंट होती है। कोई जरूरी नहीं है कि अंग्रेजी में ही बोलें तो लोग समझ पाएंगे। हम लोग भी सोचते तो है हिंदी में या फिर जो मातृभाषा है उसी में ही।

एक अन्य सवाल जो भाषा से ही संबंधित है। सरकार ने इतना बड़ा ढांचा खड़ा किया है अरबों खरबों रुपया राजभाषा विभाग, केंद्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्थान, वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दावली आयोग में खर्च कर रहीं है। इसने हिंदी पर काफी काम किया है, लाखों शब्दों का अनुवाद किया है, हिंदी में शब्द गढ़े हैं वे विज्ञान के हों, तकनीकी के हों तथा तमाम विषयों के हों, क्या इन्हें लागू कराने में कहां कमी हुई है? हमसे कहां चूक हो गई है? लाखों शब्द हैं हमारे पास किसी भी विषय पर। इसे लागू नहीं कर पा रहे हैं। हिंदी में ज्ञान के लिए शब्द हैं मेरे पास, पर ज्ञान की भाषा नहीं बना पा रहे हैं हम। कहां चूक हो रही है?

हिंदी समाज एक आत्म लज्जित समाज है। इसमें भाषा अभिमान नहीं है। स्वभाषा का अभिमान नहीं है। वह दर्द नहीं है कि आत्मविश्वास के साथ अपनी भाषा के शब्दों का उपयोग करें उच्चतम या उच्चतर स्तरों पर।

हमारे पास शिक्षा का माध्यम तो है लेकिन हमारे पास अच्छे स्कूल नहीं हैं। पाठ्यक्रम की अच्छी किताबें नहीं हैं। वहां अंग्रेजी माध्यम की अराजकता सी है। जो वे चाहते हैं, करते हैं। ऐसी स्थिति में हमारे पास विकल्प नहीं होंगे तो जनमानस कहां जाएगा। हिंदी माध्यम का विकल्प नहीं है हमारे पास। नीतिगत कमी कहीं न कहीं तो है ही?

नीतिगत कमी थोड़ी बहुत नहीं, बहुत रही है, बहुत ज्यादा रही है। सरकारों ने भी और निजी स्तर पर लोगों ने भी जिन्होंने विद्यालय खोले, उन्होंने भी इसके साथ सौतेला व्यवहार किया है। एक तो सरकारी अस्पताल और सरकारी विद्यालयों को लगता है कि षडयंत्रपूर्वक बर्बाद किया गया। और दूसरी बात अलग-अलग भाषाई समाजों और सामाजिक विकास और सामाजिक मनोविज्ञान का भी एक प्रश्न है कि उन्हीं परिस्थितियों में रहने वाला एक औसत मराठी या औसत बंगाली या तमिल अपनी भाषा से इतनी गहराई से क्यों जुड़ा है हमारी तुलना में? उसकी अंग्रेजी भी हमसे बेहतर है और अपनी भाषा से लगाव भी बेहतर है। वह अपनी भाषा का इस्तेमाल भी हमसे बेहतर करता है। हम क्यों नहीं कर पाते? हममें यह दैन्य क्यों है? जैसा समाज है हमारा, नेता भी तो उसी समाज से निकलते हैं, आप हिंदी प्रदेशों के खासकर उत्तर प्रदेश, झारखंड, बिहार के राज्यों से निकलने वाले जनप्रतिनिधियों को देखिए कि उनका बौद्धिक स्तर, उनका सामाजिक, सांस्कृतिक समाज, उनको देखिए, उनकी तुलना कीजिए गुजरात, महाराष्ट्र, मलयालम के लोगों से। आप बहुत स्पष्ट अंतर पाते हैं। उनकी शिक्षा के स्तर में अंतर देखिए, उनकी सोच के स्तर में अंतर देखिए। तो बिहार में जो शिक्षा के स्तर में दूर्दशा हुई, उसके लिए कौन जिम्मेदार है? इस चीज को समग्रता में देखना पड़ेगा, अलग-अलग चिह्नित नहीं कर सकते कि ये जिम्मेदार हैं या ये नहीं हैं। ये ज्यादा है, ये कम है। इस पर सरकारों ने ध्यान नहीं दिया। हमारी नौकरशाही एक बहुत बड़ी शक्ति है। शुरू से ही इसमें कोई बुनियादी परिवर्तन नहीं किया गया। आजादी के बाद वह ढांचा वैसा का वैसा अपना लिया गया है। आज भी सामंतवादी और उपनिवेशवादी सोच से ग्रस्त हैं। वह है 'हम शासक हैं', यह शासित है। हम मालिक हैं, ये जनता है। हम राजा हैं और यह प्रजा है, तो उनका वह अहंकार, उसकी लोगों से दूरी स्पष्ट दिखती है। अंग्रेजी उनके लिए वह ढाल बन गई जिसमें वे अपने को विशिष्ट और शक्तिशाली दिखा सकता था। आज भी है। उसको जनता से, जनता की भाषा में संवाद करना नहीं पसंद है। क्योंकि उससे बराबरी का आभास होता है। समता आती है।

समता उसको पसंद नहीं है। जनता उसके आगे साहब कहकर हाथ जोड़कर उसके आगे खड़ी रहती है। उसके अहंकार को यह चाहिए। यही स्थिति विधायकों की भी है, हमारे सांसदों की भी है। कायदे से तो वे हमारे सेवक हैं, लेकिन जो जनता है, गरीब आदमी है, देश के वह सामान्य लोग हैं, वह याचक की तरह उनके सामने खड़ा रहता है। देखकर खून खौलता है। यह समाज की समस्या है।

आपने अपने व्याख्यान के दौरान कहा था कि हिंदी भाषी को ही नहीं सभी भारतीय भाषा भाषी लोगों को यह मांग करनी चाहिए कि हमारे बच्चों को प्रारंभिक स्तर पर मातृभाषा में शिक्षा का जो हक है, उन्हें मिलना चाहिए। यदि सरकार के कानों तक यह बात पहुंचाई जाए तो संभवतः कुछ सुधार हो या इस दिशा में सोचा जाए। या क्या यह संभावना बनती है कि जैसे आजकल के परिवेश में हर बात आंदोलन के माध्यम से हो रही है, इसके लिए भी कभी इस देश में आंदोलन की संभावना बनती है कि सारे भारतीय भाषाओं के लोग आप जैसे प्रबुद्ध वर्ग के साथ इस ध्वजा को एक बैनर तले लेकर अपनी आवाज को सरकार के कानों तक जोश खरोश के साथ नहीं पहुंचाएं। क्या इसकी संभावना है?

इसकी जरूरत है और संभावना भी है। मैं करना भी चाहता हूं लेकिन इसकी चुनौती कितनी बड़ी और कितनी कड़ी है, इसका भी अहसास है मुझे। अभी सबसे पहली चुनौती यह है कि आम जनता जिसको हम कह रहे हैं जो जन है हमारा ,उसके दिलो दिमाग में यह बात घर कर गई है कि अंग्रेजी ही इनके बच्चों का भविष्य सुरक्षित कर सकती है। नेताओं से ज्यादा जरूरत है कि जन को यह समझाए कि भैया तुम्हारे बच्चों का नुकसान है, अंग्रेजी माध्यम में पढ़ाने से, अपनी मातृभाषा के माध्यम से पढ़ाओ, अंग्रेजी तो उनको आ ही जाएगी। लेकिन यह समझाने की कोशिश कीजिए। इसके लिए हर शहर, हर जिले में संगठित प्रयास करना होगा। इसके लिए टीम चाहिए, बड़े लोगों की बड़ी टीम चाहिए जो यह काम करें। आप समझ रहे हैं न कि हम कितने बड़े संगठन की बात कर रहे हैं। यह दूसरी आजादी के आंदोलन जितना बड़ा काम है। उससे और ज्यादा और बड़ा कठिन है।

हिंदी का भविष्य कैसा है?

मैं आपको दुखाने, डराने और जगाने की कोशिश करूंगा। हिंदी का भविष्य उज्ज्वल है, इस विश्वास को पुष्ट करने का एक भी तर्क मेरे पास नहीं है। मैं आपको यह बताने की कोशिश करूंगा कि हिंदी भाषा ही नहीं, सभी भारतीय भाषाओं का भविष्य दरअसल बहुत अंधकार में है।

मैं आपसे पूछना चाहूंगा कि कितने लोगों के बच्चे अंग्रेजी माध्यम के स्कूलों में पढ़ते हैं तो शायद नब्बे से पंचानवें फीसदी लोगों के बच्चे अंग्रेजी माध्यम के स्कूलों में पढ़ रहे होंगे। हिंदी माध्यम के स्कूलों में दो से तीन फीसदी लोगों के बच्चे ही पढ़ रहे होंगे। मैं यदि पूछूं कि आपके बच्चों के बच्चे किस माध्यम के स्कूलों में पढ़ेंगे, क्या वे हिंदी के स्कूलों में पढ़ेंगे, अधिकतर का जवाब होगा नहीं। हमारे आपके बच्चों की मातृभाषा, जब वे वयस्क होंगे तो उनके जीवन की प्रथम भाषा क्या होगी? प्रथम भाषा उसे कहते हैं जिसमें हम जीवन के महत्त्वपूर्ण काम करते हैं। यहां पर किसी की प्रथम भाषा भोजपुरी होगी, किसी की मगही होगी, किसी की मराठी होगी, किसी की राजस्थानी होगी या झारखंड की आदिवासी भाषा होगी। हम लोगों की तो मातृभाषा स्थानीय होगी लेकिन जब हमारे बच्चे बड़े होंगे तो क्या उसकी मातृभाषा हिंदी होगी? उससे भी आगे जाएं तो हमारे बच्चों के बच्चे की मातृभाषा हिंदी होगी? नहीं न। शुरू में जब हम बच्चे रहते हैं तो मातृभाषा जो होती है, वह आगे चलकर वह नहीं रहती। यानी जैसे जैसे हम बड़े होते जाते हैं, वह मातृभाषा उस रूप में नहीं रहती है। यानी जब हम बच्चे होते हैं तो हमारी मातृभाषा प्रमुख रहती है, लेकिन जैसे-जैसे बड़े होते जाते हैं, हमारी मातृभाषा प्रमुख नहीं रहती है।

मैं फिर पूछना चाहूंगा कि हमारी आपकी मातृभाषा हिंदी होगी, लेकिन हमारे बच्चों की प्रथम मातृभाषा हिंदी होगी, किसी को विश्वास है? यह सोचने वाली बात है। ऐसी स्थिति में क्या हम कह सकते हैं कि हिंदी का भविष्य उज्ज्वल है। हिंदी का भविष्य आपके सामने खड़ा है। इससे आप आंखें नहीं चुरा सकते हैं। तो आप इन नकली ढकोसलों में नहीं जी सकते कि हिंदी भविष्य की भाषा है, विश्व की भाषा बनने जा रही है। सच्चाई तो यही है कि अगले तीस से चालीस सालों में जब हम स्वतंत्र भारत की आजादी की सौंवी जयंती मना रहे होंगे, तब तक हमारी सारी भारतीय भाषाएं, हिंदी सहित, बहुत गरीब और गरीबों की भाषा के रूप में ही जीवित रहेंगी। सशक्त भाषा लिखने पढ़ने वाले कौन होंगे या भविष्य में सशक्त भाषा होगी, आपके बच्चे तो नहीं, आपके बच्चों के बच्चे तो नहीं। आप किसी भी आम आदमी से पूछिए कि आपके बच्चों के बच्चे की प्रथम मातृभाषा क्या होगी तो वह आपको बता देंगे कि अंग्रेजी। क्योंकि इस देश का गरीब से गरीब आदमी के दिमाग में यह बात घर कर गई है, उसका दिमाग आत्मसात कर लिया है कि अंग्रेजी ही भविष्य की भाषा है। अंग्रेजी ही भविष्य के निर्माण की भाषा है। हमारे बच्चों को अंग्रेजी चाहिए। इसलिए गरीब से गरीब आदमी भी, चाहे वह आदिवासी गांव में या सुदूर गांव में बैठा हो, अपने बच्चों की सिर्फ एक भाषा की मांग करते हैं वह है अंग्रेजी। हिंदी की कहीं कोई मांग है क्या। तो जिसकी कहीं कोई मांग ही नहीं है तो कैसे बचेगी, बच सकती है क्या? आज भी अधिकांश लोगों के मुंह से भारत कम निकलता है, इंडिया ही ज्यादा निकलता है। तो भारत और इंडिया का अंतर सबको पता है? भारतीय संस्कृति और सभ्यता ने अपने हजारों वर्षों में जो कुछ कमाया जो उसका असर है, उसका खजाना है, जिसका लोहा पूरी दुनिया मानती है, वह सब हमारे आप सबों की आंखों के सामने विस्मृत हो जाएगी। और हमारे साथ आठ हजार वर्षों की परंपरा से, जीवन यात्रा से, हमारे देखते-देखते, दो से तीन पीढ़ियों के भीतर एक स्मृति विहीन भारतीयता, भारतीयों की एक

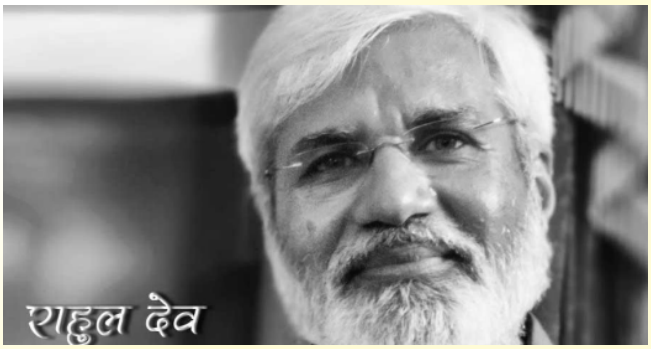

पीढ़ी हमारे सामने खड़ी होगी। तो कहां होगा भारत, कहां होगी भारतीयता और कहां होगी यह सभ्यता? इस पर आप विचार कीजिए। मैं भविष्य से पीछे चल रहा हूं भविष्य ने दिखा दिया। इसमें असहमत होने वाली बात ही नहीं है। जब भाषा नहीं बचेगी तो हमारी संस्कृति कैसे बचेगी? हमारे सारे त्योहार, हमारा सारा वांग्मय, हमारा, महाभारत, श्रीमद्भागवत गीता, वेद, उपनिषद, हमारा आध्यात्मिक साहित्य, हमारा साहित्य, संस्कृत साहित्य, हमारा ज्ञान का साहित्य, ज्ञान विज्ञान का साहित्य और अध्यात्म यानी सब कुछ जो चीजें, जो ग्रंथों में जिन भाषाओं में उल्लिखित हैं उनके माध्यम से हम तक पहुंचा है। तो वे कब बचेंगे? उनको पढ़ने वाले ही कोई नहीं होंगे। उच्चारण संभव नहीं होगा तो फिर संस्कृति कैसे बचेगी? भाषा, संस्कृति, सभ्यता सब एक दूसरे से जुड़े हुए है। यह कैसे हुआ, सौ सवा सौ साल पुरानी कहानी है। यानी सवा सौ साल पहले महात्मा गांधी आदि लोग कहना शुरू कर दिए थे। किंतु न तब इनकी बात सुनी गई न अब सुनी जा रही है और आगे सुनी जाएगी, इसकी संभावना बहुत कम है। हम एक ऐसी सरकार में हैं जो भारतीय संस्कृति, हिंदू संस्कृति को ही सब कुछ मानती है। उसको भी दिख नहीं रहा है। प्रश्न हिंदी का भी नहीं है। हिंदी का कोई महत्त्व नहीं है। कोई अतिरिक्त महत्त्व नहीं है। जैसे हमारी बाकी 22 भारतीय भाषाएं हैं ऐसे कहने को तो 16 सौ से भी अधिक भाषाएं हैं, उसी में एक भाषा हिंदी है। हिंदी में कोई सुर्खाब का पंख नहीं लगा है जो दूसरी भाषाओं से बेहतर सिद्ध करें।

भाषा कैसे बचाई जा सकती है या बचा सकते हैं? भाषा के माध्यम से अपनी संस्कृति और सभ्यता को कैसे बचाएं?

पहला है प्राथमिक शिक्षा में, सारे देश में निजी और सरकारी सभी विद्यालयों में, माध्यम भाषा के रूप में स्थानीय भाषाओं की पुनर्स्थापना, पुनर्प्रतिष्ठा। माध्यम भाषा उसे कहते हैं जिसके द्वारा हम सभी विषयों को पढ़ाते हैं। कोई भी प्रदेश हो माध्यम भाषा उस प्रदेश की स्थानीय भाषा ही होनी चाहिए। प्राथमिक शिक्षा में जब तक यह अनिवार्य नहीं होगा, तब तक ईश्वर भी हमारी भाषा को नहीं बचा सकता। यह मांग हम सबको मिलकर करनी चाहिए, अभिभावक के रूप में करनी चाहिए। पूरी दुनिया में यह सार्वभौमिक रूप से मान्य है कि बच्चों के बौद्धिक विकास का प्रथम माध्यम अपनी मातृभाषा होती है। सारी दुनिया के मनोविज्ञान, ज्ञान और शिक्षाविद एक मत हैं। यूनेस्को वर्षों से चीख चीख कर कह रहा है कि प्राथमिक शिक्षा में मातृभाषा को ही माध्यम बनाने की जरूरत है। बहुभाषी कक्षाएं बनाइए बहुभाषी विद्यालय बनाइए उसके मॉडल अलग हैं। कई जगह काम हो रहा है, कई विषयों में हो रहा है। लेकिन इसके बावजूद भारत जैसे देशों में अंग्रेजी जैसी दास्तां में अभी भी पड़े हुए हैं। हमारा बौद्धिक उपनिवेशवाद इतना मजबूत हो गया है और लगातार हो रहा है। और हमें दिखता ही नहीं है कि वह बात कह दें। हिंदी वाला भीतर से इतना दीनहीन होता है कि अंग्रेजी वालों के सामने यह कहने की हिम्मत नहीं होती कि मुझे अंग्रेजी नहीं आती। मुझे अंग्रेजी नहीं चाहिए। हम सब अंग्रेजी वालों के सामने थोड़ा दीन हो जाते हैं। और अपने उस आत्मदैन्य को अपने अंदर ठूंसने की कोशिश करते हैं- फादर, सिस्टर, मदर बोलकर। यह कड़वी सच्चाई है। इसलिए मैं कहता हूं कि हिंदी का मध्यवर्ग ही उसका सबसे बड़ा गद्दार है। और आप मराठी में ऐसा नहीं पाएंगे, आप बांग्ला में ऐसा नहीं पाएंगे, आप तमिल में ऐसा नहीं पाएंगे, तेलुगू में नहीं पाएंगे, कन्नड़ में नहीं पाएंगे। हिंदी का जो इतना आत्मदैन्य है, आत्म लज्जित समाज है कि इसके आगे कुछ कहने की जरूरत नहीं है। अपनी आत्मलज्जा को छोड़कर उससे यानी अंग्रेजी से आंखें मिला सकते हैं तो उससे दूर हो सकते हैं, उससे आगे बढ़ सकते हैं बशर्ते कि इसके लिए हम तैयार हैं। बशर्ते हम हिंदी की जय जयकार में, जयगान में, पलायन न ढूंढ रहे हों। हिंदी की दिशा और दशा की यही कड़वी सच्चाई है। हमें निराश होने की जरूरत नहीं है। अभी हम सबके जीवन में हिंदी है। हम सब हिंदी के हैं। लेकिन यह सब केवल हमारी और आपकी पीढ़ी का मामला है। हिंदी और सारी भारतीय भाषाओं के पास दो पीढ़ियां बची हैं, हमारी पीढ़ी और हमारे बच्चों की पीढ़ी। क्योंकि जब तक उनके बच्चों की पीढ़ियां आएगीं तो वे चाहेंगे तो भी हिंदी तथा भारतीय भाषाओं को नहीं बचा पाएंगे। तो अपने घरों में, अपनी भाषा के बारे में क्या करना है, आपको बताने की जरूरत नहीं है। ताकि अपने बच्चों के मुंह से रंगों के नाम के रूप में नीला, पीला, गुलाबी निकले ना कि ब्लु, ऑरेंज। हमारे मुंह से सोमवार, मंगलवार निकलने लगे, भाई निकलने लगे, मां निकलने लगे, माता निकलने लगे, हमारी पत्नी, पिता तथा हमारे बच्चों के मुंह से निकलने लगे। इतना ही अगर सुनिश्चित कर ले तो एक कदम हम आगे बढ़ेंगे। उसके बाद जहां हमारे बच्चे विद्यालयों में पढ़ रहे हैं ,वहां जाकर मांग करें कि हमारे बच्चों की मातृभाषा में शिक्षा होनी चाहिए। यह मांग कर सकते हैं क्या। यदि मांग होने लगेगी तो सरकार तक यह बात पहुंचेगी। अभी जो नई शिक्षा नीति आई है, उसमें भाषा के बारे में पहली बार महत्त्व दिया है और उसमें साफ कहा गया है कि अंग्रेजी के सम्मोहन और अंग्रेजी के इस मूर्खतापूर्ण मांग के कारण भारतीय भाषाओं का भविष्य संकट में पड़ गया है। पहली बार एक सरकारी राष्ट्रीय दस्तावेज में कही गई है जिससे अंग्रेजी वाले बौखलाए हुए हैं।

इस बीच हम लोगों की गाड़ी गेस्ट हाउस के परिसर में प्रवेश करती है। शाम के सात बजने को हो आया है। इनकी ट्रेन का समय भी होने को है। उन्हें दिल्ली के लिए 'राजधानी' पकड़नी है। अतः बातचीत का सिलसिला यहीं स्वतः खत्म हो जाता है। गाड़ी रूकते ही वे सामान लेने के लिए गेस्ट हाउस के भीतर चल देते हैं। हमलोग गाड़ी में ही उनके लौटने का इंतजार करते हैं। इन्हें स्टेशन जो छोड़ने जाना है। लगभग पांच मिनट के बाद एक छोटा-सा ब्रीफकेस लेकर लौटते दिखाई देते हैं। हम लोगों को लेकर गाड़ी स्टेशन की ओर मुड़ जाती है।

साक्षात्कारकर्ता- डॉ. दीपक प्रकाश
पूर्व चिकित्सा अधीक्षक, केंद्रीय चिकित्सालय धनबाद

सामाजिक लेख

मुहूर्त नहीं कार्य होते हैं शुभ अथवा अशुभ

-सीताराम गुप्ता

यदि हम ध्यानपूर्वक देखें तो पता चलता है कि आज आधुनिक कहा जाने वाला समाज पहले से भी अधिक अंधविश्वासी हो गया है। जिधर देखो ज्योतिषियों अथवा भविष्यवक्ताओं की दुकानें सजी हैं। बहुत कम ऐसे समाचार पत्र हैं जिनमें दैनिक, साप्ताहिक अथवा मासिक भाग्यफल प्रकाशित न होता हो। दैवी कृपा बेचने और खरीदने के कारोबार ने न केवल अशिक्षित लोगों को अपने जाल में बुरी तरह से फंसा रखा है अपितु शिक्षित समाज भी इससे मुक्त नहीं रह गया है। इनके कारण हमारा वैज्ञानिक दृष्टिकोण विकसित ही नहीं हो पाता। गीता में निष्काम कर्म को महत्त्व दिया गया है। कर्म करो लेकिन फल की इच्छा मत करो। निष्काम कर्म का अर्थ ही है कि कार्य में सफलता आशातीत व असंदिग्ध होती है। लेकिन अधिकांश लोग कार्य में सफलता सुनिश्चित करने के लिए ये भी सुनिश्चित करने का प्रयास करते हैं कि कार्य को सही अथवा शुभ मुहूर्त में ही किया जाए क्योंकि उनके अनुसार शुभ मुहूर्त में किए गए कार्यों में ही अपेक्षित पूर्ण सफलता संभव है अन्यथा नहीं।

यात्रा पर जाना हो, प्रॉपर्टी खरीदनी हो, मकान बनवाना प्रारंभ करना हो, गृह प्रवेश करना हो अथवा विवाहादि अन्य कोई भी मांगलिक कार्य हो, लोग प्रायः शुभ मुहूर्त में ही ये कार्य सम्पन्न करते हैं। कुछ लोग इतने अधिक अंधविश्वासी हो चुके हैं कि वो चाहते हैं कि उनके बच्चे का जन्म भी तथाकथित शुभ मुहूर्त में ही हो। इसके लिए पहले तो वो ज्योतिषी आदि से पैदा होने वाले अपने बच्चे के पैदा होने के संभावित समय के आसपास के शुभ मुहूर्त पूछते हैं। फिर डॉक्टर से कह कर उसी शुभ मुहूर्त में बच्चे की डिलीवरी करवाने का प्रयास करते हैं। क्या नादानी है! नादानी ही नहीं निर्दयता व प्रकृति के विरुद्ध कार्य है और किसी भी क्षेत्र में प्रकृति के विरुद्ध जाने के भयंकर परिणाम निकलते हैं। एक बात सोचने की और है कि क्या तथाकथित शुभ मुहूर्त में कार्य अपने आप हो जाते हैं? क्या शुभ मुहूर्त में कार्य करके सफलता पाने के लिए पुरुषार्थ नहीं करना पड़ता? वास्तव में पुरुषार्थी व्यक्ति ही जीवन में अधिकाधिक सफलता प्राप्त करते हैं। शुभ मुहूर्त की प्रतीक्षा में बैठे रहने वाले या भाग्यवादी लोग नहीं।

किसी भी कार्य को करने के लिए शुभ मुहूर्त, शुभ घड़ी, शुभ दिन अथवा शुभ महीना कौन सा होगा, इसका पूरा शास्त्र हम लोगों ने रच डाला है, लेकिन देखने में ये भी आता है कि एक समय विशेष पर शुभ मुहूर्त में जहाँ अनेकानेक मांगलिक कार्य सम्पन्न हो रहे होते हैं वहीं उन्हीं क्षणों में दूसरी ओर रोग-शोक, मृत्यु, दुर्घटनाएँ, उत्पीड़न, शोषण आदि के असंख्य दृश्य भी सर्वत्र दिखलाई पड़ते हैं। किसी का जन्म हो रहा है तो कोई काल के गाल में समा रहा है। कहीं मंगल ध्वनि सुनाई पड़ रही है तो कहीं हृदयविदारक रुदन कानों के पर्दों से टकरा रहा है। कहीं परीक्षा परिणाम घोषित हो रहा है जिसमें कोई पास तो कोई फेल हो रहा है। ऐसी स्थिति में हम प्रायः कह देते हैं कि ये अपने-अपने कर्मों का फल है। जैसा कर्म वैसा परिणाम। ठीक है। जैसा कर्म वैसा परिणाम। यदि हर व्यक्ति को अपने कर्मों का फल भोगना ही है, कर्म के अनुसार परिणाम मिलना ही है तो फिर महत्त्व कर्म का हुआ या मुहूर्त का?

शुभ मुहूर्त वास्तव में है क्या? शुभ मुहूर्त वास्तव में कार्य को प्रारंभ करने का उचित समय है। यह समय प्रबंधन का ही एक स्वरूप है ताकि कार्य समय पर सम्पन्न हो सके और निर्विघ्न रूप से सम्पन्न हो सके। हमारे संसाधन और प्रयास निरर्थक न हो जाएँ। एक समय था जब हमारे पास उतने साधन नहीं थे जितने आज हैं। पहले सड़कें नहीं थीं, यातायात के साधन नहीं थे। अतः लोग पैदल ही आते जाते थे। बरसात के दिनों में तो पैदल आना-जाना भी दुष्कर हो जाता था। ऐसे में बरसात के दिनों में किसी भी कार्य को करने का निषेध था ताकि मौसम संबंधी परेशानियों व अव्यवस्था से बचा जा सके। पहले बिजली नहीं थी। अतः दिन की रोशनी में ही सारे कार्य करने होते थे। कहीं जाना होता तो सुबह जल्दी उठ कर चल पड़ते थे ताकि पहुँचने और वापस आने में रात न हो जाए। आज भी दोपहर से पूर्व या सूर्यास्त से पहले का समय शुभ माना जाता है और इसके मूल में है सामान्य बुद्धि और व्यावहारिकता।

अब जीवन के दूसरे महत्त्वपूर्ण पक्ष को भी देखिए। आपका किसी महत्त्वपूर्ण या मनचाहे कोर्स में प्रवेश हो जाता है अथवा नौकरी मिल जाती है तो आपको एक निर्दिष्ट समय पर ही जाना पड़ता है अन्यथा आपका प्रवेश या नौकरी रद्द कर दी जाती है। क्या ऐसी स्थितियों में भी आप शुभ मुहूर्त के चक्कर में पड़ेंगे? शायद नहीं। बिल्कुल भी नहीं। हम जानते हैं कि यदि ये अवसर हाथ से निकल गया तो दोबारा नहीं मिलने वाला। हम तत्क्षण अपेक्षित दिशा में आगे बढ़ने का निर्णय लेते हैं। प्रायः यही पढ़ाई अथवा नौकरी हमारे जीवन में सुख-समृद्धि लाती है तथा हमारे जीवन को अर्थ व गुणवत्ता प्रदान करने में सहायक व सक्षम होती है। यहाँ अवसर

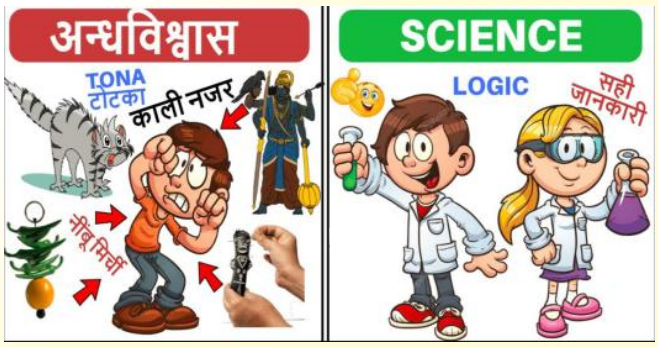

महत्त्वपूर्ण हो जाता है न कि कोई मुहूर्त विशेष। **"यदि हम ध्यानपूर्वक देखें या चिंतन करें तो ज्ञात होता है कि मुहूर्त शुभ या अशुभ नहीं होता शुभ या अशुभ होता है कार्य।"** वास्तव में उपयोगी अवसर की प्राप्ति या महत्त्वपूर्ण कार्य के प्रारंभ के कारण ही कोई समय विशेष या दिन विशेष हमारे लिए यादगार बन जाता है, शुभ हो जाता है, शुभ मुहूर्त के कारण नहीं। यही कारण है कि हम अपना जन्म दिन, किसी महत्त्वपूर्ण पाठ्यक्रम में प्रवेश का दिन, नौकरी शुरू करने का दिन व विवाहादि का दिन कभी नहीं भूलते। उनकी वर्षगाँठ मनाकर उसे हमेशा याद रखने का प्रयास करते हैं। किसी भी वर्षगाँठ या एनिवर्सरी को मनाने के लिए तो कभी भी शुभ मुहूर्त नहीं देखा जाता। जब हम इस संसार में आते हैं तो क्या शुभ मुहूर्त देखकर आते हैं? जब कोई व्यक्ति बीमार होता है या कोई आसन्नप्रसवा प्रसव पीड़ा के कारण छटपटा रही होती है तो क्या शुभ मुहूर्त देखकर ही उन्हें अस्पताल या लेबर रूम में ले जाया जाता है? नहीं न। तो फिर अन्य कार्यों के लिए शुभ मुहूर्त रूपी इस निरर्थक नाटकबाज़ी की क्या ज़रूरत है?

"यदि हम ध्यानपूर्वक देखें या चिंतन करें तो ज्ञात होता है कि मुहूर्त शुभ या अशुभ नहीं होता शुभ या अशुभ होता है कार्य।"

यदि हम ध्यानपूर्वक देखें या चिंतन करें तो ज्ञात होता है कि मुहूर्त शुभ या अशुभ नहीं होता शुभ या अशुभ होता है कार्य। जिसका परिणाम शुभ वही कार्य शुभ और जिसका परिणाम भयंकर होने की प्रबल संभावना हो वही अशुभ है। हमारे लिए श्रेयस्कर यही होगा कि हमें पता चल जाए कि कौन से कार्य शुभ हैं और कौन से अशुभ। संस्कृत में एक सूक्ति है कि ***शुभस्य शीघ्रम्, अशुभस्य कालहरणम्*** अर्थात् शुभ कार्य को जितना जल्दी हो सके कर डालें लेकिन अशुभ कार्य को निरंतर टालते रहें। शुभस्य शीघ्रम् अर्थात् शुभ अथवा पुण्य कार्य को शीघ्र करें। यदि हम उस क्षण को चूक गए तो हम किसी नेक काम अथवा पुण्य से वंचित अवश्य रह जाएँगे। किसी का धन्यवाद करना है तो क्या किसी मुहूर्त अथवा उचित अवसर की प्रतीक्षा करना उचित होगा? कदापि नहीं। किसी को पुरस्कृत करना है अथवा किसी का धन्यवाद करना है तो शीघ्रता करें।

साथ ही कहा गया है कि अशुभस्य कालहरणम् अर्थात् अशुभ अथवा पाप कर्म के लिए शीघ्रता न करें अपितु समय गुज़र जाने दें। अशुभ कार्य को करने में कभी भी शीघ्रता मत कीजिए। उन्हें यथासंभव टाल दीजिए। संभव है कालांतर में कहीं से ऐसी सद्बुद्धि मिल जाए कि पाप कर्म से विरत हो जाएँ, उससे बच जाएँ। आज इस विश्व में इतने आणविक, परमाणविक व अन्य अस्त्र-शस्त्र उपलब्ध हैं जिनसे इस ख़ूबसूरत दुनिया को इसके संपूर्ण जीव जगत सहित अनेकानेक बार पूर्णतः नष्ट-ध्वस्त किया जा सकता है लेकिन कुछ अच्छे व समझदार लोगों की अशुभस्य कालहरणम् नीति व दृष्टि के कारण ही हम जीवित है। अशुभ कार्य को यथासंभव टाल दीजिए। क्या किसी भी शुभ कार्य को करने की तरह ही अशुभ कार्य को न करने का मुहूर्त भी निकाला जाता है? नहीं। संभव ही नहीं है। समझदारी और विवेक से काम लेने की ज़रूरत है। समझदारी और विवेक से कोई भी समय शुभ समय हो जाएगा जबकि इसके अभाव में किसी भी घड़ी को अशुभ होते देर नहीं लगती। यही समझदारी शुभ मुहूर्त है। सही मुहूर्त नहीं सही और उपयोगी कार्य का चुनाव कर उसे पूरा करना अपेक्षित है अन्य कुछ भी नहीं।

कई बार हम किसी अत्यंत महत्त्वपूर्ण कार्य में लगे होते हैं और किसी भी क़ीमत पर उसे पूरा किए बिना नहीं छोड़ना चाहते लेकिन इसी दौरान विषम परिस्थितियाँ उत्पन्न होकर हमारे काम को बाधित कर देती हैं। मान लीजिए किसी शुभ मुहूर्त में आप कोई अनुष्ठान या आयोजन करवा रहे हैं और उसे उसी शुभ मुहूर्त में ही पूरा होना चाहिए। ऐसे समय पर यदि दुर्भाग्य से आपका बच्चा सीढ़ियों से गिर जाता है और उसे गंभीर चोट लग जाती है तो क्या इस स्थिति में आप शुभ मुहूर्त में हो रहे कार्य को पहले पूरा होने देंगे या बच्चे को डॉक्टर के पास या अस्पताल लेकर जाएँगे? यदि हम महत्त्वपूर्ण कार्य के बजाय अर्जेंट कार्य पहले और फ़ौरन नहीं करेंगे तो शुभ मुहूर्त के अशुभ में बदलते देर नहीं लगेगी। यदि बाढ़, भूकंप अथवा दुर्घटना जैसी कोई प्राकृतिक आपदा आती है तो सरकार ही नहीं लोग भी शुभ मुहूर्त देखने की बजाय फौरन बचाव व राहत कार्यों में जुट जाते हैं।

जब हमारे पास अवसर होते हैं, योजनाएँ होती हैं तभी उनके क्रियान्वयन के लिए उचित समय या शुभ मुहूर्त तलाशते हैं न कि शुभ मुहूर्त में बैठकर अवसर की प्रतीक्षा करते हैं। शुभ मुहूर्त के कारण जीवन में कभी भी महत्त्वपूर्ण कार्य करने के अवसर नहीं मिलते। हमारा विवेक, हमारी सही समय पर सही निर्णय लेने की क्षमता, हमारा सामान्य ज्ञान व हमारी व्यावहारिक बुद्धि आदि ऐसे तत्त्व हैं जो किसी भी क्षण को शुभ अर्थात् उपयोगी बनाने में सक्षम हैं। शुभ मुहूर्त की तलाश छोड़ कर शुभ, उपयोगी व सकारात्मक कार्यों के चयन व उपलब्ध उपयोगी अवसरों के क्रियान्वयन में हम जितनी शीघ्रता कर सकें उतना ही हमारे लिए श्रेयस्कर होगा। शुभ मुहूर्त के चक्कर में हम कई बार कोई बड़ा कार्य करने से चूक जाते हैं और बहुत बड़ा नुकसान कर बैठते हैं। समझदारी से हर उपलब्ध क्षण को अधिकाधिक आनंददायक, उपयोगी व लाभप्रद बनाया जा सकता है।

ए डी-106-सी, पीतमपुरा,
दिल्ली-110034

व्यंग्य

किताबों की अंतिम यात्रा

-डॉ. सुरेश कुमार मिश्रा 'उरतृप्त'

फटी, पुरानी, रद्दी अब यही मेरे नाम रह गए हैं। किसी लेखक के पुस्तक विमोचन स्थल से जब मैं पहली बार इस लेखक के घर पर आयी थी, उनका मेरा प्रति स्नेह छिपाये नहीं छिपता था। कभी वे मुझे अपनी अंगुलियों से सहलाते तो कभी थूक की नरमी से मेरे पन्ने पलटते। अब वह बात नहीं रही। घर में प्रवेश करने के कुछ दिन तक मैं उनके हॉल की शोभा बनी रही। चूँकि हॉल में रखी शीशे की अलमारी में जगह सीमित थी, सो वहाँ मुझे अधिक दिन तक रहने का सुख नहीं मिला। जल्द मुझे वहाँ से घसीट बाहर किया गया। कुछ दिन तक घर की अलग-अलग मेजों पर मैंने अपना आसन जमाया। कहते हैं जब जिंदगी घुमक्कड़ बन जाती है तब अपने अस्तित्व को बनाए रखने के लिए किसी न किसी तरह मौजूदगी दर्ज करानी पड़ती है। मैं आकार में थोड़ी मोटी थी। मेरा जिल्द रूपी लिबास मजबूत होने के कारण मैं बहुत सारे काम कर लेती थी। मसलन लेखक या उनकी पत्नी, बच्चे चाय, कॉफी या दूध का कप मेरी पीठ पर रख देते थे। इससे मेरे बदन पर गोल-गोल निशान पड़ जाते थे। मैं पढ़ने में उपयोगी थी या नहीं यह तो लेखक ही बता सकते थे, लेकिन मैं मच्छर, झींगूर, कीड़े-मकोड़े मारने के एकदम योग्य थी। मेरे अंग-अंग पर उन कीटों के खून के निशान चीख-चीखकर गवाही देते थे। कई बार रद्दी खरीदने वाले के हाथों लेखक की पत्नी मुझे बेचने की कोशिश करती थी। वो तो लेखक थे, जो मुझे एक से दो बार उलट-पुलटकर देखते और फिर से स्टोर रूम में रख देते थे।

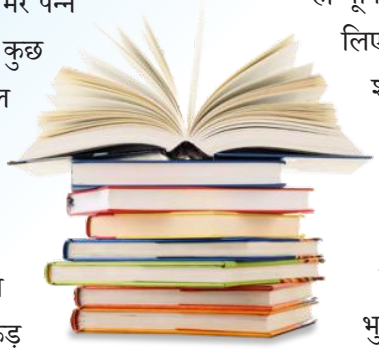

यह दीन गाथा केवल मुझ जैसी एक किताब का नहीं स्टोर रूप में पड़ी कई किताबों का था। अक्सर हम सब मिलकर आपस में बात भी करते थे। हम अपने इस दुर्भाग्य पर रोते कि हमें हॉल में रखी शीशे वाली अलमारी में जगह क्यों नहीं मिलती। इसका भी एक दिन पर्दाफाश हो गया। स्टोर रूम में पड़ी एक दुबली-पतली, जिसकी जिल्द फट चुकी थी और अपने जीवन की अंतिम सांसे गिन रही थी, ने बताया – "एक दिन हॉल में मेरे सामने ही लेखक किसी से बात कर रहे थे। सामने वाले ने जब लेखक से पूछा कि आप इतनी सारी पुस्तकें उठा लाते हैं, उन्हें रखते कहाँ है? आपकी विद्वत्ता को भला यह अलमारी क्या संभाल पाएगी?" तो लेखक मुस्कुराते हुए प्रत्युत्तर में कहते हैं – "आप ठीक कहते हैं। अब देखिए न जहाँ कहीं भी चला जाता हूँ कोई न कोई मुझे पुस्तक थमा देता है। कोई समीक्षा लिखने के बहाने थमा देता है तो कोई सैंपल के रूप में। अब मैं आपको क्या बताऊँ किसी को न नहीं कह सकता। इसलिए सबकी किताबें उठा लाता हूँ। घर लाने पर श्रीमती जी की डाँट अलग से खानी पड़ती है। इन किताबों के चलते यह घर, घर नहीं रद्दीखाने सा लगने लगा है। चूँकि सभी किताबें अलमारी में रखी नहीं जा सकती, इसके लिए मैंने बीच का रास्ता अपनाया है। अलमारी में उपयोगी शब्दकोश और मेरी लिखी किताबों के अतिरिक्त शेष सभी किताबों को स्टोर रूम में रख दिया है (फेंक दिया है)। जब आवश्यकता पड़ती है तब ढूँढ़कर निकाल लेता हूँ।" इतना सुनना था कि स्टोर रूम मे पड़ी हम सभी किताबों का घमंड चकनाचूर हो गया। हम इस भुलावे में थे कि लेखक हमसे प्यार करते हैं। वह तो अब जाकर पता चला कि वे हमें मजबूरी में ढो रहे थे।

एक दिन हमारे बीच लेखक का फोन आ बैठा। हमने उससे पूछा कि कहीं तुम भी बेकार तो नहीं हो गए, तो इस पर उसने कहा- "मैं भला बेकार कैसे हो सकता हूँ। लेखक तो मुझे अपनी पत्नी-बच्चों से भी अधिक प्रेम करते हैं। जितना समय मुझ पर बिताते हैं, उतना समय किसी को नहीं देते। वह तो लेखक की लड़की ने उनसे मजाक करने के लिए मुझे यहाँ छिपा रखा है। वरना तुम्हारी इतनी हैसियत कि मेरी बराबरी कर सको। एक बात और, आजकल वे सब कुछ पढ़ने लिखने का काम मुझी पर करते हैं। पहले कभी भूल से स्टोर रूप में तुम्हारी जरूरत समझकर क़दम रख देते थे, अब तुम्हारी खैर नहीं। अभी कुछ देर पहले ही उनकी रद्दीवाले से मुझ पर बात हुई थी। वह रास्ते में ही होगा। अब इस स्टोर रूम में तुम्हारा कोई काम नहीं है। आज से तुम सबकी छुट्टी"

इतना सुनना था कि हमारा कलेजा बैठ गया। हमें रद्दीवाले से बहुत डर लगता था। वह हमारी नजर में किसी कसाई से से कम नहीं था। जिस तरह कसाई जीव का गला काटकर उसके अंग छिन्न-भिन्न कर देता है, ठीक उसी तरह रद्दीवाला हमें थोक के भाव में खरीदकर हमारी जिल्द और पन्नों के साथ उपर्युक्त व्यवहार करेगा। चूँकि अब यह हमारी अंतिम यात्रा है, तो हम भगवान से केवल इतनी प्रार्थना करते हैं कि हमें अगले जन्म में कुछ भी बना दे, लेकिन किताब हरगिज न बनाएं।

सरकारी पाठ्यपुस्तक लेखक,

तेलंगाना सरकार

कहानी

साइबर ठग

-रोशन कुमार सिंह

'पापा आज तो आपकी हमेशा के लिए छुट्टी हो जाएगी' रामधनी की बेटी बड़े ही चंचल स्वभाव और प्रसन्न भाव से अपने पिता से पूछती है। 'अरे पागल मेरी छुट्टी थोड़े हो रही है, मैं तो आज अपनी कंपनी की सेवा से सेवानिवृत्त हो रहा हूँ और सुन राधा बेटी आज मेरे लिए अच्छा सा व्यंजन बनाने के लिए मां को बोल, आज मेरा कंपनी कार्यालय में आखिरी लंच है' रामधनी अपनी बेटी से कहता है। उधर इतना कहते ही उसकी पत्नी शारदा रसोई से बाहर निकलते ही कहती है 'हां..... हां..... मैंने पहले ही आपके लिए आपकी पसंदीदा गुड़ वाली खीर, आटे की कचैरियाँ और आलू गोभी की सब्जी बना रखी है, अब आप जाइए स्नान-ध्यान कर नाश्ता करने की तैयारी कीजिए।' उधर रामधनी तरोताजा होने के लिए जैसे ही कुर्सी से उठता है राधा पूछती हैं 'पापा अब तो रोज आप घर पर ही रहोगे, तो घर पर रहकर फिर क्या करोगे।'

रामधनी लंबी सांस भरते हुए 'अरे करूंगा क्या, आजादी थोड़े मिलने वाली है, अपनी इकलौती बेटी की शादी भी तो करनी है। उसके बाद कंपनी क्वार्टर छोड़ एक अच्छा सा घर भी तो बनाना है अपने गांव में, लेकिन उसके पहले मुझे अपने जीवन भर की कमाई पी0एफ0 और ग्रेच्युटी के लिए कार्यालय में आवेदन देना है....खैर यह सब तो आज के बाद ही होगा, चल अब मुझे जाने दे मेरा दिमाग मत खा....ड्यूटी जाने में देर हो जाएगी।' इतना कहकर रामधनी कुर्सी से उठने लगता है कि राधा पुनः हाथ पकड़कर रामधनी को कुर्सी पर बैठा देती है और नाराज स्वर में कहती है 'पापा आप हर वक्त मेरी शादी की चिंता क्यों करते हो? क्या मैं आपके सिर का बोझ हूं? अभी तो मैंने ग्रेजुएशन ही की है अभी तो मुझे और पढ़ना है उसके बाद एक अच्छा सी नौकरी भी तो करनी है। जब तक आपने नौकरी की आप तनाव में रहे और अब जब सेवानिवृत्त होने जा रहे हैं तब भी चिंता ही चिंता है। पापा यह सब नहीं चलेगा, आप आज के बाद रोज सुबह उठकर मॉर्निंग वॉक पर जाएंगे वो भी मुझे लेकर, उसके बाद समय से नाश्ता, समय से खाना फिर शाम को घूमना और शाम को सिनेमा हॉल में कभी-कभार एक-दो फिल्में भी देखना' इतना राधा का कहना था कि रामधनी उबते हुए कहता है- 'चल हट पगली बकबक करते रहती है, मुझे देर हो जाएगी....सुनती हो शारदा मैं जा रहा हूं स्नान करने, नाश्ता परोसने की तैयारी करो मैं 15 मिनट में स्नान कर आता हूं।' इतना कहकर रामधनी स्नान करने चला जाता है

रामधनी अपने कर्तव्य के प्रति सदैव वफादार रहा, देर से ड्यूटी पर पहुंचना उसे कतई पसंद नहीं था। उसका बस छोटा सा ही परिवार था पति, पत्नी और इकलौती बेटी राधा। उसी की शादी की चिंता रामधनी को खाए जा रही थी।

60 वर्ष की दहलीज को पार कर रामधनी अब सेवानिवृत्त हो चुका है। सेवानिवृत्ति उपरांत तमाम लाभों का भुगतान उसके खाते में कंपनी द्वारा किया जा चुका है। पेंशन भी अगले महीने से उसके खाते में आनी शुरु हो जाएगी, लेकिन अपने जीवन की दूसरी पारी की शुरुआत करने वाला रामधनी आराम से दूर अपनी जिम्मेदारियों से बंधा हुआ है या यूं कहें उसका पीछा नहीं छोड़ रहा है। उम्र के इस पड़ाव में कमोबेश सभी

अभिभावकों का यही हाल रहता है। सारी सुख-सुविधा धन दौलत रहते भर मनोरंजन कहीं खो सा जाता है और मरते दम तक परिवार के प्रति जिम्मेवारी बनी रहती है, एक सुरक्षा की चिंता बनी रहती है।

'आज लड़के वाले घर आ रहे हैं सुनती हो शारदा..... बड़ा अच्छा लड़का है, सरकारी बैंक में अधिकारी है। बस राधा को बोल दो, वे लोग सुबह 11:00 बजे तक आ जाएंगे, जरा समय पर तैयार हो जाएगी क्योंकि वह किसी भी काम में समय बड़ा लगाती है। किसी तरह रिश्ता पक्का हो जाए तो सर का बोझ हल्का हो।' रामधनी भावुक मुद्रा में अपनी पत्नी को बोलता है। इतना सुनते ही राधा तेज कदमों से अपने कमरे से बाहर आकर गुस्साते हुए बोलती है- 'सुनती हो मां.... पापा ने आज फिर मुझे सिर का बोझ कहा, जाओ मुझे शादी नहीं करनी।' इतना सुनते ही मां उसके नजदीक आकर माथे पर हाथ रखकर बड़े प्रेम से समझाती है- 'अरे वो तो उनका तकिया कलाम है उनकी बातों पर मत जा, मैं तुम्हें कहां छोड़ने वाली हूं और लड़का भी तो इसी शहर में नौकरी करता है। यदि शादी पक्की हो गई तो जब तेरा मन करे आती रहना, तुम्हारे जाने के बाद हम भी तो अकेले ही हो जाएंगे। मैं क्या कहती हूं राधा के पापा.... रिश्ता अगर पक्का हो जाए तो दामाद जी को भी बोलिएगा हमारे पास ही रहने के लिए।' इतना सुनते ही रामधनी थोड़ा क्रोध में कहता है 'यह क्या बोल रही हो शारदा, भला ऐसा कौन करता है? अब सभी स्वाभिमानी होते हैं और होना भी चाहिए और उनके माता-पिता पिता भी तो हैं, अरे हम लोग का क्या जैसे ऊपर वाला रखेंगे वैसे ही रह लेंगे।' रामधनी के स्वाभिमान झलकते शब्दों को सुनने के बाद सभी अपने कामों में लग जाते हैं।

रामधनी बड़ा भाग्यशाली निकला पहली बार में ही रिश्ता पक्का हो गया लेकिन एक अच्छे खासे दहेज के साथ जो आज भी हमारे समाज में कहीं न कहीं एक विषैले सांप की तरह कुंडली मार कर बैठा हुआ है किसी को डसने के लिए। रामधनी भी अच्छा रिश्ता को छोड़ना नहीं चाह रहा था इसलिए उसने भी लड़के वाले की मांग पर शत-प्रतिशत हामी भर दी जबकि उसकी इस शादी से उसके खाते से दो तिहाई पैसे खर्च हो जाने थे। परंतु एक पिता को इसकी परवाह भला कहां है, उसे तो बस

बिटिया घर से खुशी-खुशी विदा हो जाए, सुख-चैन से उसकी जिंदगी गुजरे और एक अच्छा परिवार मिले यही उसकी हार्दिक इच्छा थी। बहरहाल रामधनी को तो जैसे पंख लग गए हो इतना अच्छा रिश्ता पाकर परंतु अचानक एक घटना ने उसके सारे पंख कुतर डाले।

विवाह की तारीख पक्की हो गई थी विवाह में कुछ ही दिन बचे थे, दान-दहेज विवाह में ही देने की बात तय हुई थी। रामधनी भी आजकल में तैयारी में लग जाने वाला था। उसके पहले एक दिन रामधनी अपने कमरे में खाली समय में अपने बरामदे में कुर्सी पर बैठ किताबें पढ़ रहा था। उसकी पत्नी शारदा किसी पड़ोस के यहाँ कुछ काम से गई हुई थी और राधा भी कॉलेज के काम से बाहर ही थी। तभी रामधनी के मोबाइल पर एक कॉल आता है दूसरी तरफ से पुरुष की आवाज में कोई फोन कर कहता है- 'क्या हमारी बात मिस्टर रामधनी शुक्ला से हो रही है? रामधनी जवाब देता है जी! मैं रामधनी बोल रहा हूं। तत्पश्चात फोन से अंजान व्यक्ति सूचित करता है 'मैं आपके बैंक का शाखा प्रबंधक बोल रहा हूं, ध्यान से सुनिएगा आपके लिए एक बुरी खबर है। इतना सुनते ही रामधनी खड़े होकर व्याकुल, असहज और घबराते हुए पूछ बैठता है। क्या बात है सर? क्या हुआ कुछ बताइए तो सही' दूसरी तरफ से आवाज आती है 'देखिए घबराइए नहीं हम पूरी कोशिश कर रहे हैं, रिकवर करने की' रामधनी पुनः बेचैन अवस्था में पूछता है 'अरे सर! कुछ बताइए तो सही क्या हुआ है? क्या रिकवरी करनी है?' दूसरी तरफ से आवाज आती है देखिए आज आपके खाते से साइबर ठगों ने 12 लाख की राशि अवैध रूप से निकासी कर ली है, अभी हम उसकी जांच कर रहे हैं लेकिन उसके लिए हमें आपकी सहायता की जरूरत है'। इतना सुनते ही भरे गले से रामधनी कहता है 'पर सर इस संबंध में मेरे मोबाईल पर तो किसी प्रकार का संदेश तो नहीं आया है। यदि निकासी होती तो संदेश जरूर आता।' दूसरी तरफ से कहा जाता है कि देखिए यह अलग तरह का मामला प्रकाश में आया है, पहली बार ऐसा हुआ है कि बगैर मैसेज और ओ0टी0पी0 के पैसा निकाल लिया गया है। देखिए देर मत कीजिए जैसा मैं कहता हूँ आप वैसा करें तभी हम आपके पैसे को रिकवर कर पायेंगे अन्यथा बहुत देर हो जाएगी।' रामधनी निराश होकर कहता है 'बताइए न सर मुझे क्या करना होगा?' दूसरी तरफ से आवाज आती है 'कुछ नहीं हम आपके खाते को कुछ समय के लिए सील करना चाहते हैं ताकि ठग और भी राशि की निकासी न कर पाए। उसके लिए हम आपके मोबाइल पर एक मैसेज भेजेंगे, जिसमें 4 अंको का ओ0टी0पी0 रहेगा कृपया कर जल्द से जल्द हमें बताइएगा ताकि हम उतनी ही जल्दी आपके खाते को सील कर सके और आपका पैसा बच जाए।' रामधनी बिल्कुल विचलित हो गया था बोला 'सर जो भेजना है भेजिए मैं आपका साथ देने के लिए तैयार हूं बस मेरे पैसे बच जाने चाहिए।' उधर से आवाज आती है 'डोंट वरी मैसेज मैंने भेज दिया है, कृपया चार अंको का ओटीपी बताइए।' रामधनी ने ओ0टी0पी0 बता दिया। उसके बाद जो हुआ रामधनी के पैरों तले जमीन खिसक गई। कुछ क्षणों बाद एक मैसेज आता है जिसे पढ़ने के पश्चात यह स्पष्ट हो जाता है कि उसके खाते से एकमुश्त अच्छी खासी रकम निकाल ली गई है। अब रामधनी को समझते देर न लगी कि पहले उसका पैसा नहीं निकला था बल्कि अभी जिसने कॉल किया था असल में वह साइबर ठग था। रामधनी असहज अवस्था में कुर्सी पर गिर पड़ता है। उसे अपनी गलती का एहसास हो चुका होता है उसे अब सारे सपने, सारा भविष्य अंधकारमय नजर आने लगता है। सोचता है कि अब जीवन कैसे गुजरेगा? बिटिया की शादी कैसे होगी? गांव में घर कैसे बनेगा? अनेकों प्रश्न उसके दिमाग में कौंधने लगते हैं। वह मान लेता है कि उसे अब पैसे वापस मिलने वाले नहीं हैं। कुछ समय पश्चात उसकी पत्नी और बेटी घर पर आते हैं। रामधनी अपने साथ हुए सारी घटनाओं का वर्णन कर अपनी पत्नी को अवगत कराता है। रामधनी के बातों को सुनकर सभी बेचैन और काफी परेशान हो उठते हैं। रामधनी की आंखों से आंसू रुकने का नाम नहीं ले रहे थे फिर राधा पापा के आँसु पोछते हुए दृढ़तापूर्वक कहती है 'पापा हाथ पर हाथ रखकर बैठने से कुछ नहीं होगा, हमें तत्काल बैंक जाना होगा और साइबर थाना भी। हो सके हमारी समस्या का समाधान निकल जाए और कुछ दिन बाद ही सही हमारे पैसे वापस मिल जाएं। बेटी के इस बात पर रामधनी को उम्मीद की किरण दिखी। फिर सभी दुखी और व्यथित मन से ठग पर करवाई हेतु बैंक और थाने चले गए।

पर प्रश्न यह उठता है कि क्या वह सिर्फ साइबर ठग था या साइबर हत्यारा? क्या उन्हें साइबर ठग से ही सिर्फ संबोधित करना चाहिए? हमें हृदयतल से सोचना होगा उसने सिर्फ पैसे ही नहीं ठगे, उसने तो किसी के सपने भी ठग लिए। किसी के भविष्य का गला दबा दिया, उसने तो किसी के शुरू होने वाले जिंदगी को फांसी दे दी, उसने तो किसी की खुशियों को चौखट पर रखकर बलि दे दी, उसने तो एक हंसते खेलते हुए परिवार को बर्बाद कर रख दिया। क्या अभी भी क्या उसे सिर्फ ठग कहना उचित है? हमारी न्याय-व्यवस्था इतनी उदार कैसे है? इन ठगों पर हमारा प्रशासन लगाम क्यों नहीं लगा पा रहा है? क्यों नहीं कानून में इनके खिलाफ और कड़ी से कड़ी सजा का प्रावधान किया जाए? आखिर कब तक ऐसे ही हंसते-खेलते परिवार बिखरते रहेंगे? कब तक उनके सपनों का खून होता रहेगा?

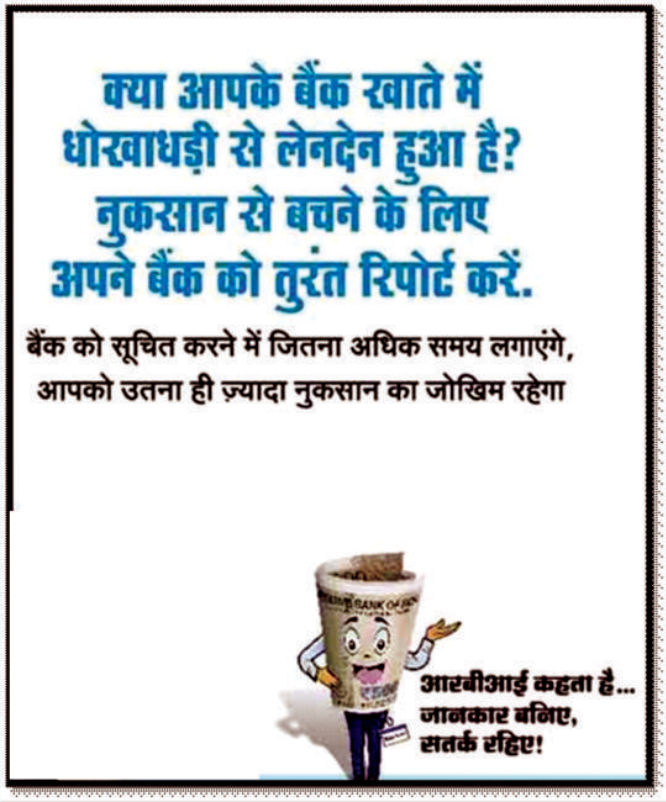

हमने बात की पुलिस प्रशासन और न्याय-व्यवस्था की, परंतु आज तेजी से पैर पसार रहे साइबर ठगी के समय में हम आम नागरिकों को भी सजग, सावधान और जागरूक रहना होगा इन ठगों से, तभी हमारी जमापूँजी सुरक्षित रहेगी। इस संबंध में आर0 बी0 आई0 ने कुछ सुझाव दिए हैं जिसे हम आत्मसात कर इन ठगों से बच सकते हैं जैसेः-

1. अपना एटीएम पासवर्ड, ओटीपी किसी से भी साझा न करें चाहे वो बैंक अधिकारी ही क्यों न हो।
2. खाते से पंजीकृत मोबाईल नं.किसी के संग साझा न करें।
3. फोन में पर आये इनाम संबंधी मैसेज पर ध्यान न दें, न ही उसके दिये किसी नम्बर या लिंक पर क्लिक करें|
4. अनचाहे ई-मेल और अनजान कॉल से सावधान रहें।

सामान्य मजदूर, कार्मिक विभाग

सिजुआ क्षेत्रीय कार्यालय

अंतरराष्ट्रीय अनुवाद दिवस

आज के दौर में अनुवाद हमारे जीवन का एक महत्त्वपूर्ण कारक बन चुका है। अनुवाद के जरिए हम किसी भी देश की भाषा को समझ और जान सकते हैं। अनुवाद इसलिए जरूरी है, क्योंकि हम सभी को हर भाषा का ज्ञान हो ऐसा संभव नहीं, लेकिन अनुवाद के जरिए हम हर भाषा को आसानी से और अपनी भाषा में समझ सकते हैं। अंतरराष्ट्रीय अनुवाद दिवस (International Translation Day 2020) हर साल 30 सितंबर को मनाया जाता है।

अंतरराष्ट्रीय अनुवाद दिवस (International Translation Day 2020) हर साल 30 सितंबर को सेंट जेरोम (St. Jerome) के पर्व पर मनाया जाता है, जो बाइबल अनुवादक(Translator) हैं, जिन्हें अनुवादकों के संरक्षक संत के रूप में जाना जाता है। दुनिया भर में अनुवाद समुदाय की एकजुटता दिखाने के लिए एफआईटी द्वारा एक अनुमोदित मान्यता प्राप्त अंतरराष्ट्रीय अनुवाद दिवस का उद्देश्य साल 1991 में शुरू किया गया था। इंटरनेशनल फेडरेशन ऑफ ट्रांसलेटर्स (FIT) की स्थापना 1953 में हुई थी। साल 1991 में FIT ने पूरी दुनिया में अनुवाद समुदाय की पहचान को बढ़ावा देने के लिए अंतरराष्ट्रीय अनुवाद दिवस मनाने की शुरुआत की थी। 24 मई 2017 को, संयुक्त राष्ट्र महासभा (United Nations General Assembly) ने 30 सितंबर को अंतरराष्ट्रीय अनुवाद दिवस के रूप में घोषित करते हुए एक प्रस्ताव पारित किया। अंतरराष्ट्रीय अनुवाद दिवस का महत्त्व एक दूसरे से जुड़ने वाले राष्ट्रों में पेशेवर अनुवाद की भूमिका को पहचानना और उसकी सराहना करना है। यह दिन दुनिया भर में अनुवाद समुदाय के लिए एकजुटता प्रदर्शित करने के लिए मनाया जाता है। यह विभिन्न देशों में अनुवाद के पेशे को बढ़ावा देने की एक कोशिश है और जरूरी नहीं कि यह केवल ईसाई देशों के लिए ही है। आज प्रगतिशील वैश्वीकरण के युग में अनुवाद विश्वभर के सभी देशों के लिए एक अनिवार्य आवश्यकता है।

रोचक जानकारी

क्या आप जानते है विश्व की सबसे ज्यादा समृद्ध भाषा कौन सी है.....

प्रस्तुति: के. एम. तिवारी

अंग्रेजी में 'THE QUICK BROWN FOX JUMPS OVER A LAZY DOG' एक प्रसिद्ध वाक्य है। जिसमें अंग्रेजी वर्णमाला के सभी अक्षर समाहित कर लिए गए, मज़ेदार बात यह है की अंग्रेज़ी वर्णमाला में कुल 26 अक्षर ही उपलब्ध हैं जबकि इस वाक्य में 33 अक्षरों का प्रयोग किया गया जिसमे चार बार O और A, E, U तथा R अक्षर का प्रयोग क्रमशः 2 बार किया गया है। इसके अलावा इस वाक्य में अक्षरों का क्रम भी सही नहीं है। जहां वाक्य T से शुरु होता है वहीं G से खत्म हो रहा है।

अब ज़रा संस्कृत के इस श्लोक को पढिये।-

क:खगीघाङ्चिच्छौजाझाञ्ज्ञोSटौठीडढण:।
तथोदधीन पफर्बाभीर्मयोSरिल्वाशिषां सह।।

अर्थात: पक्षियों का प्रेम, शुद्ध बुद्धि का, दूसरे का बल अपहरण करने में पारंगत, शत्रु-संहारकों में अग्रणी, मन से निश्चल तथा निडर और महासागर का सर्जन करनार कौन? राजा मय! जिसको शत्रुओं के भी आशीर्वाद मिले हैं।

श्लोक को ध्यान से पढ़ने पर आप पाते हैं कि संस्कृत वर्णमाला के सभी 33 व्यंजन इस श्लोक में दिखाये दे रहे हैं वो भी क्रमानुसार। यह खूबसूरती केवल और केवल संस्कृत जैसी समृद्ध भाषा में ही देखने को मिल सकती है!

पूरे विश्व में केवल एक संस्कृत ही ऐसी भाषा है जिसमें केवल एक अक्षर से ही पूरा वाक्य लिखा जा सकता है, किरातार्जुनीयम् काव्य संग्रह में केवल "न" व्यंजन से अद्भुत श्लोक बनाया है और गजब का कौशल्य प्रयोग करके भारवि नामक महाकवि ने थोड़े में बहुत कहा है-

न नोननुन्नो नुन्नोनो नाना नानानना ननु।
नुन्नोऽनुन्नो ननुन्नेनो नानेना नुन्ननुन्ननुत्॥

अर्थात: जो मनुष्य युद्ध में अपने से दुर्बल मनुष्य के हाथों घायल हुआ है वह सच्चा मनुष्य नहीं है। ऐसे ही अपने से दुर्बल को घायल करता है वो भी मनुष्य नहीं है। घायल मनुष्य का स्वामी यदि घायल न हुआ हो तो ऐसे मनुष्य को घायल नहीं कहते और घायल मनुष्य को घायल करें वो भी मनुष्य नहीं है। वंदेसंस्कृतम्!

एक और उदाहरण है।-

दाददो दुद्दुद्दादि दादादो दुददीददोः
दुद्दादं दददे दुद्दे ददाददददोऽददः

अर्थात: दान देने वाले, खलों को उपताप देने वाले, शुद्धि देने वाले, दुष्ट्मर्दक भुजाओं वाले, दानी तथा अदानी दोनों को दान देने वाले, राक्षसों का खण्डन करने वाले ने, शत्रु के विरुद्ध शस्त्र को उठाया।

है ना खूबसूरत? इतना ही नहीं, क्या किसी भाषा में केवल 2 अक्षर से पूरा वाक्य लिखा जा सकता है? संस्कृत भाषा के अलावा किसी और भाषा में ये करना असम्भव है। माघ कवि ने शिशुपालवधम् महाकाव्य में केवल "भ" और "र" दो ही अक्षरों से एक श्लोक बनाया है। देखिये –

भूरिभिर्भारिभिर्भीराभूभारैरभिरेभिरे
भेरीरे भिभिरभ्राभैरभीरुभिरिभैरिभा:।

अर्थात- निर्भय हाथी जो की भूमि पर भार स्वरूप लगता है, अपने वजन के चलते, जिसकी आवाज नगाड़े की तरह है और जो काले बादलों सा है, वह दूसरे दुश्मन हाथी पर आक्रमण कर रहा है।

एक और उदाहरण-

क्रोरारिकारी कोरेककारक कारिकाकर।
कोरकाकारकरक: करीर कर्करोऽकर्रुक॥

अर्थात- क्रूर शत्रुओं को नष्ट करने वाला, भूमि का एक कर्ता, दुष्टों को यातना देने वाला, कमलमुकुलवत, रमणीय हाथ वाला, हाथियों को फेंकने वाला, रण में कर्कश, सूर्य के समान तेजस्वी था।

पुनः क्या किसी भाषा मे केवल तीन अक्षर से ही पूरा वाक्य लिखा जा सकता है? यह भी संस्कृत भाषा के अलावा किसी और भाषा में असंभव है! उदहारण-

देवानां नन्दनो देवो नोदनो वेदनिंदिनां
दिवं दुदाव नादेन दाने दानवनंदिन:।।

अर्थात- वह परमात्मा [विष्णु] जो दूसरे देवों को सुख प्रदान करता है और जो वेदों को नहीं मानते उनको कष्ट प्रदान करता है। वह स्वर्ग को उस ध्वनि नाद से भर देता है, जिस तरह के नाद से उसने दानव [हिरण्यकशिपु] को मारा था।

अब इस छंद को ध्यान से देखें इसमें पहला चरण ही चारों चरणों में चार बार आवृत्त हुआ है, लेकिन अर्थ अलग-अलग हैं, जो यमक अलंकार का लक्षण है। इसीलिए ये महायमक संज्ञा का एक विशिष्ट उदाहरण है -

विकाशमीयुर्जगतीशमार्गणा विकाशमीयुर्जतीशमार्गणा:।
विकाशमीयुर्जगतीशमार्गणा विकाशमीयुर्जगतीशमार्गणा:॥

अर्थात- पृथ्वीपति अर्जुन के बाण विस्तार को प्राप्त होने लगे, जबकि शिवजी के बाण भंग होने लगे। राक्षसों के हंता प्रथम गण विस्मित होने लगे तथा शिव का ध्यान करने वाले देवता एवं ऋषिगण (इसे देखने के लिए) पक्षियों के मार्गवाले आकाश-मंडल में एकत्र होने लगे।

जब हम कहते हैं की संस्कृत इस पूरी दुनिया की सभी सर्वाधिक भाषा है तो उसके पीछे इसी तरह के खूबसूरत तर्क होते हैं। यह विश्व की अकेली ऐसी भाषा है, जिसमें "अभिधान- सार्थकता" मिलती है अर्थात् अमुक वस्तु की अमुक संज्ञा या नाम क्यों है, यह प्रायः सभी शब्दों में मिलता है। जैसे इस विश्व का नाम संसार है तो इसलिये है क्यूँकि वह चलता रहता है, परिवर्तित होता रहता है-

संसरतीति संसारः गच्छतीति जगत् आकर्षयतीति कृष्णः रमन्ते योगिनो यस्मिन् स रामः इत्यादि।

जहाँ तक मुझे ज्ञान है विश्व की अन्य भाषाओं में ऐसी अभिधान सार्थकता नहीं है।

विभागाध्यक्ष (राजभाषा)
सेल चासनाला कोलियरी, धनबाद

यात्रा संस्मरण

नवगढ़ और विजयगढ़ की रोमांचक यात्रा

-सन्तोष कुमार

"इस संसार में कुछ ऐसे स्थल है जिन्हे एक बार देखने मात्र से ही वे हमारे मन में बस जाते है और कभी नही निकलते। मेरे लिये तो मेरा देश भारत एवं इसका एक-एक कोना एक ऐसा ही स्थल है।"

भारत के उत्तर प्रदेश राज्य के "धान के कटोरा" के नाम से प्रसिद्ध चन्दौली जिले में स्थित चकिया एक नगर है जो दक्षिण में विंध्य की पहाड़ियों, उत्तर में गंगा के मैदानी इलाकों, पूर्व में हरे-भरे जंगलो एवं दक्षिण-पश्चिम की ओर चन्द्रप्रभा वन्य जीव विहार से घिरा हुआ एक बहुत ही मनोरम एवं रमणीय स्थल है। मानो ऐसा लगता है जैसे यह नगर प्रकृति की गोद में ही बसा हुआ है। यही मोहक स्थल मेरी जन्मभूमि है परंतु मुझे अपनी जन्मभूमि के चारों ओर स्थित प्राकृतिक स्थलों का भ्रमण करने का कभी मौका नही मिला था। ऐसे प्राकृतिक स्थल में पले-बढ़े होने के कारण युवा अवस्था से ही मेरे मन में हमेशा ही ऐसे स्थलों पर भ्रमण करने की इच्छा बनी रहती थी। मेरे जिले के अलावा इसके आस-पास के पड़ोसी जिले जैसे सोनभद्र, मिर्जापुर एवं वाराणसी में भी कई प्राकृतिक पर्यटन स्थल, प्रसिद्ध किले, विशालकाय बांध, आकर्षक जल प्रपात एवं अलौकिक धार्मिक स्थल है जिनका अपना इतिहास भी है और पूरे भारत में प्रसिद्ध भी हैं। मैं इन सभी जगहो से परिचित तो था, परन्तु विषम परिस्थितियों के कारण वहाँ जाने का कभी अवसर नही मिल पाया। उन दिनों इन सभी क्षेत्रों की स्थिति बड़ी ही दयनीय एवं दुर्भाग्यपूर्ण थी, क्योंकि ये सारा इलाका नक्सलवाद की काली छाया में डूबा हुआ था। इन सभी जगहों पर नक्सलियों का आतंक अपनी चरम सीमा पर था। आये दिन आम लोगों, वन्य विभाग एवं पुलिस जवानों की हत्याएं और लूटपाट होती रहती थी। ऐसी जटिल परिस्थितियों के कारण मैं अपनी भावनाओं को मन में ही समेट कर रह गया था और उम्मीद भी छोड़ दिया था। परन्तु अचानक एक दिन मुझे मेरी आकांक्षा को पूरा करने का अवसर मिल ही गया। बात उन दिनों की है जब मैं चकिया नगर में ही स्थित महाविद्यालय से स्नातक की परीक्षा पूर्ण कर स्वतंत्र एवं तनाव मुक्त होकर ग्रीष्मकालीन अवकाश का आनन्द ले रहा था कि एक दिन मेरे एक प्रिय गुरूजन द्वारा कॉलेज आने का संदेश प्राप्त हुआ। स्थानीय होने के कारण मैं और मेरे कुछ साथी कालेज के लगभग सभी गतिविधियां जैसे वार्षिक क्रीड़ा उत्सव, सांस्कृतिक कार्यक्रम, गोष्ठियाँ इत्यादि को संपन्न कराने में अहम भूमिका निभाते थे। मन में ऐसे ही किसी कार्य का विचार कर मै अविलम्ब वहाँ पहुचा। किन्तु कहानी तो कुछ और निकली। ज्ञात हुआ कि मुम्बई के किसी प्रसिद्ध विश्वविद्यालय के शोधकर्ता एवं प्रोफेसर डॉ. आई बी सिंह जो कि नक्सलवाद एवं उससे संबंधित विषय पर शोध कर रहे थे, इसी शोध के सिलसिले में वे सोनभद्र जिले में स्थित विजयगढ़ किले (चकिया से लगभग 80 किमी दूर) जिसके आस-पास का क्षेत्र नक्सलियों का गढ़ था, का भ्रमण करना चाहते थे। वे लोग चाहते थे कि मैं उनके साथ इस यात्रा पर जाऊँ। कुछ समय के लिये तो मैं सोच में पड़ गया। इस विषम परिस्थिति में मेरे मन में अनेक सवाल उथल-पुथल कर रहे थे। पर गुरूजनों की बात भी नही टाल पा रहा था। फिर मैने अपने मन की सुनी और उस कथन को याद कर कि "*जाको राखे साइँया मार सके ना कोय*", मै सहर्ष जाने के लिये तैयार हो गया। बातों ही बातों में एक व्यक्ति को और साथ ले जाने का विचार हुआ तो मैने मेरे सहपाठी एवं मित्र अखिलेश जो नवगढ़ के निवासी है और नवगढ़ चकिया की अपेक्षा विजयगढ़ किले से कम दूरी पर है और पहाड़ी इलाके में रहने के कारण उन्हे नक्सल विशेष इलाकों की पहचान भी थी। अतः मैने उन्हे ही अपने साथ ले जाने की इच्छा जताई। फिर मैने फोन से बात कर उन्हे सारी बात बतायी और अन्ततः वह भी हमारे साथ जाने के लिये तैयार हो गये। उनके ही द्वारा बतायी गयी यात्रा की रूप-रेखा के अनुसार जाने के लिये हमने सहमति जतायी और फिर बिना देरी के अगली ही सुबह यात्रा प्रारम्भ करने का निश्चय कर लिया गया। सुबह

जलपान करके लगभग 8 बजे मैं प्रोफेसर साहब के साथ चकिया से नवगढ़ जाने के लिये बस स्टेशन पहुँचा। थोड़ी ही देर बाद हमारी यात्रा का श्रीगणेश हो चुका था। नवगढ़ चकिया से दक्षिण की ओर लगभग 38 किमी दूर है और विंध्य की पहाड़ियों के आखिरी छोर पर बसा है। बस कुछ ही मिनटों में हम विंध्य की पहाड़ियो में सैर करने लगे। पूरा मार्ग ही पहाड़ियों को काट-काट कर बनाया गया था जिसके कारण रास्ते बहुत ही उँचे-नीचे एवं घुमावदार थे। ऐसे रास्तों में मेरी पहली यात्रा अनोखे अनुभव वाली थी। जब बस उपर पहाड़ियों की ओर चढ़ती थी तो ऐसा लगता था कि मानो कुछ पल के लिये सांसें ही रूक जाती हों और जैसे ही नीचे की ओर जाती मानों हृदय की धड़कनें धक-धक करके थम सी जाती हो। कुछ रास्ते तो इतने घुमावदार थे कि ऐसा लगता था कि हम किसी एक ही पिण्ड का बार-बार चक्कर लगा रहे हो। एक यात्री से पता चला कि ये जलेबिया मोड़ के नाम के प्रसिद्ध है। वास्तव में वह सड़क किसी जलेबी से कम घुमावदार नही थी। दुर्गम रास्तों, ऊंची-नीची पहाड़ियों, गहरी खाइयों और हरे लम्बे वृक्षों जैसे प्रकृति के बीच शीतल हवाओं का आनन्द लेते हुए हम कब नवगढ़ पहुंच गये पता ही नही चला। अखिलेश जी वहाँ पहले से ही इंतजार कर रहे थे। वहाँ से हम उनके घर गये। जलपान के दौरान ही उनके पिता जी ने नौगढ़ किले को भी देखने की बात कह दी, जो उनके घर से 3-4 किमी दूर था। उनके विचार से सहमत होकर हम जलपान के पश्चात अविलम्ब नवगढ़ किले के लिये निकल पड़े। नवगढ़ का किला एक छोटा किला है। कहा जाता है कि काशी नरेश ने इसका निर्माण कराया था। परन्तु किले के आस-पास हजारों साल पुराने अवशेष प्राप्त हुए है। स्थानीय लोगो में ऐसी भी मान्यताएं है कि यह प्राचीनकाल में बहुत विशाल किला था जो पूरी तरह से धरती में समा गया था। केवल उसके ऊपरी भाग ही पृथ्वी के ऊपर रह गया था, जिसका बाद में किसी राजा ने जीर्णोद्धार कराया था। यह वही नवगढ़ का किला है जिसका जिक्र प्रसिद्ध टीवी सीरियल'चन्द्रकान्ता' में कुँवर वीरेन्द्र प्रताप सिंह के किले के रूप में किया गया है। बाद में सरकार ने इस किले को 'चन्द्रकान्ता विश्राम गृह' के रूप में तब्दील कर दिया। जब हम गये थे उस समय किला किसी भूत बंगले से कम नही लग रहा था क्योंकि नक्सलियों के भय से कोई अधिकरी या राजनेता कई सालों से वहाँ आये नही थे। वहाँ एक स्थानीय चौकीदार रहता था जो कभी-कभी दिन के समय जाकर देखरेख करता था। किला बन्द होने के कारण हम अन्दर की कलाकृति को देख नही सके और बाहर से ही किले के चारों ओर भ्रमण कर लगभग 12 बजे तक वापस लौट आये। दोपहर के भोजन करने के बाद थोड़ा विश्राम किया एवं तय योजना के अनुसार लगभग 3 बजे आगे की यात्रा के लिये निकल पड़े। जैसा अखिलेश ने हमें पहले ही बताया था कि विजयगढ़ किले से लगभग 15 किमी दूर चतरा एक छोटा सा बाजार है, वहीं उनके किसी साथी की दुकान है और हम वहीं रात्रि विश्राम करेंगे, क्योकि संध्या के बाद उससे आगे जाना सुरक्षित नही था। फिर कुछ ही घण्टों में हम चतरा में थे।

संध्या की लालिमा धीरे-धीरे अन्धकार में परिवर्तित हो रही थी। सूर्यास्त के साथ ही सभी दुकानें भी धीरे धीरे बन्द हो रही थी। यातायात भी पूरी तरह से बन्द हो चुका था। सड़कें सुनसान होती जा रही थी। इसका सिर्फ एक ही कारण था- नक्सलवाद का दुष्प्रभाव। वहाँ के लोगों की बातें सुनकर मेरे भी मन में थोड़ा भय तो जरूर आ गया था लेकिन उनकी एक बात मन को थोड़ी तसल्ली भी दे रही थी कि नक्सली गरीबों एवं मजबूरों का कोई नुकसान नही करते। उनके सबसे बड़े दुश्मन वन विभाग, पुलिसकर्मी एवं धनवान लोग हैं। हमारे प्रोफेसर साहब को तो नक्सलवाद का तनिक भी डर नही था। वे बहुत कम ही बोलते थे, पर सभी चीजों का बड़ी गम्भीरता से जायजा लेते थे और कोई भी व्यक्ति मिल

जाये तो उससे बात करने से चूकते नही थे और बीच-बीच में अपनी डायरी में कुछ लिख लिया करते थे। हम अपने अगले निश्चित पड़ाव पर पहुँच चुके थे। फिर हमने अगले दिन की यात्रा के बारे मे चर्चा की तो ज्ञात हुआ कि विजयगढ़ किला वहाँ से लगभग 15 किमी दूर है और वहाँ जाने के लिये यातायात का कोई भी साधन नही चलता। किले के समीपवर्ती गाँवों के लिये एक-दो एक्के (घोड़ा गाड़ी) चलते है, पर उनका कोई टाईम टेबल नही होता है। फिर हमने चतरा के ही एक एक्के को अगले पूरे दिन के लिये 100 रूपये में रिजर्व कर लिया। ये मेरे जीवन का पहला और आखिरी मौका है जब किसी घोड़ा गाड़ी को रिजर्व करना पड़ा हो। अगली प्रातः 6 बजे निकलने का निश्चय कर हम लोग रात्रि का भोजन बनाने की व्यवस्था में लग गये। पर हम जहाँ ठहरे थे, उनके पास 2 से ज्यादा लोगो के लिये भोजन बनाने की व्यवस्था नही थी इसलिये हमने लिट्टी-चोखा बनाने का निर्णय लिया। लिट्टी-चोखा हमारे यहाँ का एक प्रसिद्ध व्यंजन है जो खासकर पिकनिक-पार्टियों में बनाया जाता है। खाना बनाते समय अखिलेश जी ने भोजपुरी गायक मनोज तिवारी जी के प्रसिद्ध गाने 'इन्टरनेशनल लिट्टी-चोखा' को गाकर सबका मनोरंजन भी किया। करीब 9 बजे हम खाने के लिये बैठे। अपने हाथों से बनाये खाने की क्या प्रशंसा करे ? सबकी जुबाँ पे एक ही बात थी- वाह! क्या स्वाद है। क्या स्वाद है! वास्तव में ऐसे स्वादिष्ट लिट्टी-चोखा का आनन्द तो उससे पहले हमने भी कभी नही लिया था। रात के 10 बज चुके थे और चारों तरफ सन्नाटा छा चुका था। दूर-दूर तक केवल कुछ कुत्तों की आवाज ही सुनाई दे रही थी। हमने भी अब सोने की तैयारी कर ली। सड़क के किनारे ही हमारी चारपाईयाँ लग चुकी थी। सड़क के किनारे सोना अजीब तो था पर एक नया अनुभव भी। दिन भर की थकान के कारण मुझे जल्दी ही नींद आ गयी। लेकिन मच्छरों के काटने से मेरी नींद अचानक खुल गई। देखा तो प्रो0 साहब और अखिलेश तो पहले से उठ के बैठे हुए थे और गमछों से अपने उपर हावी हो रहे मच्छरों को उड़ा रहे थे। मच्छरों ने तो ऐसे हमला बोल दिया था जैसे हम उनके घर में घुसे हुए शत्रु हों। प्रो0 साहब ने व्यंग्य कसते हुए कहा- "लगता है ये मच्छर चन्द्रकान्ता के दूत है, आधी रात को ही उड़ाकर हमे विजयगढ़ की सैर करा देंगे।" पूरी रात हम करवटें बदलते रहे और ठीक से सो भी नही पाये। चिड़ियों की चहचहाहट सुनकरमैं उठा और घड़ी की ओर देखा तो प्रातः काल के 04 बज चुके थे। हमने अपने बिस्तर समेटे और अगली तैयारी में लग गये। सुबह 6 बजे से पहले ही हम तैयार हो चुके थे और हमारी घोड़ागाड़ी भी आकर खड़ी थी। बिना देरी किये हम अपने तय समय पर रवाना हो गये। इधर सूरज भी दस्तक दे चुका था और अपनी मोहक लालिमा चारों ओर बिखेर दी थी। सूरज की पहली किरण के साथ मन्द-मन्द बहती हुई शीतल हवाएँ मुझे स्फूर्ति प्रदान कर रही थी। पहली बार घोड़ेगाड़ी की सवारी का मजा भी एक अनोखा आनन्द प्रदान कर रहा था। मुझे तो फिल्म शोले की बसन्ती और धन्नो का दृश्य स्मरण हो गया। सड़क पर लोगो का आना-जाना शून्य के बराबर ही था। सुनसान सड़क पर घोड़े की टापों की टपाक-टपाक की आवाज और उसके गले में बंधे घण्टी की टन-टन शान्त वातावरण को संगीतमय बना रही थी। कुछ ही देर चलने के बाद हमें एक विशालकाय जलाशय दिखाई दिया जिसका आखिरी छोर सागर की भांति गगन को छूता हुआ प्रतीत हो रहा था। एक्के वाले ने बताया कि यह धनरौल बांध है जो घाघर नदी पर बंधा है। इसे घाघर डैम भी कहा जाता है। इससे कई नहरें निकली हैं जो सोनभद्र के एक विस्तृत क्षेत्र में सिचाई में सहायक हैं। लगभग 12 किमी जाने के बाद हम उस आखिरी गाँव के किनारे पहुँचचुके थे जहाँ से आगे की यात्रा पैदल ही करनी थी। उबड़-खाबड़ एवं पथरीले रास्तों से होते हुए लगभग आधे

घण्टे में हम किले की पहाड़ी के नीचे तो आ गये, पर आस-पास में ऊपर जाने का कोई रास्ता दिखाई ही नही दे रहा था। जैसा कि हमने सुना था कि किले तक पहुँचने के लिये सीढ़ीनुमा घुमावदार रास्ता बना हुआ है जो करीब 2-3 किमी लम्बा है। रास्ता भटकने से हम सभी थोड़े विचलित थे और इधर जाएं या उधर जाएं ऐसा विचार कर ही रहे थे कि पहाड़ी की ओर से कुछ लकड़हारे आते दिखे तो हमने थोड़ी राहत की सांस ली। प्रो. साहब के पूछने पर उन्होने बताया कि आप लोग सीधे रास्ते से आ गये हैं। किले का मुख्य रास्ता यहाँ से कुछ किमी दूरी से प्रारंभ है, पर आप चाहें तो यहीं से चढ़ाई शुरू कर सकते है। पहाड़ी कुछ सीधी है लेकिन सहारे के लिये पेड़-पौधे भी हैं। चढ़ाई में थोड़ा कष्ट तो होगा पर जल्दी ही आप लोग किले के पास पहुंच जायेंगे। उनके इस मार्गदर्शन से मुझे भय भी लग रहा था। हमारे चेहरों पे डर के भाव देखकर वे बोले-साहब डरने की बात नही है। पहाड़ी पर लकड़हारे लकड़ी काटने के लिए जाते है। आते-जाते हुए रास्तों के निशान भी बन गये है। अधिक चिन्ता की बात नही है। हो सकता है उपर कुछ लकड़हारे भी मिल जाएं। मैने प्रो. साहब की ओर देखा उनके चेहरे पर तो तनिक भी चिंता का भाव नहीं था। उनके कहने पर हमने वहीं से चढ़ाई शुरू कर दी। छोटे-छोटे पेड़ो की टहनियों एवं चट्टानों की मदद से हम ऊपर चढ़ने लगे। कुछ ऊंचाई पर जाने पर 4-5 लोग लकड़ियाँ काटते हुए मिले। हम वहीं थोड़ी देर रुके व हल्का जलपान किये। प्रो. साहब तो उन लोगों के पास चले गये, उनसे कुछ बातें की और उन्हे कुछ बिस्किट के पैकेट भी दिये। हम पुनः चल पड़े और थोड़ा ऊपर जाते ही हमें सीढ़ीनुमा रास्ता मिल गया। उस रास्ते से कुछ ही देर चलने के बाद हमें एक बड़ा सा खुला द्वार दिखाई दिया। यही इस किले का मुख्य द्वार था। अंततः हम विजयगढ़ किले में थे-"वही रहस्यमयी किला जो लगभग 450-500 फीट ऊँचे पहाड़ के ऊपर हरियाली की गोद में स्थित अपनी आसमानी ऊंचाइयो से आने वालों का रोमांच स्वतः ही बढ़ा देता है। जो आज भी लोगों को अपने तिलीस्मीय आकर्षण से हैरान कर देता है। यह वही किला है जिस पर महान उपन्यासकार देवकी नन्दन खत्री ने 'चन्द्रकान्ता' उपन्यास लिखा। इसी उपन्यास पर आधारित टीवी धारावाहिक 'चन्द्रकान्ता' की खूबसूरत नायिका राजकुमारी चन्द्रकान्ता इसी विजयगढ़ की ही राजकुमारी थी जो नवगढ़ के राजकुमार कुँवर वीरेन्द्र प्रताप सिंह से प्रेम करती थी। परन्तु मिर्जापुर जिले में स्थित चुनारगढ़ के राजा शिवदत्त चन्द्रकान्ता को अपनी रानी बनाना चाहते थे। इस किले की प्राचीनता के बारे में भी अधिक प्रमाणिक जानकारी उपलब्ध नही है। इतिहासकारों का मानना है कि इसका निर्माण पांचवी शताब्दी में कोल राजाओं ने कराया था। कालान्तर में कई राजाओं ने इस पर शासन किया। चंदेलों के द्वारा भी यहा राजकाज संभालने का उल्लेख है। कहा जाता है कि ब्रिटिशकाल में काशी के राजा चेत सिंह इस किले पर राज करते थे। किले का आधा क्षेत्र कैमूर की खड़ी चट्टानी पहाड़ियों से घिरा हुआ है। इस किले के ऊपर सात दर्शनीय सरोवर भी हैं। इतनी ऊँचाई पर होने के बाद भी इनमें पानी कहाँ से आता है ये आज भी रहस्य है। हम द्वार से जैसे ही कुछ आगे बढ़े तो सामने एक बहुत विशालकाय हरा- भरा मैदान था। हम किले के किनारे बने रास्ते से आगे बढ़े। किले की सुरक्षा के लिये बनी चहारदीवारी तो कई फीट मोटी रही होगी। किले के चारों ओर चहारदीवारी से सटा हुआ लगभग 15 फीट चौड़ा रास्ता बना हुआ था जो सम्भवतः सुरक्षा व्यवस्था का जायजा एवं गश्त के लिये बनाया गया होगा। एक ओर से किले की पहाड़ी तो बिल्कुल सीधी खड़ी थी। उसके सामने कई किमी तक समतल मैदान था। नीचे देखने मात्र से भय लगता था। इसकी ऊंचाई का अनुमान इसी बात से लगाया जा सकता कि नीचे घास चर रहे गाय-भैस बकरी जैसे प्रतीत हो रहे थे। कई जगहों पर छोड़े-बड़े कुछ महल भी थे जो अधिकांशतः ध्वस्त हो चुके थे। लेकिन उनकी दीवारों एवं खंभों की नक्काशी स्वतः ही मनमुग्ध कर रही थी। लगभग दो घण्टे तक हम किले के इधर-उधर घूमते रहे। हमने अनेक शिलालेख एवं खण्डहरनुमा जगह देखे। प्रो0 साहब ने स्थानों के बनावटों एवं अपने अनुभव से कुछ को अस्तबल, हाथी बांधने की जगह, युद्धकला सिखाने का स्थान, रसोई एवं धोबीघाट होने की सम्भावना व्यक्त की। बहुत देर तक घूमते-घूमते हम थक चुके थे और थोड़े विश्राम के लिये किसी उपयुक्त जगह की तलाश कर रहे थे, तभी हमें एक कुटिया दिखाई दी। जब हम उसके पास पहुंचे तो वहाँ एक बड़ा सरोवर एवं उसके किनारे एक प्राचीन मन्दिर देखे। कौतुहलवश हम कुटिया में गये तो वहा देखे कि एक तपस्वी अपनी पूजा में लीन थे। कुछ देर बाद वे पूजा से उठे तो हमारे बारे में पूछे। साधु महाराज कई वर्षो से वहाँ रह रहे थे। उन्होने बताया कि 'कुटिया के सामने जो सरोवर है उसका नाम रामसागर है। इसका पानी पीने योग्य है और इसका पानी कभी कम नही होता। इसके पास ही शिव मन्दिर है। प्रत्येक वर्ष सावन के महीने में यहाँ हजारों कांवरिये आते हैं एवं रामसागर से जल लेकर शिवालय में चढ़ाते है। इस सरोवर के आगे एक और मीरसागर नामक सरोवर है। मीरसागर के पास ही हजरत मीरान बाबा साहीब की मजार है। प्रत्येक वर्ष अप्रैल माह में वहाँ विशाल मेले का आयोजन होता है। रामसागर एवं मीरसागर के बीच में ही एक रंगमहल है जो कि बहुत ही अद्भुत प्रतीत होता है। कहा जाता है कि राजकुमारी चन्द्रकान्ता इसी रंगमहल में ही रहती थी। वहाँ कुछ देर विश्राम एवं जलपान कर हम रंगमहल की ओर चल दिये। वहाँ हमने देखा कि उसके

छत का कुछ भाग ध्वस्त हो चुका था। जब हम इसके अन्दर प्रवेश किये तो उसकी दीवारों पर बने गुफा चित्रों, मूर्तियों एवं नक्काशियों को देखकर मैं तो आश्चर्य चकित हो गया। अभी तक के जीवन में मैने चट्टानों पर बनायी गई इतनी बारीक एवं सुन्दर कलाकृति की खुदाई नही देखी थी। वो भी सैकड़ो वर्ष पूर्व जब निर्माण के लिये कोई भी मशीनरी उपलब्ध नही थी। मैं तो इसकी परिकल्पना भी नही कर पा रहा था। इसकी कलाकृति वास्तव में अद्भुत थी। फिर हम मीरसागर की ओर गये। उसके किनारे ही बाबा की मजार थी जहाँ कुछ लोग पूजा-पाठ कर रहे थे। दोपहर के 2 बज चुके थे और अब हमारे वापस लौटने का समय भी हो गया था। कुछ समय बाद तपस्वी जी को प्रणाम कर हम वहां से प्रस्थान किये। सीढ़ियों के रास्ते से नीचे उतरे। नीचे आने मे हमे किसी कठिनाई का सामना नही करना पड़ा। करीब घण्टे भर में ही हम घोड़ेगाड़ी के पास आ गये जो वापस ले जाने के लिये प्रतीक्षारत था। बिना देरी किये हम वहाँ से चल दिये क्योंकि शाम तक हमे वापस नौगढ़ पहुचना था और फिर अगली सुबह चकिया। वापस लौटते समय मै इस यात्रा से आनन्दित था। आज वर्षो बीत चुके है इस यात्रा को। संभवतः इन इलाको से नक्सलवाद का भी बहुत हद तक दमन हो चुका है। पर जब भी इसकी याद आती है, मेरा अंग-अंग रोमांचित हो उठता है।

"आखिर में, ये मायने नही रखता कि आपने जिन्दगी में कितनी सांसे ली, बल्कि ये मायने रखता है कि आपने उन सांसो में कितनी जिन्दगी जी"

किसी ने सत्य ही कहा है- "दुनिया एक किताब है, और जो यात्रा नही करते हैं वे केवल एक पन्ना ही पढ़ते हैं।"

केंद्रीय औद्योगिक सुरक्षा बल
इकाई बीसीसीएल धनबाद

कविता

यूँ ही, बस याद नहीं

किसलय कान्त

ओस की बूंदों से नम घास पर कब चला था
याद नहीं,
पत्तों पर जमी बूंदों को चमकते कब देखा था
याद नहीं,
वो गीले पैरों के फर्श पर बने निशान
याद नहीं
वो ठण्ड से उंगलिओं का नम पड़ना
याद नहीं
हवा का गुज़रना
याद नहीं,
गुज़र कर वापस आना
याद नहीं
गीली लकड़ी से उठता घना धुंआ
याद नहीं
बस याद है
उस याद का आना,
ठहरना और छूकर चले जाना

सहायक प्रबंधक (सीडी),
बीसीसीएल

भाषायी आधार पर भारत के राज्य

'क' क्षेत्र	बिहार, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, झारखंड, उत्तराखंड, राजस्थान और उत्तर प्रदेश राज्य तथा अंडमान और निकोबार द्वीप समूह, दिल्ली संघ राज्य क्षेत्र
'ख' क्षेत्र	गुजरात, महाराष्ट्र और पंजाब राज्य तथा चंडीगढ़, दमन और दीव तथा दादरा और नगर हवेली संघ राज्य क्षेत्र
'ग' क्षेत्र	ओड़िशा, पश्चिम बंगाल, असम,अरुणाचल प्रदेश, नागालैंड,मेघालय, मणिपुर, त्रिपुरा, मिजोरम, तमिलनाडु, तेलंगाना,कर्नाटक, आन्ध्र प्रदेश, केरल, गोवा, सिक्किम राज्य तथा जम्मू-कश्मीर, लद्दाख, पुदुचेरी और लक्षद्वीप संघ राज्य क्षेत्र

स्वास्थ्य चर्चा

बचिए विटामिन 'डी' की कमी से

-डॉ. ऋषि मोहन श्रीवास्तव

बहुत से लोग बस यही जानते और सोचते हैं कि विटामिन 'डी' की कमी से सिर्फ हड्डियों की कमजोरी होती है। पर आप यह जान लें नवीन-अनुसंधानों से यह निष्कर्ष मिले हैं कि विटामिन 'डी' की कमी से दूसरी अन्य ढेर-सारी स्वास्थ्य संबंधी परेशानियां हो सकती हैं।

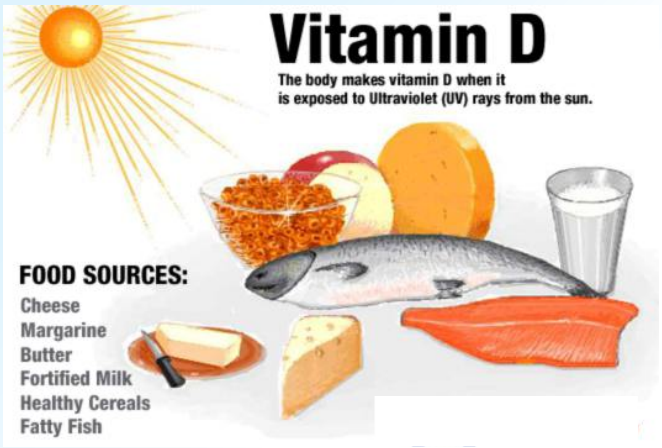

विटामिन 'डी' प्राप्त करने का सबसे सरल उपाय तो यही है कि आप सुबह के समय धूप में ज्यादा से ज्यादा बैठें। इससे पर्याप्त विटामिन 'डी' मिल जाएगा। लेकिन ऐसा देखा गया है कि कुछ लोग धूप में पांच मिनट भी नहीं बैठते या फिर कुछ ऐसे लोग भी हैं जिनके घरों में ही धूप का प्रवेश निषिद्ध है। यानि उनके घरों में किंचित धूप नहीं आती। ऐसे लोगों में देखा गया है कि विटामिन 'डी' के कारण होने वाली कमियां स्पष्ट दिखलायी पड़ती हैं।

गठिया और ऑस्टियोपोरोसिस

हमारी हड्डियों का घनत्व और सही मजबूती बनाए रखने के लिए विटामिन 'डी' सबसे अधिक आवश्यक है। कैल्शियम की कमी से भी गठिया और जोड़ों का दर्द पैदा हो जाता है। हड्डियां जब कमजोर होती हैं, तो वे चटकने लगती हैं, उनसे आवाजें भी आने लगती हैं। आप चलने-फिरने में परेशानी महसूस करते हैं।

सूजन और जलन की शिकायत

विटामिन 'डी' की कमी से शरीर में सूजन संबंधी शिकायतें होने लगती हैं। विटामिन 'डी' की जहां कमी हुयी, वैसे ही रूमेटॉयड ऑर्थराइटिस, ल्यूपस इफ्लेमेटरी बॉउल और टाइप वन डायबिटीज होने का खतरा बढ़ जाता है। इसीलिए पर्याप्त ध्यान दें कि विटामिन 'डी' का अभाव न हो।

अस्थमा भी हो सकता है-

नवीन शोध से ज्ञात हुआ है कि विटामिन 'डी' की लगातार कमी से अस्थमा और सांस संबंधी तकलीफें हो सकती हैं। विटामिन 'डी' की कमी और फेफड़ों की कार्य क्षमता का सीधा संबंध है।

यदि विटामिन 'डी' व्यक्ति के पूरे शरीर में पहुंचता है तो फेफड़ों में सूजन कम करने वाला प्रोटीन दूर बना रहता है। विटामिन 'डी' स्वयं सूजन कम करता है।

कोलेस्ट्रोल भी बढ़ सकता है

ऐसा देखा गया है कि जब व्यक्ति सूर्य की रोशनी से दूर रहता है या उसे पर्याप्त विटामिन 'डी' नहीं मिलता तो शरीर में विटामिन 'डी' बनाने वाले तत्व कोलेस्ट्रोल में बदल जाते हैं।

एलर्जी की समस्या

बच्चों में विटामिन 'डी' की कमी से बहुत जल्दी एलर्जी की समस्या देखी गई है। बच्चों को इससे भोजन एवं खाद्य पदार्थों से जुड़ी समस्याएं ज्यादा होती हैं। ध्यान रखें बच्चों को ज्यादा से ज्यादा धूप में बैठने को कहें।

सर्दी-जुकाम, इंफ्लूएंजा हो सकता है

जी हां, विटामिन 'डी' की कमी से सर्दी, जुकाम व इंफ्लूएंजा की शिकायत बहुत जल्दी होती है।

दांतों पर प्रभाव

विटामिन 'डी' की कमी का असर आपके दांतों पर भी दिखलायी देता है। दांतों को मजबूत बनाना है तो ध्यान रखें विटामिन 'डी' अत्यंत आवश्यक है, नहीं तो आपके दांत टूटने का खतरा बना रहता है।

अवसाद के लिए भी जिम्मेदार

विटामिन 'डी' मस्तिष्क के विकास में काफी बड़ी भूमिका निभाता है। इसलिए कभी-कभी विटामिन 'डी' की कमी होते ही व्यक्ति में अवसाद देखा गया है।

टाइप-2 डायबिटीज

टाइप-2 डायबिटीज का असर भी विटामिन 'डी' की कमी से हो जाता है। ग्लूकोज की प्रतिरोधक क्षमता विटामिन 'डी' से बहुत जल्दी प्रभावित होती है।

इसलिए ध्यान दें विटामिन 'डी' की कमी न होने दें। सूर्य की रोशनी में कुछ समय अवश्य रहें। गोलियों से विटामिन 'डी' आसानी से नहीं मिलता।

एस-1. नित्यानंद विला
कमलेश्वर कॉलोनी, जीवाजीगंज
लश्कर, ग्वालियर - 474001

समसामयिक आलेख

मातृभाषा में प्राथमिक शिक्षा : नयी शिक्षा नीति के विशेष संदर्भ में

-चंदन कुमार श्रीवास्तव

शिक्षा की व्यवस्था हो चाहे व्यवस्था की शिक्षा दोनों ही स्थितियों में भाषा का महत्त्व सर्वविदित है। व्यवहारिक जीवन शैली को चाहे अध्ययनशीलता का ककहरा सीखना हो भाषा के बिना सब व्यर्थ है। बिना भाषा के सीखे समझे और जाने कुछ भी सीखना असंभव है। बात जब ककहरे की हो तो मात्र कुल परिवेश की भाषा यानी मातृभाषा का महत्त्व स्वीकारा गया है। भारतीय नवजागरण के अग्रदूत के रूप में प्रसिद्ध आधुनिक काल के कवि भारतेंदु हरिश्चंद्र ने निज भाषा का महत्त्व बताते हुए लिखा भी है कि ***निज भाषा उन्नति अहै सब उन्नति को मूल। बिन निज भाषा ज्ञान के मिटत न हिय को सूल***। भारत की निज भाषा में भारतेंदु जी का तात्पर्य हिंदी सहित सभी भारतीय भाषाओं से रहा है। वे आगे भी लिखते हैं कि ***अंग्रेजी पढ़ि के जदपि सब गुन होत प्रवीन। पर निज भाषा ज्ञान बिन रहत हीन के हीन***। यानी अंग्रेजी जैसी विदेशी भाषाओं में प्राप्त शिक्षा से आप प्रवीण तो हो जाएंगे किंतु सांस्कृतिक एवं व्यवहारिक दृष्टिकोण से ही नहीं रहेंगे। उसी काल में भारतेंदु जी ने मातृभाषा में शिक्षा की अवधारणा को भी साकार करने का अनुग्रह किया है। इसी कविता में वह फिर लिखते हैं कि ***और एक अति लाभ यह, या में प्रगट लखात। निज भाषा में कीजिए, जो विद्या की बात***। इसी तरह भारत के सांस्कृतिक और सामाजिक वैभव की स्थापना कब प्रथम पायदान निज भाषा यानी मातृभाषा में शिक्षा में ही निहित है। बिना मातृभाषा के ज्ञान और अध्ययन के सब व्यवहार व्यर्थ ही माने गए हैं। कुछ वर्षों पूर्व एक प्रबंधन संस्थान में युवा प्रशिक्षणार्थी आत्महत्या कर लेता है। वह इसका कारण लिख कर छोड़ जाता है कि कमजोर अंग्रेजी के कारणों से जटिल परिस्थितियों से गुजरना पड़ रहा था। ऐसी ही एक अन्य घटना में विद्यार्थी इसी कारण से 3 महीने तक विद्यालय नहीं जाता है। घर पर जानकारी तब होती है जब वह गायब हो जाता है। ऐसी खबरें अगले दिन सामान्यत: भुला दी जाती हैं।

अखबार की ये सुर्खियां भारत के नीति निर्धारकों को सोचने पर विवश कर देती हैं कि आखिर भारत में ही अपने राष्ट्र की प्रतिनिधि भाषा समझने के बावजूद अंग्रेजी का दबाव क्यों है जो व्यक्ति को अवसाद ग्रस्त तो कर ही रहा है, जीवन की बाजी लगाने के लिए विवश कर रहा हैं। इस प्रकार का चिंतन विश्लेषण कहीं पर भी सुनाई नहीं पड़ता है। आज भी अंग्रेजी भाषा का दबाव किस कदर भारत की नई पीढ़ी को प्रताड़ित कर रहा है। सच तो यह है कि आजादी के बाद मातृभाषा हिंदी और अन्य भारतीय भाषाओं के उत्थान का जो सपना देखा गया था अब वह सपना दस्तावेजों, कार्यक्रमों तथा संस्थाओं में दबकर रह गया है। आजादी के बाद के पहले दो दशकों में पूरी आशा थी कि अंग्रेजी का वर्चस्व कम होगा। हिंदी के विरोध के कारण सरकार ऐसा मजबूर हुई कि इसका खामियाजा दूसरी भारतीय भाषाओं को भुगतना पड़ रहा है। अंग्रेजी में प्रतिवर्ष करोड़ों बच्चे हाई स्कूल परीक्षा में फेल होते रहे हैं, किंतु वर्तमान पर नजर डालें तो ठीक विपरीत परिणामों का दर्शन होता है। हाल ही में उत्तर प्रदेश में लगभग 800000 बच्चे हिंदी भाषा में अनुत्तीर्ण हो जाते हैं। मतलब साफ तौर पर नीति निर्धारकों द्वारा जिस तरह से अंग्रेजी की गुलामी वाला शिक्षा मसौदा बनाया गया, वह हिंदी के लिए ही आत्मघाती बन गया। देश में लाखों ऐसे बच्चे हैं जहां केवल एक मानदेय प्राप्त अध्यापक कक्षा 1 से 5 तक के सारे विषय पढ़ाता है। क्या यह बच्चे कभी उनके साथ प्रतिस्पर्धा में बराबरी से खड़े हो पाएंगे जो देश के प्रतिष्ठित स्कूलों में अंग्रेजी माध्यम से पढ़ाई कर रहे हैं। आज उपलब्धियों के बड़े आंकड़े सामने आते हैं। बच्चे स्कूल जा रहे हैं और मध्यान्ह भोजन व्यवस्था से लाभान्वित हो रहे हैं। स्कूलों की उपलब्धता लगभग 98% जनता के लिए 1 किलोमीटर के दायरे में उपलब्ध है आदि। यही नहीं अधिकांश राज्य सरकारें अंग्रेजी पढ़ाने की व्यवस्था कक्षा 12 से कर चुकी हैं और इससे बड़ी उपलब्धि के रूप में मानती भी हैं। आज अगर भारत के युवाओं से पूछे तो भी यही कहेंगे अगर उनकी अंग्रेजी अच्छी होती है या फिर वह किसी कान्वेंट पब्लिक स्कूल में पढ़े होते तो जीवन सफल होता।

मातृभाषा से बच्चों का परिचय घर और परिवेश से ही शुरू हो जाता है। इस भाषा में बातचीत करने और चीजों को समझाने की क्षमता के साथ विद्यालय में दाखिल होते हैं अगर उनकी क्षमता का इस्तेमाल पढ़ाई के माध्यम के रूप में मातृभाषा का चुनाव करके किया जाए तो इसके सकारात्मक परिणाम देखने को मिलते हैं। यूनेस्को द्वारा भाषाई विविधता को बढ़ावा देने और उनके संरक्षण के लिए अंतरराष्ट्रीय मातृभाषा आंदोलन की शुरुआत भी की गई। हम अक्सर देखते हैं कि बहुत सी बातें अवधी, भोजपुरी ब्रजभाषा, मगही, मराठी, मालवी, निमाड़ी आदि भाषाओं में कही जाती हैं और उनका व्यापक असर होता

है। कई बार मातृभाषा को हतोत्साहित करने की प्रवृत्ति विद्यालय में देखी जाती हैं जैसे हिंदी बोलने पर इंग्लिश माध्यम विद्यालयों में दंड लगने वाली घटनाओं के बारे में हमने सुना है। ऐसे ही अन्य मातृ भाषाओं के गीतों को स्कूलों में गाने से बच्चों को हतोत्साहित किया जाता है। इसका अर्थ है कि हम बच्चों को उनके अपने परिवेश संस्कृति और उनकी जड़ों से काट देना चाहते हैं। यह प्रक्रिया बड़ी चालाकी के साथ बचपन से ही शुरू हो जाती है और एक दिन हमें एहसास होता है कि हम अपनी संस्कृति से अजनबी हो गए हैं। इससे बचने का एक ही तरीका है कि हम मातृभाषा में संवाद, चिंतन और विचार-विमर्श को अपने रोजमर्रा की जिंदगी में शामिल करें। इसके इस्तेमाल को लेकर किसी भी तरह की हीन भावना का शिकार होने के बजाय ऐसा करने को प्रोत्साहित करें। हालांकि भारत की पहली शिक्षा नीति में भी मातृभाषा में शिक्षा व्यवस्था की परिकल्पना दौलत सिंह कोठारी आयोग ने रखी थी कतिपय राजनीतिक कारणों से अपेक्षित परिणाम नहीं मिले। वर्ष 2020 में जारी शिक्षा नीति ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी मोदी एवं शिक्षा मंत्री के शिक्षा मंत्री रमेश पोखरियाल द्वारा प्राथमिक शिक्षा में मातृभाषा की अनिवार्यता को अपनाकर भारत भाषा में शिक्षा के महत्व को प्रतिपादित किया है। नई शिक्षा नीति में जिस तरह से प्राथमिक तौर पर मातृभाषा के प्रभाव को समायोजित करते हुए हिंदी भाषा के महत्त्व को भी सम्मिलित किया है, वह भविष्य में हिंदी के प्रभुत्व स्थापित करते हुए हिंदी के साथ-साथ भारतीय भाषाओं का भी बने और अंग्रेजी का आधिपत्य समाप्त हो। जब बाजार हिंदी भाषा सहित अन्य भारतीय भाषाओं को अपना पाएगा तो अपनी भाषाएं मजबूत बनेगी जब तक बाजार अपनी भाषाओं में व्यापार नहीं करता है तब तक भाषा का विकास खोखला है उदाहरण के लिए चीन को देखें चाइनीज भाषा को स्थानीय बाजार ने अपना रखा है वह अपना कार्य व्यवहार चाइनीज भाषा में करते हैं तो उनका सांस्कृतिक ढांचा भी सुरक्षित है और भाषा का महत्त्व स्थापित है ऐसे ही भारतीय बाजार को भारतीय भाषाओं को स्वीकारना होगा क्योंकि भारत भी विश्व का दूसरा बड़ा बाजार है। अंत में यही कहना है कि आधुनिकीकरण की भ्रम पूर्ण व्याख्याओं के कारण हमारी नई पीढ़ी में हीनता आ रही है वह न तो परंपरा से पोषण पा रही है और न ही उसमें पश्चिम की सांस्कृतिक विशेषताएं नजर आ रही हैं। मातृभाषा में शिक्षा के साथ अनेक अन्य आवश्यकताएं भी हैं जो हर भारतीयों को भारत से जोड़ने और विश्व को समझने में सक्षम होने के लिए आवश्यक है। ऐसे में राजनीतिक लाभ को दरकिनार करना सराहनीय कदम होगा।

उप प्रबंधक (कार्मिक),
सिजुआ क्षेत्र, बीसीसीएल

कविता

ये हिंदी

-डॉ. वीरेंद्र कुमार

हमारी पहचान है ये हिंदी
हिंदुस्तानियों की जुबान है ये हिंदी
साहित्यकारों के लिए साधना है ये हिंदी
प्रेमियों के लिए फनकार है ये हिंदी

बाजार के लिए कारोबार है ये हिंदी
कारोबार के लिए बाजार है ये हिंदी
सरकार के लिए सरकार है ये हिंदी

शांति है ये हिंदी, जंग है ये हिंदी
कृति है ये हिंदी, संस्कृति है ये हिंदी
सुधार है ये हिंदी, उपचार है ये हिंदी
संस्कार है ये हिंदी, व्यवहार है ये हिंदी

सैनिको की आवाज है ये हिंदी
बंदूकों की हूंकार है ये हिंदी

किसी के लिए भाषा विषय तो,
किसी के लिए भाषा है ये हिंदी
गुजरात की गूंज है ये हिंदी
बिहार की बहार है ये हिंदी
महाराष्ट्र का मान है ये हिंदी
तो दिल्लीवालों की दिल है ये हिंदी

संगीत है ये हिंदी, लय है ये हिंदी
ताल है ये हिंदी, धुन है ये हिंदी
किसी के लिए रोजगार तो
किसी के लिए व्यापार है ये हिंदी

और मेरे लिए, हाँ! मेरे लिए
मेरे लिए तो पूरा संसार है ये हिंदी

दार्शनिक, लेखक हिंदी प्रेमी
एवं मार्केटिंग विजार्ड

नयी शिक्षा नीति और मातृभाषाएं

समसामयिक आलेख

-दिलीप कुमार सिंह

महात्मा गांधी ने 20 अक्टूबर, 1917 को गुजरात के भड़ौच में एक शिक्षा सम्मेलन में कहा था - "विदेशी भाषा द्वारा शिक्षा पाने में दिमाग पर जो बोझ पड़ता है, वह असह्य है। यह बोझ हमारे बच्चे उठा तो सकते हैं, लेकिन उसकी कीमत हमें चुकानी पड़ती है, वे दूसरा बोझ उठाने लायक नहीं रह जाते हैं। इससे हमारे स्नातक अधिकतर निकम्मे, कमजोर, निरुत्साही, रोगी और कोरे नकलची बन जाते हैं। इससे हम नयी योजनाएं नहीं बना सकते हैं और यदि बनाते हैं, तो उन्हें पूरा नहीं कर पाते हैं।" आजादी के बाद तैयार की गयी तीनों शिक्षा नीतियों में इस बात को ध्यान में रखते हुए मातृभाषा में शिक्षा प्रदान करने की नीतियां बनायी गयी हैं। प्रथम दो शिक्षा नीतियों में मातृभाषा का महत्त्व तो रेखांकित किया गया है लेकिन इसे अध्ययन के सभी स्तरों पर लागू करने की सुपष्ट नीति का अभाव रहा है। इसकी कमी को हाल ही लागू तृतीय शिक्षा नीति में दूर किया गया है। मातृभाषा पर नीति निर्माता समिति की गंभीरता इसी बात से पता चल जाती है कि 24 अध्याय में विभाजित इस नीति में 2 अध्याय मातृभाषा और शिक्षण माध्यम की भाषा व अनुवाद को समर्पित है। इसके साथ ही लुप्तप्राय भाषाओं को बचाने की चिंता भी पहली बार राष्ट्रीय शिक्षा नीति में देखने को मिली है।

इसके अध्याय-4 और अध्याय-22 दोनों में ही शिक्षा के माध्यम के रूप में भाषा, भाषा का संरक्षण व संवर्द्धन और अनुवाद के लिए नीति निर्धारित की गयी है। अध्याय-4 में मातृभाषा और/या स्थानीय भाषा को प्राथमिक शिक्षा का माध्यम और आगे के लिए यथासंभव भारतीय भाषाओं को शिक्षा का माध्यम बनाया जाना निर्धारित किया गया है। अध्याय-22 में समस्त भारतीय भाषाओं, कला और संस्कृति का संवर्धन करने की बात कहते हुए शिक्षा प्रणाली में बहुभाषिकता को समय की आवश्यकता बतायी गयी है। अध्याय 4 में मातृभाषा या स्थानीय भाषाओं में शिक्षण के महत्त्व को रेखांकित करते हुए कहा गया है कि छोटे बच्चे अपने घर की भाषा/मातृभाषा में सार्थक अवधारणाओं को अधिक तेजी से सीखते हैं। ग्रेड-5 तक अनिवार्य रूप से शिक्षा का माध्यम घर की भाषा/मातृभाषा/स्थानीय भाषा/क्षेत्रीय भाषा होनी चाहिए। आगे यह भी कहा गया है कि यह बेहतर होगा कि ग्रेड-8 और उससे आगे तक भी शिक्षा का माध्यम घर की भाषा / मातृभाषा / स्थानीय भाषा / क्षेत्रीय भाषा हो। सार्वजनिक और निजी दोनों तरह के स्कूल इसकी अनुपालना करेंगे। यदि निजी स्कूल इस नीति को मानेंगे तभी इसके अपेक्षित परिणाम सामने आयेंगे। इसमें इस बात को स्पष्ट तौर पर रेखांकित किया गया है कि किसी भाषा को सीखने के लिए इसे शिक्षा का माध्यम होने की आवश्यकता नहीं है। भारत में केवल अच्छी अंग्रेजी सिखाने के उद्देश्य से पूरी प्राथमिक और माध्यमिक शिक्षा व्यवस्था को अंग्रेजी माध्यम से अपनाये जाने का प्रचलन बढ़ता जा रहा है। भले ही छात्र अवधारणाओं को समझने के बजाए रटने पर मजबूर हों। यूनेस्को द्वारा जारी ग्लोबल रिपोर्ट 2005 के एक तथ्य के अनुसार एक बार विषय की मूल अवधारणा अपनी भाषा में समझ में आ जाए तो उच्चतर शिक्षा में किसी भी भाषा में अध्ययन सहज हो सकता है।

दुनिया भर के भाषाविद और शिक्षाविद इस बात पर निर्विवाद रूप से एकमत हैं कि मातृभाषा के माध्यम से शिक्षा प्रदान करने से बालक की मौलिक रचनात्मक प्रतिभा को विकसित करने में निश्चय ही मदद मिलती है। मातृभाषा में शिक्षा से बच्चों की कल्पनाशीलता और सृजनशीलता को बचाया जा सकता है। भाषाविदों का मानना है कि जो बच्चे अपनी मातृभाषा में जितनी ज्यादा पकड़ रखते हैं, वे उतने ही रचनात्मक और तार्किक होते हैं। इससे मस्तिष्क पर अनावश्यक बोझ नहीं पड़ता है। हमारे देश में शिक्षा पर समय-समय पर गठित सभी समितियों, सभी शैक्षिक आयोगों, राष्ट्रीय शिक्षा नीति आदि में शिक्षा का माध्यम मातृभाषा को ही बनाए जाने की बात कही गयी है।

वर्तमान में भारत में मातृभाषा के माध्यम से शिक्षा प्रदान करने वाले स्कूलों की स्थिति और उनकी संख्या लगातार दयनीय होती जा रही है। वहीं अंग्रेजी माध्यम के स्कूल स्थानीय भाषाओं के माध्यम से शिक्षा प्रदान करने वाले स्कूलों को निगलते जा रहे हैं। भारतीय भाषाओं के बहुत से स्कूल अंग्रेजी माध्यम में बदलते जा रहे हैं। इस दिशा में तमाम राज्य सरकारों द्वारा भी कार्य हो रहे हैं। उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, आंध्र प्रदेश और महाराष्ट्र के तमाम सरकारी स्कूलों को चरणबद्ध तरीके से अंग्रेजी माध्यम में बदला जा रहा है। इससे संबंधित तमाम खबरें पिछले वर्षों में समाचार-पत्रों की सुर्खियाँ बनीं। ऐसी स्थितियां भारतीय भाषाओं विशेषकर मातृभाषाओं के लिए बहुत घातक हैं।

आज विडंबना है कि डॉलर में वेतन दिलवाने वाले रोजगार के अवसर अंग्रेजी में ही उपलब्ध हैं। इसके चलते बाजार की मांग अंग्रेजी के पक्ष में ही अधिक है। हालांकि यह स्थिति विश्व में अमेरिका के ताकतवर रहने और विश्व व्यापार की मुद्रा डॉलर के रहने तक ही रहेगी। देश में शैक्षिक परिदृश्य कुछ इस प्रकार का बन गया है कि चारों ओर अंग्रेजी माध्यम के ही स्कूल दिखते हैं। इसी अंग्रेजी की अनिवार्यता से देश की मौलिकता को बहुत बड़ा आघात पहुंचा है। यहाँ पर अंग्रेजी से बैर नहीं है लेकिन उसकी अनिवार्यता देश के लिए घातक बन गयी है। हालांकि एक विदेशी भाषा के रूप में अंग्रेजी सीखना बहुत आवश्यक है। यूनेस्को की ग्लोबल रिपोर्ट 2005 में भी सिफारिश की गयी है कि जातीय रूप से विविधतापूर्ण समुदाय में न्यूनतम 6 वर्षों तक मातृभाषा में शिक्षा देना अनिवार्य है ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि शिक्षा के माध्यम से इतर दूसरी भाषा बोलने वाले मुख्य धारा से पीछे न छूट जाएं।

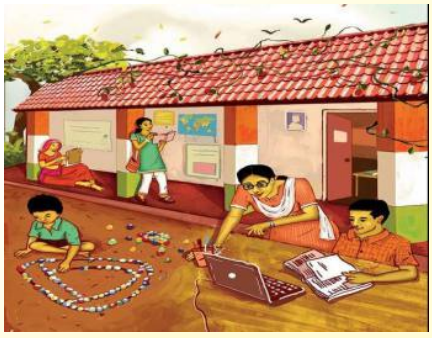

भाषा और संस्कृति का आपस में गहरा रिश्ता है। हमारी संस्कृति हमारी भाषाओं में निहित है। इस नीति के अध्याय-22 में स्पष्ट है कि संस्कृति के संरक्षण, संवर्धन और प्रसार के लिए हमें उस संस्कृति की भाषाओं का संरक्षण और संवर्धन करना होगा।

इसके लिए पहली बार शिक्षा नीति में लुप्त हो चुकी और लुप्त प्राय भाषाओं पर चिंता व्यक्त की गयी है। इसमें उल्लेख किया गया है कि देश ने विगत 50 वर्षों में 220 भाषाओं को खो दिया है। युनेस्को ने 197 भारतीय भाषाओं को लुप्त प्राय घोषित किया है। विभिन्न भाषाएं विलुप्त होने के कगार पर हैं। यदि शिक्षा प्रणाली बहुभाषी होगी और भारतीय भाषाओं को शिक्षा का माध्यम बनाया जाएगा, तो काफी हद तक इस समस्या का निपटान किया जा सकता है। भाषा के लुप्त होने से पूरे समाज को क्षति होती है और हजारों वर्षों में सहेजी गयी विरासत और धरोहर नष्ट हो जाती है। उदाहरण के लिए आदिवासी समाज की भाषाएं आज सर्वाधिक हाशिए पर हैं, और इन भाषाओं में व्यक्त प्रकृति विषयक या अन्य प्रकार के ज्ञान का यदि संरक्षण नही किया जाएगा तो भाषा लुप्त होने के साथ ही ज्ञान भी नष्ट हो जाएगा और अंत में आदिवासी संस्कृति का अस्तित्त्व भी खतरे में पड़ जाएगा।

इसी अध्याय में भारत के संविधान की आठवीं अनुसूची में दर्ज तमाम भाषाओं के समक्ष आसन्न संकट की भी बात उठायी गयी है और कहा गया है कि ये भाषाएं भी कई प्रकार के संकटों का सामना कर रही हैं। भाषाओं को चुनौतीपूर्ण स्थितियों से बचाने के लिए और उनको प्रासंगिक व जीवंत बनाए रखने के लिए उच्चतर गुणवत्तापूर्ण अधिगम एवं प्रिंट सामग्री का सतत प्रवाह बनाए रखने की अपेक्षा भी इस नीति में की गयी है। समसामयिक मुद्दों और अवधारणाओं को इसमें व्यक्त करने की क्षमता बनाने के लिए इन सभी भाषाओं के शब्दकोश और शब्द भंडार को आधिकारिक रूप से लगातार अद्यतन करने की आवश्यकता जतायी गयी है। ऐसा कार्य दुनिया के तमाम देशों द्वारा अपनी भाषाओं की प्रासंगिकता बनाए रखने के लिए किया जाता है। भारतीय भाषाओं में इस दिशा में बहुत कम काम हुआ है। इसीलिए नई संकल्पनाओं और अवधारणाओं को भारतीय भाषाओं में व्यक्त करने में समस्यायें होती हैं।

मातृभाषाओं के संरक्षण से ही भाषाओं और संबंधित संस्कृति को बचाया जा सकता है। ज्ञानवान और सहिष्णु समाज के लिए समाज के बहुभाषिक स्वरूप को बनाए रखना बहुत आवश्यक है। इसलिए नयी राष्ट्रीय शिक्षा नीति में मातृभाषा में शिक्षण को प्रमुख स्थान दिया गया है।

हाल ही में नयी शिक्षा नीति को लेकर आयोजित किये गए एक सम्मेलन में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा कि ये नए भारत की, नई उम्मीदों की, नई आवश्यकताओं की पूर्ति का माध्यम है। पूरे भारत को नयी शिक्षा नीति से बहुत सारी अपेक्षाएं हैं। वर्ष 2022 से इसके अनुसार पढ़ाई शुरू करने की योजना बनायी जा रही है। उम्मीद है कि जिन उद्देश्यों को लेकर नयी शिक्षा नीति बनायी गयी है, उसे प्राप्त करने में सफल होगी।

उप प्रबंधक (राजभाषा)
बी सी सी एल, कोयला भवन।

कविता

कोयले की आत्मकथा

-सुमन कुमार

सदियों तक मैं हूँ पली बढ़ी
धरती के आंचल के नीचे,
मानव ने मुझको याद किया
जब उसके सांस हुए ऊँचे।

फिर होने लगी तलाश मेरी
जंगल-जंगल पर्वत- पर्वत
जैसे माँ सीता को खोजे
नर किन्नर व भालू मरकट।

मुझको धरती पर लाने को
नित होने लगे उपाय नये
नवयंत्रो से सज्जित सेना
आई मेरे पीछे-पीछे।

डोजर ने मुझको सहलाया
ड्रिल ने मुझको अलसित पाया
बारुद ने जब हुंकार भरी
तब जाकर मेरी नींद खुली।

सोवेल के मन्द थपेड़ों में
डंपर की मदभरी चालो में
मुझको पिट-हेड तक पहुँचाया
दुनिया का दर्शन करवाया।

लेकर के अल्प विराम चली
मैं आगे धोबन-शाला में
मेरे स्वागत के लिए खड़े थे
नये-नये संयंत्र वहाँ।

जाली पर मैं उछली कूदी
फीते पर चढ़ ली अंगड़ाई
जिग में जाकर अठखेली की
तब मैंने नवयौवन पाई।

मेरी बहनें कुछ चली गईं
लोगों की क्षुधा मिटाने को
मेरी बहनें कुछ चली गई
महलों में दीप जलाने को
मैं खुद आगे बढ़ चली
चली फौलादों को पिघलाने को।

हे मानव तुम हमसे मापो
अपने जीवन की गहराई
जिसने अपना सब लुटा दिया
उसने फैलाई उजियाली।

परियोजना पदाधिकारी
मधुबन कोल वाशरी, बीसीसीएल

निबंध

नये भारत के निर्माण में स्वच्छ भारत अभियान की भूमिका

-आनंद महतो

हमारे राष्ट्रपिता महात्मा गांधी (बापू) ने कहा था स्वच्छता ईश्वर के भक्ति के समान होती है। इसलिए उन्होंने लोगों को स्वच्छता की शिक्षा दी। उनका सपना था कि एक स्वच्छ भारत का निर्माण हो ओर इसी सपने को पूरा करने के लिए हमारे वर्तमान प्रधानमंत्री श्री दामोदर दास नरेन्द्र मोदी जी ने 2 अक्टूबर 2014 को स्वच्छ भारत अभियान की शुरुआत की। अब इस अभियान को जन-आन्दोलन का रूप दिया गया है। इस अभियान का मुख्य उदेश्य 'खुले में शौच' से भारत को मुक्त करना था लेकिन अब इस अभियान का स्वरूप बदल कर स्वच्छ भारत अभियान ने ले लिया है। बाईबल में लिखा है कि लोगों को पवित्र होना है, पवित्र क्यों होना है ? क्योंकि परमेश्वर पवित्र है। पवित्रता और साफ-सफाई दोनों एक ही सिक्के के दो पहलू है।

नये भारत के निर्माण में स्वच्छ भारत अभियान कि भूमिका पर अगर हम ध्यान देते हैं तो यह अत्यंत उल्लेखनीय है और महत्वपूर्ण है। स्वच्छ भारत अभियान से स्वस्थ भारत तभी संभव हो सकता है, जब भारत को कचरा मुक्त बनाया जायेगा। कचरे का अंबार जब हमारे चारों ओर फैला होता है तो इससे महामारी फैलाने वाले कीटों, चूहों, मच्छरों-मक्खियों द्वारा बीमारियां फैलती है। इसकी रोकथाम के लिए भारत सरकार एवं राज्य सरकार द्वारा लाखों – करोड़ों रूपये खर्च किया जाता है। अगर भारत कचरा मुक्त हो जायेगा तो इस तरह के खर्च को हम बचा सकते है, और एक स्वस्थ भारत का निर्माण भी कर सकते हैं।

आज भारत के कुछ शहरों एवं गांवो में कचरे को जमा करके उसे अलग – अलग किया जाता है। गीला कचरा अलग और सूखा कचरा अलग रखा जाता है। इस कचरे से आधुनिक मशीनों द्वारा जैव-उर्वरक तैयार किया जाता है। सूखे कचरे को पुनर्चक्रण द्वारा विभिन्न प्रकार के ऊर्जा स्रोतों में भी बदल कर उसे दुबारा प्रयोग में लाने के योग्य बनाया जा सकता है। मेरा मामना है कि आज के इस वैज्ञानिक एवं मशीनीकरण के दौर में अगर इस तरह की मशीनें लगाकर वैज्ञानिक तरीके से कचरे का प्रबंधन और उपयोग किया जाय तो स्वच्छता के साथ ही साथ पूरे भारत में रोजगार का भी सृजन हो सकता है। साथ – ही हमारे देश की सबसे बड़ी समस्या बेरोजगारी को दूर करने में भी न्यूनाधिक मदद मिल सकती है।

स्वच्छ भारत अभियान में अगर सबसे बड़ी बाधा है तो वह है कल-कारखानों से निकलने वाला धूल-कण एवं दूषित जल है जो नली-नालों एवं नदियों में कारखानों द्वारा बहाया जाता है। मेरा मानना है कि स्वच्छ भारत अभियान में सिर्फ कचरे को साफ करना ही नहीं है बल्कि वायु, जल एवं मिट्टी को भी स्वच्छ करना होगा। तभी हम संपूर्ण रूप से स्वच्छ भारत का निर्माण करने में भूमिका अदा कर सकते हैं। आज जब हमारी कंपनी कहीं पर खुली खदान खोलती है तो वहाँ का जीवन वायु प्रदूषण से अस्त-व्यस्त हो जाता है। अगर भारत को स्वच्छ बनाना है तो वायु प्रदूषण को रोकने के लिए 'हवा शोषक' मशीनें लगाकर उत्पादन करना होगा। कारखानों से निकलने वाले गंदे पानी को साफ करने वाली मशीनें लगानी होंगी तभी हम एक स्वच्छ भारत के सपने को साकार कर सकते है।

स्वच्छता का सीधा संबंध हमारे स्वास्थ्य है। इसलिए स्वच्छता अभियान स्वस्थ अभियान भी हो सकता है। आज भारत में स्वास्थ्य सेवाओं के लिए केन्द्र एवं राज्य सरकारें अरबों-खरबों रूपये का खर्चा करती हैं। जिससे देश के ऊपर आर्थिक बोझ बढ़ता है। भूतपूर्व राष्ट्रपति डॉ. अब्दुल कलाम ने कहा था कि भारत 2025तक विश्व की प्रमुख आर्थिक शक्ति वाला देश होगा। अगर हम स्वास्थ्य सेवाओं में हो रहे व्यय को बचा लेते हैं तो इसे किसी अन्य क्षेत्र में लगाया जा सकता है।

स्वच्छता अभियान की भूमिका एक नये भारत के निर्माण की दृष्टि से देखा जाय तो इससे एक नये युग की शुरूआत हो सकती है। इस स्वच्छता अभियान से पूंजी की उत्पत्ति हो सकती है, रोजगार का सृजन हो सकता है, लोगों का जीवन स्वास्थ्यमय हो सकता है। सिर्फ लोगों का ही नहीं बल्कि सभी जीव-जंतुओं और पयार्वरण पर भी इसका सकारात्मक प्रभाव पड़ेगा। इसका एक उदाहरण हमने पिछले कुछ महीनों में देखा भी है जब लॉकडाउन के दौरान हम घरों में बैठे हुए थे तो हमारा पर्यावरण कितना शुद्ध हो गया था नदियों का पानी अपने आप स्वच्छ हो गया था। जिस नदी को हम अरबों रूपये खर्च करके भी साफ नहीं कर पाए वह स्वत: ही साफ और निर्मल हो गई।

स्वच्छता से मन पवित्र हो जाता है, और जब मन पवित्र होता है, धन की उत्पत्ति होती है । यानि स्वच्छता का विचार तन, मन, धन से जुड़ा है। तो क्यों न हम इस अभियान में अपना योगदान दें ओर दूसरों को भी योगदान देने के लिए प्रेरित करें। ताकि हम अपने 'बापू' के सपने को साकार करके उन्हें सच्ची श्रद्धांजलि दे सकें।

आइये! हम संकल्प लें कि इस अभियान को सफल बनाने के लिए भरपूर योगदान देंगे। इस अभियान में हमारे राष्ट्र की उन्नति भी जुड़ी है। हम कह सकते है कि भारत के नव निर्माण में स्वच्छता अभियान की महत्वपूर्ण भूमिका हो सकती है।

डाटा इंट्री ऑपरेटर
पश्चिमी झरिया क्षेत्र, बीसीसीएल

साहित्यिक लेख

महाकाव्य से तुकबंदी कविता का विकास

-डॉ. अनिल कुमार अम्बुज

भाषा का आरभिक स्वरूप भावों की अभिव्यक्ति रही जो निरंतर परिमार्जित होती गयी। इसी क्रम में मनीषियों ने जगत को काव्य का उपहार दिया। इस उपहार का प्रथम अलौकिक उपहार महाकाव्य रहा। महाकाव्य का शब्द महत और काव्य दो शब्दों के संयोग से बना है। महत का अर्थात् महान है और काव्य का अर्थ है कवि का कार्य।

भाव –'कवेरिदं कार्य भावो वा' श्रुति के अनुसार काव्य उस मनीषी की सृष्टि है जो स्वयं सम्पूर्ण और सर्वज्ञ है।

कविर्मनीषी परिभू स्वयंभू।

अग्निपुराण में काव्य संसार के रचयिता को प्रजापति माना गया है। वह इतना शक्तिशाली होता है कि अपनी रूचि के अनुसार विश्व में परिवर्तन कर देता है।

अपारे काव्य संसारे, कविरेव प्रजापतिः।

यथा वै रोचते विश्व, तथेद परिवर्तते।

इस कवि के साथ महत् विशेषण के योग से महाकवि बन जाता है और उसका कर्म महाकाव्य की संज्ञा प्राप्त करता है।

संस्कृत महाकाव्य का विकास

महाकाव्य की परंपरा हम वेदों से ही पाते।

फिर तमसा तट ज्योतित होता और आदि कवि आते।।

महाकाव्य की परंपरा वेदों से चली है। महाकाव्य के तत्व वेदों में भी उत्सित होते दिख जाते हैं, परंतु वेद को हम ईश्वरीय कृति के रूप में अवलोकित करते हैं। अतः कहा जा सकता है कि महाकवि वाल्मीकि कृत "रामायण" ही संस्कृत महाकाव्य का प्रथमोत्स है, जिसने सभ्यता को नयी चेतना प्रदान की और महाकाव्य सृजन का मार्ग प्रशस्त किया। मिथुनरत क्रौंच का बहेलिया द्वारा वध के समय महर्षि वाल्मीकि की आंतरिक वेदना मुखरित हुई जो महाकाव्य की रचना का आधार बना।

मा निषाद प्रतिष्ठां,त्वमगमः शाश्वतीः समाः।

यत् कौंच मिथुनादेकम् अवधीः काम मोहितम्।।

विश्वकवि वाल्मीकि का रामायण अपने आप में पूर्ण है जो भारत वर्ष की प्राचीन सभ्यता, संस्कृति का सम्यक निरूपण करता है। रामायण के नायक राम दिव्य नही वरन एक सर्वगुण सम्पन्न मानव है तभी तो कहते हैं

राज्य प्रणशः स्वजनैर्वियोग, पितृर्विनाशो जननी वियोगः।

सर्वाणि में लक्ष्मणः शोकवेग, मापूरयन्ति प्रविचिन्तितानि।।

-रामायण

रामायण के बाद महाकाव्य के प्रवाह को गतिमान बनाने में महाभारत का भी विशिष्ट योगदान है। महाभारत विश्व कवि व्यास की विशिष्ट कृति है। महाभारत से ही कृष्ण काव्य परंपरा का विकसित स्वरूप हम सहज ही प्राप्त कर लेते हैं, इसी प्रसंग में कहा भी जाता है कि -

वाल्मीकि के बाद महाभारत के स्रष्टा आते।

कृष्ण काव्य का शुभारंभ हम इनसे पाते।।

महाभारत के अवगाहणोपरांत हम ऐसे स्थलों को प्राप्त करते हैं जिससे कवि की महत्ता स्वतः सिद्ध हो जाती है। अतः महाभारत एक अलौकिक कृति के रूप में प्रतिभाषित होने लगता है।

खचरस्य सुतस्य सुतः खचरः खचरी जननी न पिता खचरः।

खचरस्य सुतेन हतः खचरः खचरी परिरोदिति हा खचर।।

महाभारत का ही एक अंश गीता है जिसमें हम श्री कृष्ण के उपदशक रूवरूप का अवगाहन करते हैं, तटस्थ भाव से कर्म ही जीवन का मूल मंत्र है इसके बारे में कहा जाता है -

सर्वोपनिषदों गावो दोग्धा गोपाल नन्दनः।

पार्थो वत्सः सुधीर्भोक्ता दुग्धं गीतामृतं महत्।।

यानी गीता सभी उपनिषदों का सार है जो गाय स्वरूप है और श्री कृष्ण गौ दुह रहे हैं, अर्जुन गौ-संतान और विद्जन और भक्त अमृत-पान करने वाले हैं।

रामायण और महाभारत का स्वतंत्र अस्तित्व और उनकी पारस्परिक स्थिति का स्पष्टीकरण हो जाने पर संस्कृत साहित्य की सर्वांगीण समृद्धि के लिए उनके द्वारा कितना हित हुआ, इसको जान लेने के बाद उनकी सार्वभौम सत्ता सहज ही प्रतिपादित होती है।

रामायण और महाभारत के जिन विभिन्न व्याख्याओं, आख्यानों का वर्णन हम प्राप्त करते हैं, वे ही संस्कृत महाकाव्यों के उदभव हैं और उन्हीं का संकलन संशोधन और परिवहन रामायण महाभारत का कलेवर निर्मित होकर उनसे महाकाव्यों की एक प्रौढ परंपरा का अनुवर्तन हुआ। दोनों में से रूप शिल्प, विषय वस्तु लेकर महाकाव्यों की परंपरा आगे बढ़ी। अश्वघोष, कालीदास, भारवी, माघ और श्री हर्ष के महाकाव्यों में शिल्प संबंधी तत्त्व, अलंकार योजना, रूपकों, उपमाओं का आधिक्य और प्रकृति चित्रण सभी का आधार रामायण ही है।

महाकाव्यों के क्रमिक विकास में रामायण और महाभारत का नाम प्रथम में है। इसमें जीवन और जगत का सम्यक निरूपण हुआ। महाकाव्य के तत्वों के अनुसार दोनों आदि महाकाव्य हैं। दोनों सर्गबद्ध, अलंकृत, गेय हैं, जिसका नायक उच्च चरित्र का वीर पुरुष है। इसमें प्रकृति का वर्णन भी है।

अलंकृत शैली के शास्त्रीय महाकाव्यों में पहली श्रेणी में अश्वघोष और कालीदास के सभी महाकाव्य तथा कुमारदास का 'जानकी हरण' रखे जा सकते हैं। दूसरी श्रेणी में शास्त्रीय काव्य रीतिबद्ध महाकाव्य है जिसमें भारवि का 'किरातर्जुनीय', वाक्पतिराज का 'गउवहो', रत्नाकर का 'हरविजय', शिवस्वामी का 'कप्फिणाम्युदय: 'मंरवक का 'श्रीकंठचरित'आदि की गणना की जा सकती है।

तीसरी अलंकृत शैली के वे महाकाव्य जिन्हें शब्द चमत्कार प्रधान की संज्ञा दी जा सकती है। इसमें भट्टि का 'भट्टिकाव्य', हेमचन्द्र का 'कुमार पाल चरित', धनंजय का 'द्विसंधान'संध्याकरनंदी का 'रामचरित', विद्यामाधव का 'पार्वती - रुक्मिणीय' और हरिदत्त सूरि का 'राधवनैषधीय 'प्रमुख हैं।

महाकवि कालीदास से संस्कृत के काव्य साहित्य का सम्यक अभ्युदय और साथ ही उसकी समृद्धशाली परंपरा का होता है।

कालीदास ने अपने असामान्य प्रतिभा और साधना से संस्कृत साहित्य को समृद्ध किया। जिससे जगत को नई दिशा मिली उनकी उज्ज्वल कीर्ति आज देश काल की परिधि को तोड़कर सार्वदेशिक और सार्वकालिक महत्त्व प्राप्त कर रही है, आज भी विश्व कवि के उच्चासन पर आरूढ़ हैं, तभी तो कहा जाता है।

पुराकवीनां गणना प्रसंगे, कनिष्ठिका धिष्ठित कालीदास:

अद्यापि तत्तुल्यकवेर भावाद, अनामिका सार्भवती बभूव।

कहने का अर्थ कि कालीदास का नाम प्रारंभ कारण कनिष्ठिका पर आया लेकिन अनामिका पर गणना नहींआ सकी यानि भविष्य में कोई भी उनके समकक्ष भी नहीं आ पायेगा। इनके सात ग्रंथों ने अखंड भारत की परिकल्पना की। 'रघुवंश'के 19 सर्गों में 29 राजाओं का वर्णन है। रघुवंश एक राष्ट्रीय महाकाव्य है। इसी में अंखड भारत का दर्शन है। प्रत्येक प्रदेश का वर्णन इसमें पाया जाता है। भारत की सुषमा को निरुपित करती यह रचना कालजयी बनी।

राजा रघु के दिग्विजय, इंदुमति का स्वयंवर और लंका विजयोपरांत वापसी इन प्रकरणों में भारतीय प्रदेशों के सही वर्णन में राष्ट्रीय अखंडता और देश प्रेम और प्रकृति का चित्रण है। रघुवंश के प्रारम्भ में कालीदास ने आदि शक्ति शिव और जननी पार्वती की वंदना करके भारतीय संस्कृति के महत्व को अक्षुण्ण रखा गया है यथा

वागर्थाविव संपृक्तौ, वागर्थप्रतिपत्तये।

जगत: पितरौ वन्दे पार्वतीपरमेश्वरौ।।

वाणी और अर्थ के समान मिले हुए जगत के माता-पिता शिव-पार्वती की वाणी और अर्थ हेतु वंदना करता हूँ।

कालीदास की परंपरा को आगे बढ़ाने वाले भारवी का नाम आदर के साथ लिया जाता है। इनकी कृति कीरातार्जुनीयम् की गणना संस्कृत के बृहत्त्रयी (किरात,माघ, नैषध)में की गयी है। षष्ठी-सातवीं शती के इस ग्रंथ में शिव और अर्जुन के माध्यम से राजनीति, धर्मनीति, कूटनीति, समाजनीति, युद्धनीति और जन-जीवन का मनोरम चित्रण है। इस रचना का परवर्ती प्रभाव सदियों से चला आ रहा है। इस समय संस्कृत जन भाषा और विद्वान जन की भाषा से भी अपना स्थान खोने लगी। प्रयत्न लाधव मुख-सौकुमार्य के कारण और कुछ विद्वान और जाति बोधकता की रूढ़ियों ने देवभाषा का प्रभाव को कम किया। यहीं एक भाषा जन्म लिया। युग का रूप बदला और भाषा का स्वरूप भी बदला।

संस्कृत पूर्णतः वैज्ञानिक भाषा रही है और इसका प्रभाव विश्व की सभी भाषाओं पर है। सभी भारतीय भाषाओं पर इसका स्पष्ट और सीधा प्रभाव है। कम्प्यूटर के लिए यह भाषा सबसे ज्यादा प्रासंगिक है। दुखद बात यह है कि इसे इसका उचित स्थान न मिल सका। भारतवर्ष में भाषा बदलती रही। हर भाषा ने हमारी सभ्यता और संस्कृति को सुदृढ़ किया।

वरिष्ठ अनुवादक
मंडल रेल प्रबंधक का कार्यालय, धनबाद

कविता

जी हाँ, मैं मजदूर हूँ

-राजपाल यादव

जी हाँ मैं मजदूर हूँ
सत्ता से कोसों दूर हूँ
शायद इसीलिए-
असहाय मजबूर
बेबस लाचार
और अन्य जितनी भी बेचारगी भरी संज्ञाएँ क़ैद हैं
शब्दकोश के पन्नों में
सब की सब
लागू होती हैं आज मुझ पर।

दूसरी ओर-
जब भी राष्ट्र निर्माण की बात आती है
नई परियोजना की शुरुआत की जाती है
गगनचुंबी इमारतों की नींव रखी जाती है
कल-कारखानों की आधारशिला रखी जाती है
फक्र से याद किया जाता है मुझे
क़सीदे कढ़े जाते हैं श्रम की महत्ता के
बांधे जाते हैं तारीफ़ों के पुल
मेरे काम को लेकर
की जाती है प्रशंसा
मेरे अनवरत संघर्ष की।
मन में सुनहरे भविष्य के स्वप्न संजोये
हज़ारों मील का सफ़र तय कर
मैं भी आ जाता हूँ महानगर में
झोकनें शरीर को
कारखानों की तपती भट्टियों में।

महक उठता है मेरे श्रम की बूँदो से
महानगर
फलने-फूलने लगता है धन्ना सेठों का
कारोबार
ऊँची होती जाती हैं पाँच सितारा होटलों की इमारतें
मेरे कंधो की मज़बूती से
बढ़ने लगता है मुनाफ़ा
कल-कारखानो का
मेरे ही अथक परिश्रम की बदौलत।
और मैं-
पैरों में छाले तथा
हाथों में फ़ाले लिए
देखता रहता हूँ
मुंगेरी लाल के हसीन सपने।

हद तो तब होती है-
जब संकटकालीन परिस्थितियों में
पड़ जाते हैं खाने के लाले
छोड़ देते हैं सब मुझे
बीच भँवर
फेर लेते हैं मुँह
तथाकथित रहनुमा
उदासीन हो जाती हैं
सरकारें
छोड़कर मुझे मेरे हाल पर
देखने के लिए टूटते हुए मेरे
भविष्य के सुनहरे सपने।

और तब-
अपनी ग़लती क़बूल करता हुआ
पूछ बैठता हूँ मन ही मन
कौन हूँ मैं ?
क्या है मेरा वजूद ?
मन के किसी कोने से टीस उभरती है-
मैं तो मजदूर हूँ
सत्ता से दूर हूँ
तभी तो संजो कर रखे हैं
शब्दकोशों में कुछ शब्द-
असहाय मजबूर
बेबस लाचार व बेचारा भी
सिर्फ़ और सिर्फ़ मेरे लिए !!

पू.महाप्रबंधक (का/औ.स.एवं रा.भा.)
बीसीसीएल,
सम्प्रति-आरडी सिटी गुरुग्राम

कविता

पापा झट से ला देते थे

पापा झट से ला देते थे
जब मैं कहती ला दो गुड़िया
ख़ुश इतना मैं हो जाती जैसे
खुल गई कोई जादू की पुड़िया।

छोटे छोटे पल की थी वो
ढेरों मोटी मोटी ख़ुशियाँ
चोक्लेट की छोटी तिरतिरी पन्नी में
मिल जाती थी बड़ी सी दुनिया।

अब जीवन है कुछ ठहरा-ठहरा
पापा का वो नहीं है चेहरा
समय की गहरी सिलवटें ये
डाल बैठी हैं एक ऐसा पहरा।

चाल हर क्षण थकी थकी है
आयु बेल ये पकी पकी है
कहने को मन में शब्द कई पर,
अब ध्वनि मुख में ही रुकी रुकी है।

क़दमों की गति का धीरे हो जाना
कुछ कहना कह कर फिर भूल जाना
हँसते हँसते पापा रो पड़ते हैं अक्सर
ऐसा भी होगा किसने था ये जाना।

साँसो की टूटे जब कड़ियाँ
किस से माँगू जीवन की लड़ियाँ
अब ये तो बस एक मौन प्रश्न है
शायद उत्तर दे जादू की पुड़िया
पापा झट से ला देते थे
जब मैं कहती ला दो गुड़िया।

प्रेमलता पिंकी वैष्णव
हिंदी-उर्दू प्राध्यापक
संयुक्त राज्य अमेरिका

प्रेम शरण है

प्रेम तपन है
प्रेम अगन है
प्रेम चुभन है
प्रेम मिलन है
प्रेम बस एक शब्द नहीं
आत्माओं का पूर्ण बंधन है
नैनों से मन तक पहुँचे जो,
प्रेम दृष्टि का शुद्ध नमन है।

प्रेम व्यथा है
प्रेम कथा है
प्रेम समर्पण
मन का दर्पण
प्रेम दशा है प्रेम दिशा है
प्रेम ही दिन और प्रेम निशा है।
उड़ता बादल, बहती पुरवा,
कल कल नदिया अविस्तार गगन है

प्रेम क्षितिज है
प्रेम निहित है
प्रेम तृष्णा है
प्रेम कृष्णा है
प्रेम सत्य है, प्रेम कृत्य है
प्रेम पथिक जो निरा नित्य है
क्षण भर में चित्त रस में डूबे
प्रेम वही एक भाव क्षणिक है।

प्रेम भोर है
प्रेम किरण है
प्रेम त्याग है
प्रेम वरण है।
ना कोई है लक्ष्मण रेखा
ना ही सम्बन्धों की गाँठ,
प्रेम मंदिर की मोहिनी मूरत
और प्रेम ही ब्रह्म शरण है।

-राजेन्द्र राम

नेह पगे शब्द

(१)
इंस्टाग्राम, मैसेंजर, व्हाट्सएप
मोबाइल के नक्कार खाने में
मैं अपने शब्द
सहेजता हूं
जैसे कोई बंगालन
सहेजती है प्रेम
गहने के बक्से में।।
(२)
जैसे लदे-फदे गूलर फलों
के बीच
अदृश्य रहता है उसका
पुष्प
जीवट गुलमोहर की ऑखों में
लाजवंती की तरह
बसता है
प्रेम...!!
(३)
कुछ सपने मन-समाधि में रहते हैं
कुछ सपने उझकते हैं
मन की ओट से
कुछ सपने अव्यक्त भटकते हैं
कुछ को मिल जाती है
शब्दिता !!
(४)
कुछ लोग इरादतन
अपनी तलैया को
पंकिल रखते हैं
ताकि
दृष्टि ओट रह पाए
परन्तु
सारी आँखें
बगुला नहीं होती
पपीहा भी होती हैं
कुछ।।

-बोर्ड सचिवालय
बीसीसीएल, मुख्यालय

कविता

स्वच्छ भारत अभियान

-कृष्ण देव यादव

जो सरहद पर तो जा न सके, पर अपना फ़र्ज़ निभाते हैं।
अस्वच्छता नामक शत्रु से भारत देश बचाते हैं।।
दो पल वतन के आज उनके नाम करता हूँ
जो सड़क-नाले साफ करते हैं उन्हें सलाम करता हूँ।

साफ-सफाई का सपना था, बापूजी के ध्यान में।
आओ सब मिलकर हाथ बटाएँ, स्वच्छ भारत अभियान में।।

घर-आँगन की करें सफाई, साफ दिखे हर कोना।
इधर-उधर मत फेंको कूड़ा, दिल में यही संजोना।
करो इकट्ठा एक साथ सब, डालो कूड़ेदान में।
आओ सब मिलकर हाथ बटाएँ स्वच्छ भारत अभियान में।।

गलियों और पार्कों में भी, साफ़- सफाई रखना।
अपने आँगन की तरह ही, सदा इनको आप समझना।
खुद भी रहो बच्चे भी खेलें, इसी खेत - खलिहान में।
आओ सब मिलकर हाथ बटाएँ स्वच्छ भारत अभियान में।।

हर घर में शौचालय होवे, खुले शौच ना जाना।
बहन-बेटियों को भी हरदम, बात यही समझाना।
आदत यही बनाओ मिलकर, बूढ़े और जवान में।
आओ सब मिलकर हाथ बटाएँ स्वच्छ भारत अभियान में।।

अस्पताल हो कार्यालय हो, विद्यालय या सचिवालय।
साफ-सफाई हरदम राखें, समझें इन्हें शिवालय।
इसे देख मेहमान भी समझें, आये देश महान में।
आओ सब मिलकर हाथ बटाएँ स्वच्छ भारत अभियान में।।

साफ- सफाई का सपना था, बापूजी के ध्यान में।
आओ सब मिलकर हाथ बटाएँ स्वच्छ भारत अभियान में।।

उप निरीक्षक
भागाबांध कोलियरी, पुटकी बलिहारी क्षेत्र
भारत कोकिंग कोल लिमिटेड

स्वच्छता – सन्देश

- मो० सलीम अंसारी

स्वच्छता की संभालो कमान।
देशवासियो ! करो श्रमदान।।

चलता रहे स्वच्छता अभियान।
स्वच्छता ही सेवा है श्रीमान।।

स्वच्छ रखें प्रत्येक स्थान।
स्वस्थ रहे हर एक इंसान।।

खाकर तम्बाकू, गुटखा व पान।
जहाँ- तहाँ न थूकें श्रीमान।।

कोनों को न बनाएं पीकदान।
सदा प्रयोग करें कूड़ादान।।

गंदगी फैलाने वाले रहें सावधान।
बीमारियाँ होने का है अनुमान।।

पॉलीथिन में न लायें सामान।
घर से थैला लेकर जाएं दुकान।।

पर्यावरण को बचाने में करें योगदान।
सदा चलाएँ जागरूकता अभियान।।

पराली को न जलाएं किसान।
पर्यावरण को न हो नुकसान।।

सब-जन मिलकर करें आह्वान।
जंगलों को न करें वीरान।।

वृक्षफलदार हो या सखुआ- सागवान।
प्रत्येक वृक्ष है पुत्र सामान।।

वृक्षारोपण पर सदा दें ध्यान।
हरा- भरा रखें घर उद्यान।।

जल संचय का बनाएं प्लान।
सोक-पिट का करें निर्माण।।

चलो, मिलकर हम सब लेते हैं ठान।
प्रदूषण मुक्त रखेंगे हिंदुस्तान।।

गांधीजी का एक ही अरमान।
स्वच्छता में हिन्द का हो प्रथम स्थान।।

स्वच्छता की संभालें कमान।
देशवासियो ! करो श्रमदान।।

पुटकी बलिहारी क्षेत्र
भारत कोकिंग कोल लिमिटेड

नव कोंपल

नाम- अक्सज उज्जैन कक्षा- 3

मनस्वी सिंह,
कक्षा-प्रेप, दिल्ली पब्लिक स्कूल धनबाद

बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ

क्यों न उसको स्वीकारे मन
बेटियाँ तो हैं ईश्वर का उपहार
मत छीनो इनके जीने का अधिकार
कैसे खाओगे उनके हाथ की रोटियाँ
जब पैदा ही नहीं होने दोगे बेटियाँ
मुझे दुनिया देखने दो
माँ नहीं तो बेटी नहीं
बेटी नहीं तो बेटा नहीं।

नाम- विनीता सिंह
कक्षा- 9
डी ए वी पब्लिक स्कूल
कोयला नगर धनबाद

राजभाषा समाचार

नराकास धनबाद द्वारा राजभाषा प्रतियोगिताओं का आयोजन

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति धनबाद की दिनांक 22 अक्तूबर, 2020 को आयोजित छमाही बैठक में सर्वसम्मति से लिए गए निर्णय के अनुसार सदस्य कार्यालयों में राजभाषा कार्यान्वयन के प्रति जागरूकता बढ़ाने के उद्देश्य से ऑनलाइन माध्यम से निम्नलिखित प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया-

1. **राजभाषा प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता** –राजभाषा प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता का आयोजन दिनांक 04 नवंबर, 2020 को ऑनलाइन माध्यम से किया गया। इस प्रतियोगिता में विभिन्न सदस्य कार्यालयों के लगभग 110 अधिकारियों व कर्मचारियों द्वारा भागीदारी की गयी। इस प्रतियोगिता में प्रतिभागियों से राजभाषा नीति और हिंदी ज्ञान संबंधी बहुविकल्पीय प्रश्न पूछे गए थे। प्रतियोगिता में निम्नलिखित प्रतिभागी विजयी रहे-

क. श्री नंदलाल अग्रवाल, मुख्य प्रबंधक (खनन), बीसीसीएल - प्रथम

ख. श्री रवि कुमार, एसोशिएट, भारतीय स्टेट बैंक - द्वितीय

ग. श्रीमती श्वेता कुमारी, सहायक प्रबंधक (सामुदायिक विकास), बीसीसीएल – तृतीय

घ. श्री मृत्युंजय कुम्भकार, व. निरीक्षक प्रभारी (कोयला), सेल-सीसीएसओ - प्रोत्साहन

ङ. श्री मार्केंडय पांडेय, वरिष्ठ ए एल पी, मंडल रेल प्रबंधक का कार्यालय, धनबाद - प्रोत्साहन

2. **हिंदी टिप्पण एवं निबंध प्रतियोगिता** – हिंदी टिप्पण एवं निबंध प्रतियोगिता का आयोजन दिनांक 06 नवंबर, 2020 को ऑनलाइन माध्यम से किया गया। इस प्रतियोगिता में विभिन्न सदस्य कार्यालयों के लगभग 50 अधिकारियों व कर्मचारियों द्वारा भागीदारी की गयी। इस प्रतियोगिता में प्रतिभागियों से कार्यालयीन पत्रलेखन और निबंध लिखने से संबंधित विस्तृत उत्तरीय प्रश्न पूछे गए। प्रतियोगिता में निम्नलिखित प्रतिभागी विजयी रहे-

क. सुश्री प्रिया सिंह, उप प्रबंधक (कार्मिक), जनसूचना विभाग, बीसीसीएल - प्रथम

ख. श्री चंदन कुमार श्रीवास्तव, उप प्रबंधक (कार्मिक), सिजुआ क्षेत्र, बीसीसीएल -द्वितीय

ग. श्री सत्येंद्र प्रताप सिंह, कांस्टेबल, केंद्रीय औद्योगिक सुरक्षा बल – तृतीय

घ. श्री सुनील सोरेंग, कनिष्ठ सचिवालय सहायक, सिंफर - प्रोत्साहन

3. **अनुवाद एवं शब्दावली प्रतियोगिता** - अनुवाद एवं शब्दावली प्रतियोगिता का आयोजन दिनांक 09 नवंबर, 2020 को ऑनलाइन माध्यम से किया गया। इस प्रतियोगिता में विभिन्न सदस्य कार्यालयों के लगभग 50 अधिकारियों व कर्मचारियों द्वारा भागीदारी की गयी। इस प्रतियोगिता में प्रतिभागियों से हिंदी-अंग्रेजी अनुवाद, शब्दावली आदि से संबंधित बहुविकल्पीय प्रश्न पूछे गए। प्रतियोगिता में निम्नलिखित प्रतिभागी विजयी रहे-

क. श्री नंदलाल अग्रवाल, मुख्य प्रबंधक (खनन), बीसीसीएल - प्रथम

ख. श्री मनोज कुमार पाठक, वरिष्ठ निरीक्षक प्रभारी, सेल-सीसीएसओ - द्वितीय

ग. श्री सूरज कुमार, सहायक प्रबंधक, बीसीसीएल - तृतीय

घ. सुश्री प्रिया सिंह, उप प्रबंधक (कार्मिक), बीसीसीएल - प्रोत्साहन

4. **चित्रलेखन प्रतियोगिता** – चित्रलेखन प्रतियोगिता का आयोजन दिनांक 11 नवंबर, 2020 को ऑनलाइन माध्यम से किया गया। इस प्रतियोगिता का आयोजन नराकास धनबाद के सदस्य कार्यालयों में कार्यरत अधिकारियों व कर्मचारियों के कक्षा-5 से कक्षा-12 तक के स्कूली बच्चों के लिए किया गया। प्रतियोगिता में दिए गए चित्र के आधार पर अधिकतम 12 पंक्तियों की एक कविता लिखनी थी। इस प्रतियोगिता के विजयी प्रतिभागी निम्नलिखित हैं-

क. श्री मेहुल मयंक पुत्र श्री रोशन कुमार सिंह, कक्षा-10, सेंट जेवियर इंटरनेशनल स्कूल - प्रथम

ख. सुश्री वैभवश्री चौरणिया पुत्री श्री शुभकरण चौरणिया, कक्षा-5, डिनोबिली स्कूल - द्वितीय

ग. सुश्री निहारिका कुमारी मेहता पुत्री श्रीमती रिंकु कुमारी, कक्षा-10, धनबाद पब्लिक स्कूल - तृतीय

घ. सुश्री कृति सिन्हा पुत्री श्रीमती प्रीति सिन्हा, कक्षा-11, कार्मेल स्कूल - प्रोत्साहन

राजभाषा कार्यान्वयन के प्रमुख बिंदु

1. हिंदी पत्रों के जवाब सदैव हिंदी में
2. धारा 3 (3) के दस्तावेज सदैव द्विभाषी रूप में।
3. मूल रूप से हिंदी में ही पत्राचार करें।
4. सभी प्रकार की मुद्रित सामग्री सदैव द्विभाषी रूप में तैयार करें।

हिंदी में कार्य करना संवैधानिक दायित्व है।

राजभाषा समाचार

बीसीसीएल में राजभाषा पखवाड़ा-2020 का सफल आयोजन

भारत कोकिंग कोल लिमिटेड में प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी राजभाषा पखवाड़ा-2020 का आयोजन बहुत हर्ष और उल्लास के साथ किया गया। यह आयोजन बीसीसीएल के सभी क्षेत्रों और मुख्यालय में दिनांक 01 से 15 सितंबर, 2020 के दौरान आयोजित किया गया। कार्यालय में हिंदी में कार्य करने के लिए जागरूकता बढ़ाने के उद्देश्य से इस अभियान में विविध गतिविधियाँ आयोजित की गयीं। वैश्विक महामारी कोविड-19 को दृष्टिगत रखते हुए इस वर्ष सभी आयोजन ऑनलाइन माध्यम से किए गए।

राजभाषा पखवाड़ा – 2020 का शुभारंभ दिनांक 01 सितंबर, 2020 को ऑनलाइन माध्यम से अध्यक्ष-सह-प्रबंध निदेशक और निदेशक (कार्मिक) द्वारा संयुक्त रूप से किया गया। इस अवसर पर एक वीडियो संदेश के माध्यम से अध्यक्ष-सह-प्रबंध निदेशक और निदेशक (कार्मिक) द्वारा सभी कर्मियों को राजभाषा पखवाड़ा की शुभकामनाएँ दी गयीं और कार्यालय में संपूर्ण कार्य हिन्दी में ही करने और राजभाषा प्रतियोगिताओं में उत्साहपूर्वक भाग लेने की अपील की गयी।

राजभाषा पखवाड़ा-2020 के दौरान दिनांक 03 सितंबर, 2020 को ऑनलाइन हिंदी प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता आयोजित की गयी। इस प्रतियोगिता में बीसीसीएल मुख्यालय के लगभग 80 प्रतिभागियों द्वारा भागीदारी की गयी। दिनांक 07 सितंबर, 2020 को ऑनलाइन हिंदी अनुवाद प्रतियोगिता आयोजित की गयी। इस प्रतियोगिता में लगभग 60 प्रतिभागियों द्वारा भागीदारी की गयी। ये दोनों ही प्रतियोगिताएं राजभाषा विभाग द्वारा विकसित पोर्टल myhindischool.com पर आयोजित की गयीं।

दिनांक 09 सितंबर, 2020 को कॉरपोरेट स्तरीय ऑनलाइन हिंदी स्वरचित कविता पाठ प्रतियोगिता का आयोजन गूगल मीट के माध्यम से किया गया। इस प्रतियोगिता में सभी क्षेत्रों और मुख्यालय के

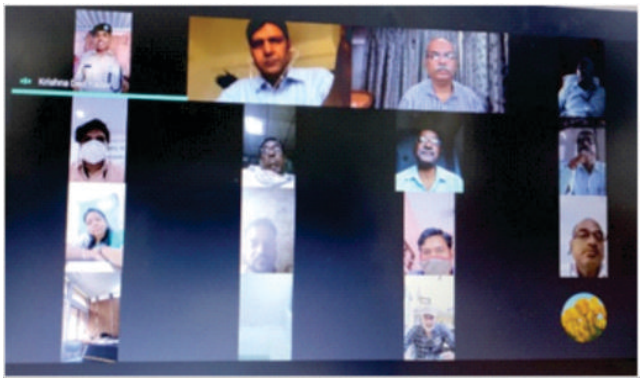

चुने हुए प्रतिनिधियों द्वारा काव्य पाठ किया गया।

गूगल मीट के माध्यम से कविता प्रतियोगिता का आयोजन

इस प्रतियोगिता में निर्णायक मंडल के सदस्य के रूप में श्री राजपाल यादव, पूर्व महाप्रबंधक (कार्मिक एवं राजभाषा), बीसीसीएल, डॉ. के. एस. सिन्हा, वरिष्ठ प्रबंधक (विधि) और श्री उदयवीर सिंह, उप प्रबंधक (राजभाषा) थे। प्रतियोगिता में लगभग 30 प्रतिभागियों द्वारा काव्य प्रस्तुति दी गयी। प्रतियोगिता के अंत में श्री राजपाल यादव और डॉ. के. एस. सिन्हा द्वारा समीक्षात्मक वक्तव्य दिया गया।

दिनांक 14 सितंबर, 2020 को तल-3 सभागार कोयला भवन में हिंदी दिवस समारोह का आयोजन किया गया। समारोह की अध्यक्षता श्री राकेश कुमार, निदेशक (तकनीकी/संचालन) द्वारा की गयी। उन्होंने अध्यक्षीय वक्तव्य देते हुए कहा कि हिंदी बहुत ही सरल व रोचक भाषा है तथा इसका साहित्य बहुत ही संपन्न है। हिंदी के विशाल और समृद्ध साहित्य ने इसकी लोकप्रियता को बहुत बढ़ाया है। भारत में हिंदी मोती के माले के उस धागे की तरह है जो सभी भाषा रूपी मोतियों को जोड़कर रखता है। उन्होने इस अवसर पर प्रकाशित की जाने वाली कार्यालय सहायिका की सराहना करते हुए कहा कि यह बहुत उपयोगी पुस्तिका है।

इसी अवसर पर निदेशक (तकनीकी/परियोजना व योजना)

श्री चंचल गोस्वामी ने कहा कि इस वर्ष सभी प्रतियोगिताओं का ऑनलाइन आयोजन किया गया। इस महामारी के दौर में यह बहुत आवश्यक है। उन्होंने सभी प्रतिभागियों को इस अवसर पर बधाई देते हुए कहा कि आप हर दिन हिंदी में अधिक से अधिक कार्य करें।

श्री पी वी के आर मल्लिकार्जुन राव, निदेशक (कार्मिक) ने सभी अधिकारियों और कर्मचारियों को हिंदी में अधिक से अधिक कार्य करने का आह्वान करते हुए कहा कि हम वर्ष भर हिंदी में अधिक से अधिक कार्य करने का प्रयास करें। राजभाषा संबंधी लक्ष्य प्राप्त करने के लिए हमें निष्ठा, प्रतिबद्धता और अभ्यास को अपने कार्य का अहम हिस्सा बनाना होगा। उन्होने इस अवसर पर कंपनी में राजभाषा के प्रति और अधिक सकारात्मक और उत्साहवर्धक माहौल बनाने के लिए कई सुझाव दिए।

कार्यक्रम का शुभारंभ कोल इंडिया कॉरपोरेट गीत के साथ हुआ। इसके पश्चात हिंदी के प्रतिष्ठित साहित्यकार सूर्यकांत त्रिपाठी निराला को श्रद्धांजलि अर्पित की गयी। निदेशक मंडल का स्वागत हिंदी की पुस्तकें प्रदान कर किया गया।

इस अवसर पर कंपनी की गृह पत्रिका 'कोयला भारती' के अंक-33 का विमोचन किया गया। पहली बार इस पत्रिका को डिजिटल और मुद्रित दोनों ही रूपों में प्रकाशित कराया गया। इसके पश्चात राजभाषा विभाग द्वारा तैयार की गयी पुस्तिका 'कार्यालय सहायिका' का विमोचन भी निदेशक मंडल द्वारा किया गया।

हिंदी दिवस समारोह में बीसीसीएल के वार्षिक राजभाषा पुरस्कार डॉ. शंकर दयाल सिंह स्मृति राजभाषा सम्मान – 2020 से क्षेत्रों और विभागों को सम्मानित किया गया। क्षेत्रों में प्रथम पुरस्कार बस्ताकोला क्षेत्र, द्वितीय पुरस्कार सिजुआ क्षेत्र, तृतीय पुरस्कार लोदना व कुसुंडा क्षेत्र को प्राप्त हुआ। मुख्यालय के विभागों में प्रथम पुरस्कार वीआईपी प्रकोष्ठ, द्वितीय पुरस्कार पीएफ व पेंशन विभाग और भूसंपदा विभाग तथा तृतीय पुरस्कार जनसंपर्क विभाग, औद्योगिक संबंध विभाग, कर्मचारी स्थापना विभाग को प्राप्त हुआ। समारोह में पखवाड़ा के दौरान आयोजित की जाने वाली अन्य प्रतियोगिताओं के विजयी प्रतिभागियों के नाम की घोषणा भी की गयी।

समारोह में गृह मंत्री, भारत सरकार, कोयला मंत्री, भारत सरकार, अध्यक्ष, कोल इंडिया लिमिटेड और सचिव, राजभाषा विभाग के संदेश का भी वाचन किया गया। कार्यक्रम में स्वागत वक्तव्य, राजभाषा पखवाड़ा की रिपोर्ट प्रस्तुतीकरण और धन्यवाद ज्ञापन श्री दिलीप कुमार सिंह, उप प्रबंधक (राजभाषा) द्वारा किया गया। उनके द्वारा कहा गया कि बीसीसीएल का राजभाषा विभाग सदैव आपके सहयोग के लिए तत्पर है। हिंदी में काम करने में किसी प्रकार की समस्या होने पर राजभाषा विभाग में संपर्क करें। कार्यक्रम का संचालन श्री उदयवीर सिंह, उप प्रबंधक (राजभाषा) द्वारा किया गया।

कार्यक्रम का सजीव प्रसारण फेसबुक लाइव, यूट्युब लाइव और कंपनी की वीडियो कॉन्फ्रेन्सिंग सेवा के माध्यम से किया गया। इन माध्यमों से बीसीसीएल के क्षेत्रों से बहुत से अधिकारी व कर्मचारी कार्यक्रम से सीधे जुड़े। कोविड-19 महामारी से बचने के लिए निर्धारित मानक संचालन प्रक्रिया (एसओपी) का पालन करते हुए संपूर्ण कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

राजभाषा समाचार

नराकास धनबाद की छमाही बैठक संपन्न

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की छमाही बैठक दिनांक 22 अक्तूबर, 2020 को अध्यक्ष कार्यालय बीसीसीएल के निदेशक (कार्मिक) श्री पी वी के आर मल्लिकार्जुन राव की अध्यक्षता में गूगल मीट के माध्यम से आयोजित की गयी। बैठक की अध्यक्षता करते हुए श्री राव ने कहा कि नराकास धनबाद द्वारा पूर्व वर्षों में राजभाषा को बढ़ावा देने के लिए बहुत से प्रयास किए गए हैं। इसमें राष्ट्रीय स्तर का राजभाषा सम्मेलन, राजभाषा प्रतियोगिताओं का आयोजन, राजभाषा प्रदर्शनी का आयोजन, कवि सम्मेलन आदि प्रमुख हैं। इन गतिविधियों की वजह से इस समिति की पहचान पूरे क्षेत्र में बनी हुई है। आज की छमाही समीक्षा बैठक में सदस्य कार्यालयों की तिमाही हिंदी प्रगति रिपोर्ट की समीक्षा की गयी। जिन कार्यालयों ने लक्ष्य के अनुरूप हिंदी पत्राचार नहीं किया है, उनके प्रमुखों से मेरा अनुरोध है कि आप अपने कार्यालय में भारत सरकार द्वारा जारी लक्ष्यों के अनुरूप कार्य करवाना सुनिश्चित करें। यदि कार्यालय में हिंदी में कार्य करने में कोई समस्या आ रही है, तो अध्यक्ष कार्यालय की ओर से सदस्य कार्यालयों को सभी संभव सहायता प्रदान की जाएगी। आज के समय में सभी तकनीकी माध्यमों में हिंदी का प्रयोग बहुत सहज हो गया है। आप अपने कार्यालयीन कार्यों में इसका भरपूर प्रयोग कर सकते हैं।

बैठक के दौरान निर्णय लिया गया कि आगामी छमाही बैठक दिनांक 27 नवंबर, 2020 को आयोजित की जाएगी। इसके साथ यह भी निर्णय लिया गया कि नवंबर, 2020 में हिन्दी प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता, हिन्दी टिप्पण-प्रशासनिक शब्दावली-अनुवाद प्रतियोगिता, हिंदी निबंध प्रतियोगिता और सदस्य कार्यालयों के अधिकारियों व कर्मचारियों के बच्चों के लिए चित्रलेखन प्रतियोगिता का आयोजन किया जाएगा। इन सभी प्रतियोगिताओं के विजयी प्रतिभागियों को आगामी बैठक के अवसर पर सम्मानित व पुरस्कृत किया जाएगा। इसके साथ ही आगामी बैठक के अवसर पर समिति की पत्रिका 'धनबाद राजभाषा संदेश' के अंक-17 का प्रकाशन और विमोचन किया जाएगा।

बैठक का संचालन समिति के सचिव श्री दिलीप कुमार सिंह, उप प्रबंधक (राजभाषा) द्वारा किया गया। बैठक में डॉ. आर. वी. के. सिंह, मुख्य वैज्ञानिक सिंफर, श्री रुद्र प्रताप सिंह, उप महाप्रबंधक डीवीसी मैथन, श्री संजय पाटिल,उपमहाप्रबंधक बीईएमएल, श्री दीपक कुमार सिन्हा, प्रबंधक(सचिवीय/राजभाषा) बीसीसीएल समेत 30 सदस्य कार्यालयों के प्रतिनिधि उपस्थित रहे।

कविता

कल नही आता

-अवधेश कुमार

ये सच है यारों, कल नहीं आता
बीता हुआ कोई, पल नहीं आता।।

प्रकृति ही उसे, मिटा देती है
स्वयं को जो, बदल नहीं पाता।।

बार-बार गिरना, नियति है उसकी
ठोकर खा जो, संभल नहीं पाता।।

हम भी शायद, कुछ और ही होते
लेकिन हमको, छल नहीं आता।।

निर्भय होकर, जीवन को जीओ
समय मृत्यु का टल नहीं पाता।।

प्रधान आरक्षक/जीडी
केऔसुब इकाई बीसीसीएल धनबाद

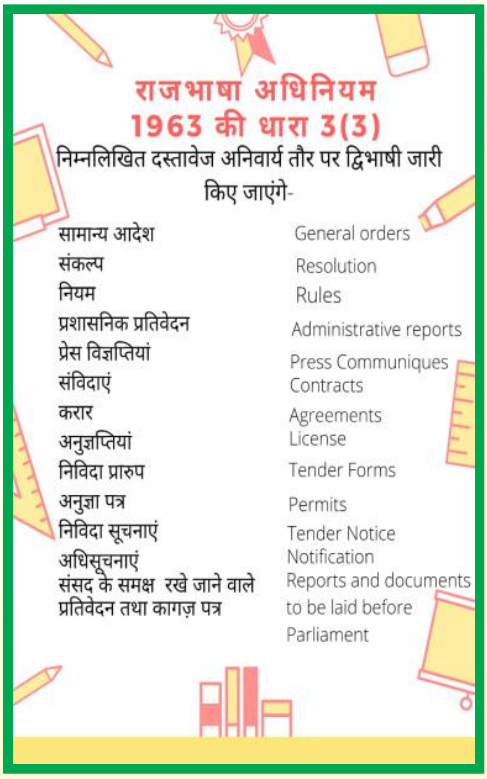

राजभाषा समाचार

सेल - कोलियरी प्रभाग में राजभाषा पखवाड़ा का आयोजन

कोविड – 19 को ध्यान में रखते हुए एवं राजभाषा विभाग, भारत – सरकार के दिशा-निर्देशों का पालन करते हुए दिनांक 01.09.2020 से राजभाषा पखवाड़ा का ऑनलाइन शुभारंभ श्री अरविंद कुमार, कार्यपालक निदेशक, कोलियरी प्रभाग के संबोधन का वीडियो कोलियरी प्रभाग के विभिन्न व्हाट्स एप समूहों में जारी कर किया गया।

दिनांक 02.09.2020 से सभी कार्यक्रमों / प्रतियोगिताओं को ऑनलाइन तरीके से संपन्न करने के लिए व्हाट्सएप समूहों एवं ई-मेल को माध्यम बनाया गया।

प्रत्येक प्रतियोगिता के लिए प्रतिभागियों को विभिन्न अलग – अलग श्रेणी में रखा गया यथा कक्षा 03 एवं 04 के बच्चे – बच्चियों के लिए चित्रांकन, कक्षा 05 एवं 06 तक के बच्चे – बच्चियों के लिए आवेदन लेखन, कक्षा 07 – 08 एवं 09 – 10 तक के बच्चे – बच्चियों के लिए अलग – अलग विषयों पर निबंध लेखन, अहिंदी भाषी कर्मचारियों के लिए टिप्पणी लेखन एवं सभी महिलाओं के लिए स्वरचित एवं मौलिक नारा/स्लोगन लेखन इत्यादि प्रतियोगिताओं का आयोजन दिनांक 02.09.2020 से लेकर 10.09.2020के दौरान कराया गया ।सभी प्रतियोगिताओं के लिए विषय व्हाट्स एप समूहों के माध्यम से दिया गया एवं प्रविष्टियों को ई-मेल के माध्यम माँगा गया एवं सभी ईमेल को निर्णायक – मंडली के पास अग्रेषित किया गया ।निर्णायक मंडली के मूल्यांकन के आधार पर प्रतियोगिता के विजेताओं का चुनाव किया गया।

दिनांक 08 एवं 09 सितंबर को क्रमशः सभी कर्मचारियों एवं सभी अधिकारियों के लिए "राजभाषा एवं हिंदी ज्ञान प्रश्नोतरी" प्रतियोगिता व्हाट्स एप के माध्यम से संपन्न किया गया।

दिनांक 14 सितंबर हिंदी दिवस के उपलक्ष्य पर राजभाषा पखवाड़ा समापन सह पुरस्कार वितरण समारोह का शुभारंभ सेल – कोलियरी प्रभाग के कार्यपालक निदेशक श्री अरविंद कुमार, मुख्य अतिथि, मुख्य महाप्रबंधक (चा. एवं जी.) श्री मनोज कुमार चंद्रा एवं मुख्य महाप्रबंधक (का. एवं प्र.) श्री संजय तिवारी के कर – कमलों के द्वारा दीप प्रज्वलित कर किया गया।

पुरस्कार वितरण के कार्यक्रम को दो भागों में विभक्त किया गया जिसमें सभी आगंतुकों के लिए मास्क पहन कर आना एवं सामाजिक दूरी बनाये रखने का पूरा ध्यान रखा गया। 12 बजे से 02 बजे तक सभी बच्चे – बच्चियों को पुरस्कृत किया गया एवं 04 बजे से 06 बजे तक सभी कर्मचारियों, अधिकारियों एवं महिलाओं को पुरस्कृत किया गया। इसके साथ ही वर्ष भर हिंदी में अधिकाधिक कार्य करने वाले विभागों, अधिकारियों एवं कर्मचारियों को भी पुरस्कृत किया गया ।राजभाषा पखवाड़ा का समापन माननीय कार्यपालक निदेशक महोदय के संबोधन के साथ किया गया ।राजभाषा पखवाड़ा के सभी कार्यक्रमों का संचालन राजभाषा अधिकारी श्री कृष्ण मुरारी तिवारी एवं श्री वशिष्ठ कुमार सिंह, राजभाषा सहायक ने किया।

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति धनबाद द्वारा राजभाषा सम्मेलन-2020 के अवसर पर दिनांक 16 जनवरी, 2020 को आयोजित राष्ट्रीय कवि सम्मेलन की झलकियाँ